04- 'अपराजिता' बनने के लिए पहले घरों और कार्यस्थलों को सुरक्षित

05- काले रंग में ही समाए हैं सारे रंग

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 8 सितंबर, 2024

06- बैतूल के शिक्षा विभाग में अतिशेष की प्रक्रिया में...

07- फिल्मों में भी अछूत रहा समाज का ये वर्ग

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 313 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

घर-घर विराजे विघ्नहर्ता....

गणेश उत्सव का उल्लास देशभर में उत्साह के साथ शुरु हो गया। मुंबई में गणेशोत्सव हर्षोल्लास के साथ विशेष रुप से मनाया जाता है। फोटो- गिरीश शर्मा

सुप्रभात

रूखा मोटा अन्न खाते
अरसा बीत चला
ग़ालिबन जिस्म वही....
जीवन ढला ,
जाने क्या था उन रूखे निवालों
अल्हड़ सवालों में
बेफ़िक्री के ठहाकों में डूबी
पुरानी लच्छेदार कहानियां
कुछ बेखुदी
थोड़ी अंगड़ाईयाँ

अब तो लिफ़ाफ़ियों का ज़माना है
खाना कम पचाना ज़्यादा है
मैगी किसी कोने में पेट के
आए दिन पड़ी रहती है
गेहूं की रोटियां भी
मैदे की लगती हैं
पाँव ज़मीन से दो इंच ऊपर उठे ही रहते हैं
नयी हवा के बवंडर में लड़खड़ाते पड़ते हैं
अस्पतालों के चक्कर काटती
बीतती हैं जवानियाँ
दूर तक उड़ती हैं गाँवों में
वीरानियां

दिन रोज़ एक नयी शक़्ल में उगता है
वक़्त भी पहले की तरह कहां बीतता है
लोग तब समय से बूढ़े होते थे
समय अब उम्र से पहले बूढ़ा होता है।

- कौशलेंद्र सिंह

देश भर में बप्पा के आने की धूम

गणेश चतुर्थी का पर्व पूरे देश में धूमधाम से मनाया जा रहा है। हर साल भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को मनाया जाने वाला यह पर्व, भगवान गणेश के जन्मोत्सव के रूप में जाना जाता है। मुंबई से लेकर दिल्ली तक गणेश उत्सव की धूम है। पुरी के समुद्र तट पर मशहूर सैंड कलाकार सुदर्शन पटनायक ने भगवान गणेश की रेत से मूर्ति बनाकर वैश्विक शांति का संदेश दिया है। इस अवसर पर विभिन्न स्थानों पर विशेष आयोजन किए जा रहे हैं।

जब तक घाटी में अशांति

पाकिस्तान से बात नहीं

जम्मू-कश्मीर की पहली चुनावी रैली में बोले गृहमंत्री अमित शाह, पलौरा में जनसभा

कहा-कांग्रेस पत्थरबाजों को जेल से छुड़ाना चाहती है, ताकि घाटी में फिर आतंक फैले

जम्मू (एजेंसी)। गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को जम्मू के पलौरा में जनसभा की। विधानसभा चुनाव को लेकर शाह की यह पहली रैली है। इस दौरान उन्होंने कांग्रेस और नेशनल कांफ्रेंस पर घाटी में दोबारा आतंक फैलाने का आरोप लगाया। शाह ने कहा- कांग्रेस-नेशनल कांफ्रेंस का गठबंधन एलओसी (भारत-पाकिस्तान बार्डर) पर फिर से ट्रेंड शुरू करना चाहता है।

उसका पैसा आतंकियों के मददगार तक पहुंचेगा और इलाके में फिर से अशांति आएगी। हालांकि भाजपा सरकार के रहते ऐसा संभव नहीं हो पाएगा। गृहमंत्री ने कहा- मैं आज ये कहना चाहता हूं कि जब तक जम्मू-कश्मीर में शांति नहीं आएगी, तब तक पाकिस्तान से कोई बातचीत नहीं होगी।

कांग्रेस जेल में बंद पत्थरबाजों और आतंकी गतिविधियों में लिप्त लोगों को छुड़ाना चाहती है, ताकि आतंक फिर से फैले। शाह ने आगे कहा- नेशनल कांफ्रेंस और कांग्रेस कहती है कि हम जम्मू-कश्मीर को स्टेट का दर्जा देंगे।

पहली बार एक संविधान के तहत वोटिंग

शाह ने कहा- आने वाला चुनाव एक ऐतिहासिक चुनाव है। जब से देश आजाद हुआ। पहली बार, दो संविधान नहीं, भारत के संविधान (जिसको बाबा साहेब अंबेडकर ने बनाया) के अंतर्गत मतदान होने जा रहा है। पहली बार, पूरे जम्मू-कश्मीर सूबे में प्रधानमंत्री नहीं बैठ सकता, प्रधानमंत्री एक ही होता है, जिसे कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक की जनता चुन कर भेजती है और वो हमारे प्रिय नेता पीएम मोदी हैं। कश्मीर ने आतंकवाद से बहुत नुकसान उठाया है। कश्मीर में ऐसी सरकारें थीं जिन्होंने आतंकवाद के प्रति आंखें मूंद ली थीं। ऐसे लोग हैं जो शांति होने पर यहां आते और मुख्यमंत्री बन जाते और जब आतंकवाद होता तो वे दिल्ली जाते और कॉफी बार में कॉफी पीते। भारतीय जनता पार्टी ने 10 साल में आतंकवाद को 70 फीसदी कम करने का काम किया है।

पीएम ने सिखाया वैदिक गणित, कहा-ये मैथ नहीं, मैजिक है

- पीएम मोदी ने शिक्षकों से की वैदिक गणित के महत्व पर चर्चा
- पीएम ने राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षकों से की बात

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित हुए शिक्षकों से बातचीत की। इस साल देश भर से 82 शिक्षकों को इस पुरस्कार के लिए चुना गया था। पीएम मोदी ने प्रधानमंत्री आवास पर इन सभी शिक्षकों से मुलाकात की। इस दौरान पीएम मोदी ने संस्कृत की एक टीचर से बात करते हुए वैदिक गणित के महत्व को बताया। उन्होंने कहा कि छात्रों को वैदिक गणित पढ़ाना चाहिए, दुनियाभर के कई देशों के सिलेबस में वैदिक गणित को पढ़ाया जाता है। झारखंड से आई संस्कृत शिक्षक आशारानी ने पीएम मोदी के सामने एक श्लोक सुनाया।

उन्होंने बताया कि वो कोशिश करती हैं कि छात्रों को संस्कृत भाषा के जरिए संस्कृति से जोड़ा जाए। इसके बाद पीएम मोदी ने कहा कि आपने कभी सोचा कि जब आप संस्कृत भाषा के प्रति छात्रों को आकर्षित करती हैं, उसके द्वारा उनको ज्ञान के भंडार की ओर ले जाता है। संस्कृत की शिक्षक के नाते क्या कभी इन बच्चों वैदिक गणित से संबधित चीजें बताई हैं या टीचर्स के साथ इस पर चर्चा की है। पीएम ने वैदिक गणित के महत्व को बतायाप्रधानमंत्री ने वैदिक गणित के महत्व को बताते हुए कहा कि आप छात्रों तक इसे पहुंचाने की कोशिश कीजिए।

ऑनलाइन वैदिक गणित की क्लासेस भी चलते हैं। यूके में कई जगह सिलेबस में वैदिक मेथमैटिक है। जिन बच्चों को मेथ्स में रुचि नहीं है, अगर वो थोड़ा भी इसे देखेंगे उनको लगेगा ये तो मैजिक है। एक दम से उनका मन इसे सीखने में लग जाता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने खजुराहो एयरपोर्ट पर शहीद प्रदीप पटेल को अर्पित की श्रद्धांजलि

राष्ट्रहित में देह समर्पित करने से बेहतर सौभाग्य कुछ नहीं - मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सिक्किम के पाक्योंग में शहीद हुए मध्यप्रदेश के कटनी जिले के ग्राम हरदुआ निवासी मां भारती के वीर सपूत प्रदीप पटेल की पार्थिव देह को आज खजुराहो एयरपोर्ट पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। शहीद श्री पटेल को गार्ड ऑफ ऑनर देते हुए अंतिम

- **शहीद प्रदीप पटेल के माता-पिता को दी जाएगी एक करोड़ रूपए की राशि**

बिदाई दी गई।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राष्ट्र की सेवा में समर्पित शहीद श्री प्रदीप पटेल के अद्वितीय योगदान एवं समर्पण के लिए यह देश उनका सदैव ऋणी रहेगा। उन्होंने कहा कि शहीद श्री पटेल के माता-पिता को राज्य शासन की ओर से एक करोड़ रूपए की धनराशि उपलब्ध कराई जाएगी। शहीद श्री पटेल अपने परिवार के इकलौते बेटे थे, उनकी बड़ी बहन का विवाह हो चुका है और परिवार में सिर्फ माता-पिता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सनातन संस्कृति में राष्ट्रहित में अपनी देह समर्पित करने से बेहतर सौभाग्य कुछ नहीं होता। जन्म-मृत्यु के क्रम में देश पर शहीद होने वालों को विशेष सम्मान के साथ देखा जाता है। राज्य सरकार इस कष्ट के समय में, पीड़ा और आघात की स्थिति से गुजर रहे शहीद के परिवार के साथ खड़ी है। उन्होंने बताया कि मध्यप्रदेश के वीर सपूत श्री पटेल पटेल सेना के साथियों के साथ 700 मीटर गहरी खाई में गिरे। दुर्घटना में दुर्भाग्यवश सभी का देवलोक गमन हुआ। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दुर्घटना में दिवंगत उनके सभी साथियों को भी श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस मौके पर उपस्थित पर्यावरण एवं वन राज्यमंत्री श्री दिलीप अहिरवार, विधायक छतरपुर श्रीमती ललिता यादव एवं विधायक महाराजपुर श्री कामाख्या प्रताप सिंह सहित जन-प्रतिनिधि अधिकारियों ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 36.3 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 08 सिंतबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

शराब नीति साजिश में शामिल थे केजरीवाल

सीबीआई ने दाखिल की फाइनल चार्जशीट ,किया बड़ा दावा

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली शराब नीति घोटाले में सेंट्रल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टीगेशन (सीबीआई) ने अपनी जांच पूरी कर ली है। जांच एजेंसी ने राउज एवेन्यू कोर्ट में अपनी पांचवी और आखिरी चार्जशीट दाखिल कर दी है। सीबीआई ने आरोप लगाया है कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल शराब नीति बनाने और उसे लागू करने की आपराधिक साजिश में शुरू से शामिल थे। वे पहले से ही शराब नीति के प्राइवेटाइजेशन का मन बना चुके थे। चार्जशीट

के मुताबिक, मार्च 2021 में जब तत्कालीन डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया की अध्यक्षता में शराब नीति तैयार की जा रही थी, तब केजरीवाल ने कहा था कि पार्टी को पैसों की जरूरत है। उन्होंने अपने करीबी और एएपी के मीडिया और संचार प्रभारी विजय नायर को फंड जुटाने का काम सौंपा था। केजरीवाल को दिल्ली शराब नीति से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में ईडी ने गिरफ्तार किया था।

20 नहीं ,6 महीने में होगा टीबी का सफल इलाज

केंद्र की मोदी सरकार ने दी उपचार योजना को मंजूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने मल्टी-ड्रग-रेजिस्टेंट टीबी के इलाज के लिए एक नई व अधिक प्रभावी उपचार योजना एमडीआर को मंजूरी दे दी है। यह मंजूरी राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम के तहत दी गई है। एमडीआर रेजीमेन टीवी के इलाज के लिए एक नया ट्रीटमेंट है। इसके इलाज का समय सिर्फ 6 महीने है, जबकि पहले के इलाज का समय 20 महीने तक का होता था। इस नई चिकित्सा पद्धति में एक नया एंटी-टीबी ड्रग प्रेटोमैनिड शामिल है, जिसे बेडाक्विलिन और लाइनोजोलिड के साथ

(मोक्सिफ्लॉक्सासिन के साथ या बिना) मिलाया जाता है। प्रेटोमैनिड को पहले ही भारत में सेंट्रल ड्रग्स स्टैंडर्ड कंट्रोल ऑर्गनाइजेशन द्वारा मंजूरी और लाइसेंस दिया जा चुका है। मल्टी-ड्रग-रेजिस्टेंट टीबी के इलाज के लिए जिस नई पद्धति को मंजूरी दी गई है उसमें चार दवाओं का संयोजन शामिल है। एमडीआर रेजीमेन की चार-दवाओं का संयोजन पहले की तुलना में अधिक सुरक्षित, प्रभावी और तेजी से परिणाम देने वाला है। पारंपरिक टीबी उपचार जहां 20 महीने तक चलता था और इसके गंभीर साइड इफेक्ट्स होते थे, तो वहीं एमडीआर रेजीमेन सिर्फ6 महीने में ड्रग-रेजिस्टेंट टीबी का इलाज कर सकता है और इसकी सफलता दर भी अधिक है।

गोटमार परंपरा में 600 लोग घायल

किसी की आंख फूटी तो किसी की पसली टूटी

पांढुर्णा (नप्र)। पांढुर्णा जिले की जाम नदी के दोनों तटों पर सैकड़ों लोग जमा हैं। नदी के दोनों किनारों पर पत्थर बरसा रहे हैं। इस पत्थरबाजी में कुल 600 लोग घायल हो चुके हैं, 8 गंभीर घायल हैं। किसी की पसली टूटी है तो किसी की आंख फूट गई।

कोई और जगह होती तो पुलिस खुलेआम ऐसे हमला करने वालों पर पथराव, बलवा, उपद्रव, शांति भंग करने और जानलेवा हमले के प्रयास की धाराओं में केस दर्ज कर लेती। लेकिन, यहां ये खूनी परंपरा ठीक से निभ जाए इस इंतजाम में 358 पुलिसकर्मी तैनात किए गए। इलाज में 27 डॉक्टर्स लगाए गए। 3 सितंबर को हुए इस खूनी खेल का नाम है 'गोटमार '। यानी, पत्थर मारने की परंपरा।

नदी के बीचों बीच पलाश के पेड़ को काटकर लगाया गया। इस पेड़ पर झंडे लगाए गए। फिर शुरू हुआ, ये खूनी खेल। इन झंडों को निकालने के लिए, पांढुर्णा के लोग नदी में उतरे। नदी के दूसरे छोर से सावरगांव के रहने वालों ने पत्थर बरसाने शुरू कर दिए। ताकि झंडा न निकल सके।

सावरगांव के उन पत्थर बरसाने वालों को रोकने के लिए नदी किनारे खड़े पांढुर्णा के लोग भी पत्थर बरसाने लगे।

पहले एक के सिर पर पत्थर लगा और लहूलुहान होकर भागा। फिर दूसरे की आंख के पास पत्थर लगा। खून बह निकला। फिर क्या था, देखते-देखते पत्थरों की बारिश और घायल होकर भागने वालों की संख्या बढ़ गई। आलम ये है कि इस आयोजन को हुए तीन दिन हो चुके हैं, इसके बाद भी ये पता नहीं चल सका है, कि इसमें वास्तव में कुल कितने लोग घायल हुए हैं।

रोकने में सुस्त लेकिन इलाज में चुस्त रहा प्रशासन

परंपरा के नाम पर किए जा रहे इस आयोजन को रोकने में प्रशासन भले ही सुस्त रहा हो, लेकिन उसने घायलों के इलाज के लिए मुस्तैदी से काम किया। कलेक्टर अजय देव शर्मा के आदेश पर नदी के किनारे ही एंबुलेंस खड़ी कराई गईं। 27 डॉक्टर्स की टीम इलाज के लिए तैनात रही।

किसी की पसली टूटी तो किसी की नाक

बीएमओ डॉक्टर दीपेंद्र सलामे ने बताया कि गोटमार मेले के पथराव में 600 लोग घायल हुए। इनमें से 52 लोगों का एक्स-रे निकाला गया था। जिनमें से 29 घायलों के हाथ-पैर, नाक, पसली और सिर की हड्डी टूटी मिली थी। शुभम सेंबेकर के सिर में गंभीर चोट है। श्रावण निकानू की एक आंख फूट गई है।

जगदीश डाबरे की पसली टूटी है। शुभम शिंदे, विक्की बालपांडे, कैलाश घोड़े का पैर टूटा है। ज्यादातर को सिर और नाक पर चोट है। 8 लोगों को काफी खून बह जाने के कारण गंभीर हालत में नागपुर रेफर किया गया है।

60 फीट खाई में गिरी पिकअप, तीन की मौत

20 घायल, 50 लोग सवार थे; रतलाम में घाट चढ़ते समय ब्रेक फेल हुआ था

रतलाम (नप्र)। रतलाम में शनिवार सुबह मजदूरों से भरी पिकअप 60 फीट गहरी खाई में पलट गई। हादसे में 12 साल के बच्चे समेत तीन लोगों की मौत हो गई। 20 लोग घायल हैं, इनमें 5 की हालत गंभीर है। बताया जा रहा है कि पिकअप के ब्रेक फेल हो गए थे। इसमें 50 से ज्यादा लोग सवार थे।

हादसा रावटी-धोलावाड़ के बीच सुबह करीब 9 बजे हुआ। घायलों को रतलाम मेडिकल अस्पताल भेजा गया है। जिन्हें मामूली चोट लगी है, उन्हें रावटी के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भेजा गया है।हादसे के बाद आसपास के लोग मदद के लिए दौड़े। उन्होंने घायलों को बाहर निकाला।

मजदूरी करने रतलाम जा रहे थे

सभी मजदूर रावटी के खेड़ी खुर्द ग्राम पंचायत के रहने वाले हैं। पिकअप में सवार होकर 50 से ज्यादा लोग फसल कटाई के लिए रतलाम जा रहे थे। इसी दौरान खेड़ीकला गांव और धोलावाड़ डैम के पास घाट चढ़ते समय गाड़ी के ब्रेक फेल हो गए। गाड़ी रिवर्स होकर खाई में पलट गई।

आसपास के लोग मदद के लिए दौड़े। घायलों को बाहर निकाला। मरने वालों में एक महिला और दो पुरुष शामिल हैं। पुलिस मौके पर पहुंची। पांच एम्बुलेंस से घायलों को रतलाम मेडिकल अस्पताल और रावटी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भेजा गया।

गाड़ी पलटते ही कूद गया ड्राइवर

लोडिंग वाहन में कुंडाल, हल्दुपाड़ा, खेड़ी खुर्द, सेंधपुरा गांव के लोग थे। घायलों में बच्चे भी हैं। घायलों ने बताया कि अचानक से पिकअप वाहन रिवर्स हुई। तीन से चार पलटी खाते हुए गाड़ी खाई में जा गिरी। ड्राइवर गाड़ी को कंट्रोल नहीं कर पाया। वह गाड़ी पलटने से पहले ही कूद गया।

उज्जैन में रेप का वीडियो बनाने वाला गिरफ्तार

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन में सरेराह हुई रेप की वारदात का वीडियो बनाने वाले शख्स को पुलिस ने नागदा से गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान मोहम्मद सलीम के तौर पर हुई है। पुलिस को जानकारी मिली थी कि वीडियो बनाने वाला नागदा की बस से कोयला फाटक चौराहे पर उतरा था। वीडियो वायरल करने वालों पर भी कार्रवाई होगी।

4 सितंबर बुधवार को कोयला फाटक के फुटपाथ पर महिला से दुष्कर्म हुआ था। वायरल वीडियो के आधार पर पुलिस ने दुष्कर्म के आरोपी को गिरफ्तार कर लिया था। एसपी प्रदीप शर्मा ने बताया कि वीडियो बनाने और वायरल करने वाले आरोपी मोहम्मद सलीम को उसी के घर प्रकाश नगर नागदा से गिरफ्तार किया है। जिस मोबाइल से उसने वीडियो बनाया था, उसे भी जब्त कर लिया है।

मोहम्मद सलीम, आरोपी

कोयला फाटक चौराहे पर उतरा था सलीम

एसपी प्रदीप शर्मा ने बताया, सलीम बुधवार को नागदा से आई बस से कोयला फाटक चौराहे पर उतरा था। यहां से वह पेट्रोल पंप की ओर आया। इसी बीच महिला से हो रहे दुष्कर्म का वीडियो बना लिया। मामला सामने आने पर आरोपी लगातार जगह बदल रहा था। शुक्रवार को उसने तीन बार जगह बदली। रतलाम, मंदसौर और फिर नागदा पंहुचा। पुलिस सलीम को देर रात गिरफ्तार कर उज्जैन पहुंची।

वक्फ बिल को लेकर थम नहीं रहा 'संग्राम'

- जेपीसी की मीटिंग में गरमागरमी, एएसआई की रिपोर्ट पर भड़के विपक्षी सांसद
- एएसआई ने कहा-20 स्मारकों पर अलग-अलग स्टेट वक्फ बोर्डों का है दावा

नई दिल्ली (एजेंसी) वक्फ संशोधन विधेयक पर शुक्रवार को जॉइंट पार्लियामेंटरी कमिटी (जेपीसी) की मीटिंग के दौरान काफी गरमागरमी का माहौल देखने को मिला। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने दावा किया कि उसके संरक्षण में 120 से ज्यादा स्मारकों पर अलग-अलग राज्यों के वक्फ बोर्ड अपना दावा जता रहे हैं। इनमें से कुछ स्मारकों को तो एएसआई आजादी से पहले ही संरक्षित घोषित कर चुका है। एएसआई के इस बयान के बाद सत्ता पक्ष और विपक्ष के सदस्यों के बीच तीखी नोकझोंक हुई। सूत्रों के हवाले से बताया है कि मीटिंग के पहले सत्र में कुछ विपक्षी और बीजेपी सदस्यों के बीच कहासुनी हो गई। एएसआई को दोनों पक्षों के तीखे सवालों का सामना करना पड़ा। विपक्षी सदस्यों ने संस्कृति मंत्रालय पर गुमराह करने का आरोप लगाया।

चीन जल्द बन सकता है दुनिया में नई महामारी की वजह

वैज्ञानिकों को फर फार्म में मिले 125 वायरस, बड़ा है खतरा

बीजिंग (एजेंसी)। चीन में फर उद्योग से जुड़े फार्मों के अध्ययन के दौरान हैरान करने वाली जानकारी सामने आई है। वैज्ञानिकों ने इन फार्मों में 125 वायरस की पहचान की है। साथ ही चेतावनी दी है कि चीन के ये फर फार्म वैश्विक महामारी का केंद्र बन सकते हैं।

प्रतिष्ठित नेचर जर्नल में प्रकाशित ताजा अध्ययन में वैज्ञानिकों ने बताया कि उन्होंने चीन के फर फार्मों में मरने वाले 461 जानवरों का अध्ययन किया था। इन जानवरों में वैज्ञानिकों को 125 वायरस मिले। उन्होंने कहा कि इन वायरसों में से 36 नए वायरस थे। 39 वायरस ऐसे थे जो मनुष्यों को संक्रमित रखने का उच्च जोखिम रखते थे। चीन दुनिया का सबसे बड़ा फर उत्पादक है।

मणिपुर में फिर भड़की हिंसा जिरीबाम में 5 लोगों की मौत

सोते हुए व्यक्ति को गोली मारने के बाद जमकर बवाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। मणिपुर के जिरीबाम जिले में शनिवार को फिर हिंसा हुई। घटना में पांच लोगों की मौत हो गई। स्थानीय पुलिस ने समाचार एजेंसी को बताया, एक व्यक्ति की नींद में गोली मारकर हत्या करने के बाद, दो विरोधी समुदायों के हथियारबंद लोगों के बीच गोलीबारी में चार अन्य लोग मारे गए। पुलिस के मुताबिक जिला मुख्यालय से करीब 5 किलोमीटर दूर एक सुनसान जगह पर अकेले रहने वाले व्यक्ति के घर में उग्रवादी घुसे और उसे सोते समय गोली मार दी। हत्या के बाद जिला मुख्यालय से लगभग 7

किलोमीटर दूर पहाड़ियों में विरोधी समुदायों के हथियारबंद लोगों के बीच भारी गोलीबारी हुई, जिसमें तीन पहाड़ी उग्रवादियों सहित चार हथियारबंद लोगों की मौत हो गई। यह घटना बिष्णुपुर जिले में एक व्यक्ति की मौत और पांच अन्य के घायल होने के एक दिन बाद हुई है, जब संदिग्ध उग्रवादियों ने गांवों पर रॉकेट दागे थे। शुक्रवार को बिष्णुपुर जिले के ट्रोंगलाओबी में तड़के सुबह करीब 4.30 बजे रॉकेट दागे गए, जिससे वहां दो इमारतें नष्ट हो गई थीं।

हिमाचल में विवादित मस्जिद पर नहीं आया फैसला

जेई को स्टेट्स-रिपोर्ट देने के आदेश, लोकल-रेजीडेंट ने पार्टी बनने को दी एप्लिकेशन

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला के संजौली में अवैध मस्जिद मामले में शनिवार को नगर निगम आयुक्त भूपेंद्र अत्री के कोर्ट में सुनवाई हुई। कोर्ट ने संबंधित कनिष्ठ अभियंता को फटकार लगाते हुए फ्रैश स्टेट्स रिपोर्ट फाइल करने के आदेश दिए। अब यह मामला 5 अक्टूबर को सुना जाएगा। वक्फ बोर्ड द्वारा अदालत में दायर जवाब में दावा किया गया मस्जिद पुरानी है और वक्फ बोर्ड की जमीन पर बनी है। लोकल रेजीडेंट (हिंदू संगठन) के एडवोकेट जगत पाल ने दावा किया कि जिस जमीन

पर मस्जिद बनी है, वह सरकारी है। वक्फ बोर्ड ने अतिक्रमण कर रखा है।

उन्होंने बताया कि 14 साल से इस केस में कोई अफेक्टिव कार्यवाही नहीं हुई, क्योंकि इससे पहले गलत आदमी के खिलाफ केस चल रहा था। बीच में लगभग साढ़े 13 साल बाद वक्फ बोर्ड की एंट्री होती है। उन्होंने बताया कि रेवेन्यू रिकॉर्ड में मालिक सरकार है। वक्फ बोर्ड ने जमीन का मालिक होने का दावा जरूर किया, लेकिन अदालत में ऐसा कोई रिकॉर्ड प्रस्तुत नहीं कर पाए।

आरजी कर अस्पताल को लेकर आ गया फिर से नया विवाद

- 3 घंटे तक बहता रहा खून, इलाज नहीं मिलने से लड़के की मौत

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में अब 28 वर्षीय बिक्रम भट्टाचार्जी नाम के शख्स की मौत पर हंगामा खड़ा हो गया है। ट्रक की चपेट में आने के बाद शुक्रवार को उसे कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल लेकर जाया गया, जहां उसकी मौत हो गई। राज्य के स्वास्थ्य विभाग को ज्वाइंट प्लेटफार्म ऑफ डॉक्टर्स के आंदोलन के चलते कोलकाता के सभी 5 मेडिकल कॉलेजों में हेल्प डेस्क बंद करने पड़े था, जिसके एक दिन बाद की यह घटना है।

पावर सब्सिडी आउट, पेट्रोल डीजल पर वैट में वृद्धि

बस के किराए भी बढ़े, वित्तीय संकट का सामना कर रही पंजाब सरकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। पंजाब की आम आदमी पार्टी (एएपी) रकार ने कई कड़े वित्तीय फैसले लिए हैं। दरअसल सरकार वित्तीय कट का सामना कर रही है। बिजली सब्सिडी को आंशिक रूप से पस लेना, पेट्रोल और डीजल पर वैट में बढ़ोतरी और बस किराए में 23 पैसे प्रति किलोमीटर की बढ़ोतरी सरकार के फैसलों शामिल है। इससे वह विपक्ष के निशाने पर भी आ गई है। सरकार अपने नए फैसलों से अतिरिक्त 2,500 करोड़ रुपये जुटाने की उम्मीद कर रही है। सभी उपभोक्ताओं को प्रति माह 300 यूनिट मुफ्त बिजली की पेशकश आम आदमी पार्टी ने अपने चुनावी वादे में की थी।

हालांकि बिजली सब्सिडी में वापसी एएपी के लिए एक विशेष रूप से कांटेदार कदम है। आप सरकार ने 2022 में सत्ता में आने के बाद पिछली कांग्रेस शासन द्वारा शुरू किए गए 7 किलोवाट लोड तक 3 रुपये प्रति यूनिट के नियम को भी जारी रखा था। सब्सिडी वापस लेने से गर्मी के महीनों में कम से कम 12 लाख और सर्दियों में 1.5 लाख उपभोक्ता प्रभावित होने की उम्मीद है। इससे राज्य के खजाने को प्रति वर्ष 1,800 करोड़ रुपये बचाने में मदद मिलेगी। साथ ही अतिरिक्त 300 करोड़ रुपये का राजस्व भी बढ़ेगा।

हरियाणा बीजेपी में 40 नेताओं के इस्तीफे से मचा हड़कंप

बागियों से वन टू वन बातचीत, 2 केंद्रीय मंत्रियों समेत सीएम-कैंडीडेट्स की ड्यूटी लगाई

रेवाड़ी (एजेंसी)। हरियाणा में उम्मीदवारों की लिस्ट जारी करने मची भगदड़ के बीच बीजेपी ने डैमेज कंट्रोल करना शुरू कर दिया है। सब कुछ केंद्रीय कार्यालय की तरफ से तय किया जा रहा हैं। रूठों को मनाने के लिए शीर्ष नेतृत्व की तरफ से वन-टू-वन बातचीत की जा रही हैं। चुनाव प्रभारी धर्मेंद्र प्रधान, केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल, सीएम नायब सैनी और प्रदेश सहप्रभारी बिप्लब देब ने टिकट बंटने के बाद बागी तेवर अपनाने वाले 10 से ज्यादा नेताओं से बात कर उन्हें मनाने की कोशिश की है। इनमें कुछ मान भी गए। कुछ ने समर्थकों के साथ मीटिंग कर

निर्णय लेने की बात कही हैं। टिकट आवंटन के बाद रेवाड़ी, झज्जर, रोहतक, सोनीपत, करनाल, अंबाला, हिसार, फतेहाबाद, गुरुग्राम जिले में सबसे ज्यादा बगावत हुई। करीब 40 नेताओं ने इस्तीफे दे दिए। इनमें विधायक, पूर्व मंत्री सहित कई निगम और बोर्ड के चेयरमैन तक शामिल रहे। कई नेताओं ने बीजेपी उम्मीदवारों के खिलाफ निर्दलीय चुनावी मैदान में उतरने का फैसला भी किया। इस्तीफों की झड़ी लगने के बाद सीधे हाईकमान की तरफ से डैमेज कंट्रोल करने के लिए बागी हुए नेताओं से संपर्क साधा गया।

नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने स्कूली बच्चों की समस्या सुनी, अपनी तरफ से हल की

इंदौर। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और मध्य प्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंगार ने वो किया, जो शायद सरकार के मंत्री भी कभी नहीं करते। शिक्षक दिवस के दिन वे धार जिले के जीराबाद के सरकारी स्कूल में गए और वहां बच्चों से उनकी समस्याएं पूछी। उन्होंने बच्चों से स्कूल की व्यवस्थाओं के बारे में भी जानकारी ली। उन्होंने अपनी इस कार्यवाही को 'एक्स' पर भी पोस्ट करके प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़ा किया है। बच्चों ने बताया स्कूल की छत टपकती है, कक्षाओं में पंखे नहीं है। स्कूल की तरफ से कोई खेल सामग्री नहीं दी जाती। छात्राओं ने बताया कि उनके लिए शौचालय तक की व्यवस्था सही नहीं है। उसके बाद उमंग सिंघार ने आदिवासी विकास विभाग के सहायक आयुक्त को जमकर लगाड़ लगाई। उन्होंने खुद अपनी तरफ से बच्चों को खेल सामग्री देने का वादा किया और 24 घंटे के अंदर बच्चों को वह सारी शिक्षा खेल सामग्री भिजवा भी दी गई, जो उनसे वादा किया था। स्कूल की एक छात्र तान्या मालवीय ने नेता प्रतिपक्ष से कहा कि उसे अच्छे नंबर आए, लेकिन उसे सरकारी योजना के तहत मिलने वाली स्कूटी नहीं दी गई।

इस पर उमंग सिंगार ने खुद अपनी तरफ से उसे स्कूटी देने का वादा किया और अगले ही दिन उसे छात्रा को स्कूटी भेंट भी की और उसे शुभकामनाएं दी। तान्या स्कूटी पाकर बहुत खुश हुई और उसने सबसे पहले उमंग सिंघार को स्कूटी पर बैठाया। जीराबाद के इस स्कूल की अव्यवस्थाओं के बहाने नेता प्रतिपक्ष ने प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था की हालत पर सोशल मीडिया 'एक्स' पर पोस्ट की है। उन्होंने जीराबाद के स्कूल में छात्रों से की बातचीत और वादा पूरा किए जाने पर भी पोस्ट की।

स्कूल के लिए पंखे, खेल सामग्री और प्रतिभाशाली बालिका को स्कूटी दी

सरकार लाडली बेटियों को भूली

सोशल मीडिया पर उन्होंने पोस्ट की कि मैंने धार जिले के इस स्कूल के सुस्त प्रबंधन की अव्यवस्था और लापरवाही के कारण बच्चों की आँखों में निराशा देखी! मध्य प्रदेश सरकार लाडली बेटियों को तो भूल गई। गांव में पढ़ रहे बच्चों के भविष्य को भी नजरअंदाज कर रही है। धार जिले के जीराबाद का यह शासकीय स्कूल मध्य प्रदेश की बदहाल शिक्षा व्यवस्था को दर्शाने के लिए पर्याप्त है। ना शौचालय, ना पानी, ना पंखे, ना खेल-खूद का सामान, ना सही छत, ना प्रतिभाशाली छात्रों को प्रोत्साहन और ना लाड़लियों को सुरक्षा। जब स्कूल के ये हाल हैं, तो सरकार क्या कर रही है?

कलेक्टर ने संज्ञान लिया

नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंगार की इस कार्यवाही पर धार कलेक्टर प्रियंक श्रीवास्तव ने भी संज्ञान और मनावर एसडीएम और आदिवासी विभाग के सहायक आयुक्त की कमेटी बनाकर उन्हें स्कूलों की व्यवस्था सुधारने के निर्देश दिए।

बच्चों से किया वादा निभाया

उमंग सिंघार ने कहा कि स्कूल के बच्चों से कल मैंने खेल सामग्री और कक्षाओं में पंखे लगवाने का वादा किया था, वो पूरा कर दिया। मेरी तरफ से धार जिले के जीराबाद स्कूल को 25 पंखे, खेलने के लिए क्रिकेट की सामग्री, बैट-बॉल, फुटबॉल, बैडमिंटन के रैकेट और शटल, वॉलीबॉल और बालिकाओं के लिए कूदने के लिए रस्सी का तोहफा दिया। मैं ईश्वर से इन बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं और उनकी मुस्कुराहटों की वजह बनने के लिए ईश्वर को कोटि-कोटि धन्यवाद देता हूं। साथ में यह भी कहूंगा कि अगर सरकार इसे अपनी जिम्मेदारी समझकर गांव में पढ़ने वाले गरीब प्रतिभाशाली बच्चों को मूलभूत सुविधाएं भी दिला दे, तो प्रदेश की तरक्की के रास्ते खुल जाएंगे। अब मैं प्रदेश के हर स्कूल में औचक निरीक्षण करूंगा और जिम्मेदारों को उनके कर्तव्य याद दिलाता रहूंगा! जब सरकार लापरवाह है, तो आखिर किसी को तो पहल करना ही होगी!

खाचरौद के गुत्थमगुत्था यातायात का कोई स्थायी समाधान जरूरी

एकांगी मार्ग का प्रयोग किया तो वो लोगों पर ही भारी पड़ेगा

(ऋतुराज बुड़ावनवाला)

खाचरौद (उज्जैन)। खाचरौद की चारों दिशाओं में यातायात व्यवस्था चरमराई हुई है लोगों का पैदल चलना भी दुश्वार हो गया। लक्ष्मीनाथ मंदिर, तालाब दरवाजा, गोपाल मंदिर, उज्जैन दरवाजा, सुनारिया बाग मार्ग, रामद्वारा मार्ग, गणेश देवली,अनंत नारायण मंदिर तथा चबूतरा चौराहे पर तो दिनभर में कई बार लोगों को लंबे समय तक जाम का सामना करना पड़ता हैं। खाचरौद की चरमराई हुई यातायात व्यवस्था को सुधारने के लिए कोई पहल नजर नहीं आ रही। दिनों-दिन विकराल होती इस समस्या के समाधान के लिए जिन लोगों को पहल करना चाहिए वह सभी नुमाइंदे चुप्पी साधे बैठे हैं। सोशल मीडिया पर चर्चा कर जागरूकता दिखा रहे हैं। लेकिन, प्रशासन और राजनीतिक पार्टियों के पदाधिकारियों को अपनी सूझबूझ एवं कर्मठता के साथ इस अव्यवस्थित यातायात के कारणों को चिन्हित कर उसका समाधान खोजना होगा। तालाब दरवाजा से गणेश देवली तक नगर के मार्ग को एकांगी करने की ख्याली पुलाव वाली कवायद को आदेश्वर गली एवं बोहरा बाजार की सड़कों पर पसरे अतिक्रमण के कारण अमली जामा पहनाना संभव नहीं है।

अनंत नारायण मंदिर चौराहे पर जाकर दोनों मार्ग एक हो गए हैं और आगे गणेश देवली तक इतनी चौड़ाई भी नहीं है कि उस मार्ग पर डिवाइडर बनाकर दो भागों में विभक्त किया जा सके। बोहरा बाज़ार ,जवाहर मार्ग, अनंत नारायण मंदिर जैसा क्षेत्र जो रहवासी और मुख्य बाजार का मिला-जुला रूप हैं, ऐसे में उस पर एकांकी मार्ग बनाने की जो चर्चा होती है वह किसी भी स्थिति में स्वीकार करने को रहवासी तैयार नहीं हैं। अगर इसे एकांगी कर दिया गया तो लोग अपने घरों पर अपने वाहनों को लेकर कैसे पहुंचेंगे। कस्बाई क्षेत्र खाचरोद में लोगों को अपने घरों तक पहुंचाने वाली एकमात्र सड़कों को एकांगी करने से अनेक समस्याएं खड़ी हो जाएंगी। दो पहिया वाहनों की निरंतर बढ़ती संख्या तथा उनके नगर प्रवेश और दुकानों के सामने ही खड़ा कर खरीदारी करने वाले ग्राहकों को जब तक रोका नहीं जाएगा, तब तक समस्या का समाधान संभव नहीं है। दुकानदारों को अपनी दुकान के आगे किया गया अतिक्रमण और दुकानों के बाहर रखे जाने वाले दो पहिया वालों को भी सख्ती से हटाना जरूरी है। शासन-प्रशासन को विभिन्न क्षेत्रों में पार्किंग की व्यवस्था करना होगी जहां पर ग्रामीण क्षेत्र से आने वाले ग्राहक अपने वाहन पार्किंग कर सके, ताकि मुख्य सड़कों पर वाहनों का आना कम या बंद हो सके। यातायात को सुधारने की बात कहने वाले प्रशासन के नुमाइंदों को नगर की स्थिति का धरातलीय ज्ञान नहीं होने से इस समस्या के स्थायी समाधान को लेकर वे भ्रमित नजर आते हैं।

इंदौर में गणेश चतुर्थी पर खजराना मंदिर में जुटे भक्त

कलेक्टर, निगम कमिश्नर ने की पूजा-अर्चना ; शहर में गणेशोत्सव की 10 दिनी धूम शुरू

इंदौर (एजेंसी)। विघ्नहर्ता भगवान गणेश के चतुर्थी पर्व को पूरे देश के साथ ही इंदौर में भी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इंदौर में श्रद्धालुओं द्वारा भगवान गणेश के अलग-अलग स्वरूपों को घरों में स्थापित किए जा रहे हैं। इंदौर के विश्व प्रसिद्ध खजराना गणेश मंदिर में इस मौके पर श्रद्धालुओं द्वारा गणेश दर्शन की विशेष परम्परा है। शनिवार को कलेक्टर आशीष सिंह और निगम कमिश्नर ने खजराना गणेश मंदिर पहुंचकर विघ्नहर्ता भगवान गणेश के दर्शन कर पूजन-अर्चना की। इस मौके पर संभागायुक्त दीपक सिंह ने भी अपनी धर्मपत्नी के साथ पूजन अर्चन किया। इस दौरान पुलिस कमिश्नर राकेश गुप्ता मौजूद रहे। प्राचीन गणेश मंदिर खजराना में हर साल की तरह चतुर्थी के दिन विशेष पूजन का आयोजन किया जाता है। भगवान गणेश को आज के दिन सवा लाख लड्डुओं के भोग का लगाया जाता है। आज भी सवा लाख मोदकों का ही भोग भगवान गणेश को लगाया गया। विघ्नहर्ता की इस विशेष पूजा में शहर के अधिकारियों ने दर्शन किए। साथ ही मंदिर परिसर में फूलों से विशेष सज्जा भी की गई। सभी ने शहर, देश और प्रदेश की सुख शांति और उन्नति की कामना की।

इंदौर में तीज कार्यक्रम में राजबाड़ा पर महिलाओं से छेड़छाड़

14 लड़कों को पकड़ पुलिस के हवाले किया

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में हरतालिका तीज पर राजबाड़ा पर 22वर्षों से हो रही भजन संध्या में शुक्रवार रात भी बड़ी संख्या में महिलाएं शामिल हुई। देर रात करीब 12 बजे के आसपास चार वर्ग विशेष के युवक महिलाओं के बीच में पहुंचे। महिलाओं को गलत तरीके से टच करने की बात सामने आई। मौके पर मौजूद बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने इन्हें पकड़ा। नाम पूछने पर लड़कों ने पहले हिन्दू नाम बताए। शंका होने पर जब उनसे आईडी कार्ड मांगा तो आनाकानी करने लगे। बाद में सभी ने सही नाम बताए। करीब 14 लड़कों को पुलिस के हवाले किया गया। इसके बाद एसीपी हेमन्त चौहान ने तुरंत आयोजन में सिंगल युवकों की एंट्री बंद कर दी। केवल महिला के साथ आने वाले युवकों को ही अंदर जाने दिया।

इंदौर में ट्रेन में चढ़ते समय यात्री का पैर फिसला, बची जान

इंदौर (एजेंसी)। रेलवे कांस्टेबल की सूझबूझ से एक यात्री की जान बच गई। वह चलती ट्रेन में चढ़ने की कोशिश कर रहा था। उसका पैर फिसला और वह पहिये के नीचे आ गया। जैसे ही घटना की खबर कांस्टेबल को लगी, उसने ट्रेन रुकवाई और घायल को हॉस्पिटल पहुंचाया। हालांकि, हादसे में यात्री का एक पैर कट गया, लेकिन जान बच गई। घटना गुरुवार शाम 5 बजे की है। प्लेटफॉर्म नंबर-2 से इंदौर-उदयपुर ट्रेन निकली तभी विक्रांत द्विवेदी (34) न्यू गौरी नगर चढ़ने की कोशिश करने लगे। इस दौरान उनके साथ यह हादसा हो गया।

इंदौर में डेंगू से पहली मौत स्वीकारी 15 दिन बाद

15 साल के छात्र को डेंगू हुआ तो ब्लड प्रेशर गिरा ; किडनी-लीवर सब फेल हुए

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में डेंगू से 15 साल के छात्र की मौत हो गई। यह प्रदेश की पहली मौत थी। अस्पताल में भर्ती करने के महज 8 से 10 घंटे के भीतर छात्र ने दम तोड़ दिया। अब खुलासा हुआ है कि डेंगू के दौरान ही छात्र के मल्टी ऑर्गेन फैल हो गए थे। इस दौरान ब्लड प्रेशर इतना कम हो गया कि रिकवर ही नहीं हो सका और रिकॉर्ड पर ही दर्ज नहीं हो रहा था। यह मौत की बड़ी वजह रही। मलेरिया विभाग पहले बताता रहा कि छात्र मंसूरी अंसारी (15) की मौत कार्डियक अरेस्ट से हुई, लेकिन मीडिया की पड़ताल में सामने आया कि छात्र को डेंगू हुआ था, उसी कारण पूरे शरीर में संक्रमण फैल गया और कई अंगों ने काम करना बंद कर दिया। ब्लड प्रेशर ज्यादा गिरते चला गया। बाद में विभाग ने माना कि डेंगू भी हुआ था। परिवार के अनुसार, 18 अगस्त को देर रात छात्र को प्राइवेट अस्पताल ले जाया गया था। वहां बेड नहीं होने पर 19 की सुबह एक अन्य प्राइवेट अस्पताल ले गए। यहां भर्ती करने के बाद सुबह 11 से 12 बजे के बीच उसने दम तोड़ दिया। सरकारी लैब में हुए मेकएलाइजा टेस्ट में छात्र को डेंगू होना पाया गया है।

पिता बोले- 17 तारीख तक ठीक था

छात्र के पिता ने बताया 17 अगस्त को बुखार आने पर बेटे को सामान्य दवा-गोली दी। बाद में ठीक लगा तो शाम में घूमने भी गया। 18 अगस्त को फिर बुखार आया तो देर शाम क्लिनिक पर दिखाया। वहां से वापस घर ले आए तो देर रात फिर तबीयत बिगड़ी। 19 अगस्त की सुबह 6 बजे हमने सीएचएल केयर हॉस्पिटल में भर्ती कराया। यहां जांचें हुईं और इलाज के दौरान ही छात्र की मौत हो गई। हॉस्पिटल ने रिपोर्ट विभाग को भेज दी थी। मलेरिया विभाग का कहना है कि हमें अस्पताल से इस बारे में 29 अगस्त को रिपोर्ट प्राप्त हुई। उसके बाद सैंपल को मेकएलाइजा जांच के लिए सरकारी लैब में भेजा। वहां से 3 सितम्बर को नई रिपोर्ट आई। उसी आधार पर डेंगू माना गया है इसलिए अधिकृत तौर पर मौत की पुष्टि में 15 से ज्यादा दिन लग गए।

ऐसी थी मरीज की वास्तविक स्थिति

जब मरीज को इंदौर लाया गया तो उसकी स्थिति बहुत ही क्रिटिकल और मल्टी फेल्युअर थी। यूरिन में इन्फेक्शन और पस था। पानी की कमी के कारण भी इन्फेक्शन था। एनएसआई एंटीजन शुरू के दो-तीन दिन में (रतलाम में) ही पॉजिटिव पाया गया था। इसके बाद आईजीएम और आईजीजी (एक अन्य जांच) पॉजिटिव आए। बुखार के साथ विड्राल भी पॉजिटिव था। यह टायफाइड के लक्षण होते हैं। प्लेटलेट्स 35 हजार थे। सामान्य तौर पर इसकी रेंज 1.50 लाख से 4.50 लाख प्लेटलेट्स होती है। इस कारण किडनी में इन्फेक्शन था। पस और ईपीथेरियल सेल्स ने किडनी को खराब कर दिया था। डेंगू के सीरियस केस (मल्टी ऑर्गन्स फेल्युअर) के साथ उल्टी होना, यूरिन बहुत कम होना सहित कई कारण रहते हैं। इससे ब्लड प्रेशर लो हो जाता है। इस केस में भी ऐसा ही हुआ। सामान्य ब्लड प्रेशर 120/80 एमजी एचजी होता है। मरीज को जब इंदौर रैफर किया तो ब्लड प्रेशर रिकॉर्ड नहीं था। बाद में करीब 60/50 एमएम एचजी के करीब पाया गया। उसके सारे मल्टी ऑर्गन्स पहले ही फैल हो चुके थे।

इंदौर के सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल में महिला गार्ड को पीटा

एंट्री को लेकर हुआ था विवाद ; 2 महिलाओं समेत तीन पर केस दर्ज

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के एमजीएम सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल में महिला गार्ड से मारपीट का मामला सामने आया है। जानकारी के मुताबिक कुछ लोगों ने हॉस्पिटल में एंट्री की बात पर महिला गार्ड से मारपीट की। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने तीन लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया है। इनमें दो महिलाएं हैं। घटना शुक्रवार दोपहर करीब 3 बजे की है। पुलिस ने प्रीति बड़ोनिया (35) निवासी इदरिस नगर की शिकायत पर हिना निवासी सिद्धार्थ नगर, राखी निवासी बड़ी ग्वालटोली और इमरत निवासी सिद्धार्थ नगर के खिलाफ केस दर्ज किया है। संयोगितागंज थाना प्रभारी सतीश पटेल ने बताया कि मामले में जांच की जा रही है।

महिला गार्ड प्रीति ने पुलिस को दी अपनी शिकायत में बताया कि वह अस्पताल के मेन गेट में ड्यूटी पर तैनात थी। इसी दौरान तीन लोग पहुंचे और परिजन के अस्पताल में भर्ती पर उनसे मिलने की बात कही। लेकिन दोपहर के वक्त पेशेंट से मिलने नहीं दिया जाता। इसलिए उन्हें एंट्री नहीं दी। इससे नाराज उन लोगों ने गालीगलौज करते हुए मारपीट की।?? विवाद बढ़ता देख वहां मौजूद बाकी गार्ड और डॉक्टरों ने मौके पर पहुंचकर विवाद शांत कराया।?

हॉस्पिटल में 20 फीसदी महिला गार्ड्स की तैनाती- अस्पताल प्रबंधन के मुताबिक अस्पताल में कुल 65 गार्ड हैं। जिसमें करीब 20 फीसदी महिला हैं। घटना के वक्त एक ही महिला गार्ड से मारपीट हुई है। आरोपियों के दो अटेंडर पहले से हॉस्पिटल के अंदर थे। गार्ड ने इन तीनों को अंदर जाने से रोका तो वे सीधे मारपीट करने लगे। अस्पताल में एक मरीज के साथ एक ही अटेंडर की व्यवस्था है।

इंदौर में बदला मौसम, आज भी बारिश के आसार

रात का तापमान 1 डिग्री गिरा, कोटा पूरा करने के लिए अब सिर्फ 5 इंच की जरूरत

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में शनिवार सुबह से मौसम साफ है और धूप भी खिली हुई थी। इसके पहले शुक्रवार सुबह अचानक मौसम बदला और दिनभर में करीब 10 मिमी बारिश हुई थी। दरअसल अभी राजस्थान में चक्रवात और अरब सागर में नमी के कारण मौसम बदला हुआ है। इस वजह से आज भी इंदौर और आसपास के क्षेत्रों में गरज-चमक के साथ रुक-रुककर बारिश के आसार हैं।

मौसम विभाग के मुताबिक मानसून ट्रफ के प्रदेश से गुजरने और आंध्र प्रदेश-ओडिशा में एक्टिव लो प्रेशर एरिया की वजह से ऐसा होगा। जिसके चलते तेज धूप भी निकलेगी और बारिश भी होगी। मौसम वैज्ञानिक अभिजीत चक्रवर्ती ने बताया, आंध्र प्रदेश और ओडिशा के समुद्र तट पर लो प्रेशर एरिया सिस्टम एक्टिव है। वहीं, मानसून ट्रफ जैसलमेर से एमपी से सीधी होते हुए आगे गुजर रही है। एक अन्य सिस्टम भी एक्टिव है। इस वजह से दो दिन पूर्वी हिस्से में बारिश हो सकती है। लोकल सिस्टम की एक्टिविटी भी बनी रहेगी। 9 और 10 सितंबर को इंदौर सहित जि]लों में तेज धूप भी निकलेगी।

मौसम वैज्ञानिक वीएस यादव ने बताया कि दोपहर के बाद पानी गिरेगा। दिन में गर्मी का असर भी देखने को मिलेगा। वहीं इसके पहले शुक्रवार सुबह मौसम साफ था। फिर कुछ हिस्सों में बारिश शुरू हो गई। कुछ देर बाद फिर धूप निकल गई। दोपहर को फिर रिमझिम और धूप का सिलसिला चलता रहा। देर शाम कई क्षेत्रों में फिर बारिश हुई। इस दौरान 9.8 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई।

170 स्टूडेंट्स को दी सेल्फ डिफेंस की ट्रेनिंग

इंदौर (एजेंसी)। एमपी पुलिस हायर सेकेंडरी स्कूल, 15वीं बटालियन इंदौर में सेल्फ डिफेंस कैंप लगा। स्टूडेंट्स को सशक्त बनाने और व्यक्तिगत सुरक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से यह प्रोग्राम मिशन हिफाजत 156 स्कूल के तहत किया जा रहा है। ब्रांच मैनेजर दीपा मालवीय ने बताया कैंप में सेल्फ डिफेंस इंस्ट्रक्टर मास्टर सईद आलम ने स्कूल की 170 छात्राओं को सेल्फ डिफेंस की ट्रेनिंग दी। ट्रेनिंग के समापन अवसर पर स्कूल प्रिंसिपल ओम शंकर शुक्ला ने कहा कि वर्तमान सामाजिक परिदृश्य को देखते हुए सेल्फ डिफेंस की ट्रेनिंग बहुत जरूरी है और आज के समय की जरूरत है।

पीड़िता को फोटो-वीडियो वायरल कर धमकाया, मारपीट

इंदौर (एजेंसी)। वर्ग विशेष के लड़के के द्वारा एक लड़की को इतने परेशान किया गया कि उसने हाथ की नस काट ली। लड़के से पीड़िता की इंस्टाग्राम पर दोस्ती हुई थी। लड़का उत्तर प्रदेश का रहने वाला है। पीड़िता के फोटो को एडिट कर सोशल मीडिया पर शेयर करने की धमकी लड़का देता था और उसे ब्लैकमेल करता था। पीड़िता को लड़के ने रेलवे स्टेशन पर मिलने के लिए भी बुलाया। गले में ताबीज बांधने के लिए कहा और साथ चलने का बोला। पीड़िता ने अपने कजिन भाई को जानकारी दी तो भाई रेलवे स्टेशन पहुंचा। पीड़िता को उसके घर शिव सिटी छोड़ा। पीड़िता किराए से रहती है। उसके पिता नहीं है। घरवालों से अलग रहती है। आरोपी लड़का पीछा करते हुए घर तक आ गया और मोहल्ले में हंगामा किया। साथ चलने के लिए पीड़िता पर दबाव बनाया और फोटो-वीडियो सभी को बताने की धमकी दी। घर में घुसकर पीड़िता के साथ मारपीट की।

इंदौर एयरपोर्ट पर डिजी सेवा शुरू

चेहरा स्कैन करते ही प्रवेश, अब कतार में नहीं लगना पड़ेगा

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर एयरपोर्ट पर शुक्रवार से डिजी यात्रा सेवा शुरू हो गई। इस सेवा के शुरू होने के साथ ही अब यात्रियों को लंबी लाइन में नहीं लगना पड़ेगा। डॉक्यूमेंट्स भी नहीं दिखाने होंगे। इस सेवा से यात्री बिना लाइन में लगे सुरक्षा जांच तक पहुंच सकेंगे। एंट्री पॉइंट पर लगी स्कैनिंग मशीन से चेहरा स्कैन होने के साथ ही यात्रियों को एंट्री मिल जाएगी। सारा डेटा पहले से ही होगा, ऐसे में डॉक्यूमेंट्स दिखाने की जरूरत नहीं होगी। शुक्रवार को नागरिक उड्डयन मंत्री किंजरापु राममोहन नायडू ने वर्चुअल डिजी यात्रा सेवा का शुभारंभ किया। इंदौर सहित देश के 8 एयरपोर्ट पर यह सेवा शुरू हुई। प्रदेश में इंदौर पहला शहर है, जहां डिजी यात्रा सेवा की शुरुआत हुई। एयरपोर्ट पर आयोजित कार्यक्रम में सांसद शंकर लालवानी मौजूद थे। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व नागरिक उड्डयन मंत्री का धन्यवाद करते हुए कहा कि डिजी यात्रा शुरू होने से यात्रियों को सुविधा होगी और उनका समय बचेगा। इस दौरान एयरपोर्ट डायरेक्टर विपिनकांत सेठ भी मौजूद थे।

एप डाउनलोड कर देना होगी जानकारी

डिजी सेवा फैशियल रिकग्निशन टेक्नोलॉजी पर आधारित है

इसके लिए यात्रियों को एप डाउनलोड करना होगा। इसमें नाम, फोटो, मोबाइल नंबर, ई-मेल, आधार-ड्राइविंग लाइसेंस या वोटर आईडी की जानकारी डालना होगी। इसके बाद एक डिजी यात्रा आईडी बन जाएगा। टिकट बुक करते समय यह डिजी यात्रा आईडी भी डालना होगी। एयरलाइंस कंपनी यह आईडी और डेटा संबंधित एयरपोर्ट को दे देगी। एयरपोर्ट पर एंट्रेंस के दौरान यात्री जैसे ही अपना पीएनआर डालेंगे, वहां पर कैमरा चेहरे को कैप्चर कर लेगा। इसके बाद उन्हें सीधे प्रवेश मिल जाएगा।(जानकारी एयरपोर्ट प्रबंधन के अनुसार)

त्वरित न्याय

प्रियंका सौरभ
रिसर्च स्कॉलर इन पोलिटिकल साइंस, कवयित्री, स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तंभकार

'अपराजिता' बनने के लिए पहले घरों और कार्यस्थलों को सुरक्षित बनाना होगा

इस बात के बहुत कम सबूत हैं कि मौत की सजा देने से यौन अपराध थम जाते हैं, लेकिन ऐसे अपराधों के बाद ज्यादा कठोर कानूनों की मांग पर अक्सर एक आधिकारिक प्रतिक्रिया होती है। यह कहकर कि बलात्कार मानवता के लिए अभिशाप है और ऐसे अपराधों को रोकने के लिए सामाजिक सुधारों की जरूरत है, यह सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी हर सरकार की है कि कानून प्रभावी ढंग से लागू किये जाएं और यौन हमलों को रोकने व दंडित करने के लिए पुलिस बिना पक्षपात के काम करे। अगर महिलाओं के लिए पहले घरों व कार्यस्थलों को महफूज बनाकर उनके आगे बढ़ने की राह से अवरोध हटाये जाएं, तो इंसाफ और अच्छे से दिया जा सकेगा.

हरेक जघन्य यौन अपराध के बाद सजा-ए-मौत का शोर उठना और अध्यादेश जारी करके या विधेयक पारित करके इसे मान लेना, काफी आम हो गया है। दिल्ली में एक महिला से वहशियाना बलात्कार के बाद 2013 में आपराधिक कानूनों में बदलाव किया गया। उसके बाद, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और अरुणाचल प्रदेश समेत कई राज्यों ने यौन हमले के लिए बढ़ी हुई सजा की खातिर संशोधन किये। अब पश्चिम बंगाल में अपराजिता महिला एवं बाल (पश्चिम बंगाल आपराधिक कानून संशोधन) विधेयक, 2024 में यौन अपराधों के लिए दंड बढ़ाने का प्रावधान किया गया है, खास तौर पर महिलाओं और बच्चों के खिलाफ अपराधों पर ध्यान केंद्रित करते हुए। विधेयक में बलात्कार के विशिष्ट मामलों के लिए अनिवार्य मृत्युदंड और त्वरित जांच जैसे कड़े उपाय प्रस्तुत किए गए हैं। यह किसी बड़ी आपराधिक घटना के बाद जन आक्रोश पर पश्चिम बंगाल की विधायी प्रतिक्रिया को उजागर करता है, जिसका उद्देश्य कानूनी ढाँचे को मजबूत करना और त्वरित न्याय सुनिश्चित करना है।

विधेयक में बलात्कार पीड़िता की मृत्यु होने अथवा मरणासन्न अवस्था में पहुंचने पर मृत्यु दंड का प्रावधान किया गया है , जिससे निवारक प्रभाव और अधिक बढ़ जाएगा। विधेयक में यह प्रावधान किया गया है कि यौन अपराधों की जांच 21 दिनों के भीतर पूरी की जाए , जिसका उद्देश्य न्याय में तेजी लाना है। विधेयक पीड़ितों की पहचान की सुरक्षा को मजबूत करता है, तथा खुलासा करने पर 3-5 वर्ष के कारावास का प्रावधान करता है। विधेयक में यौन हिंसा के मामलों के लिए समर्पित विशेष न्यायालयों की स्थापना का प्रस्ताव है , जिससे कानूनी प्रक्रियाओं में तेजी आएगी। विधेयक, नाबालिगों के यौन शोषण से जुड़े मामलों को लक्षित करता है , कठोर दंड और बढ़ी हुई निगरानी लागू करता है। विधेयक, पुनर्वास और सामाजिक सुधारों के बजाय दंडात्मक कार्रवाइयों को अधिक प्राथमिकता देता है, तथा गहन प्रणालीगत मुद्दों की उपेक्षा करता है। कठोर दंड के बावजूद यौन अपराधों में निरंतर वृद्धि हो रही है, जो विशुद्ध दंडात्मक कानूनों के सीमित प्रभाव को दर्शाता है। विशेष न्यायलयों की स्थापना से मौजूदा न्यायिक ढाँचे पर दबाव पड़ सकता है, जिससे संभावित रूप से प्रक्रियागत देरी हो सकती है। निर्भया के बाद शुरू की गई फास्ट-ट्रैक कोर्ट को भी बोझिल कानूनी व्यवस्था और संसाधनों की कमी के कारण, इसी तरह की देरी का सामना करना पड़ा।

निवारक के रूप में मृत्यु दंड के उपयोग पर व्यापक रूप से बहस हुई है, परंतु इसकी प्रभावशीलता के साक्ष्य, सीमित हैं। वर्मा समिति की रिपोर्ट ने इस बात पर प्रकाश डाला कि मृत्यु दंड से यौन अपराधों में पर्याप्त कमी नहीं आती है, इसलिए अधिक प्रभावी समाधानों की आवश्यकता है। यह विधेयक केंद्रीय कानून के साथ संभावित संघर्ष उत्पन्न करता है, जिससे कानूनी चुनौतियों के कारण कार्यान्वयन में देरी होने की संभावना है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 254 के अनुसार ऐसे संशोधनों के लिए राष्ट्रपति की स्वीकृति आवश्यक है, जिससे कानून का लागू होना जटिल हो जाता है। विधेयक यौन हिंसा पर शिक्षा या जन जागरूकता अभियान जैसे निवारक उपायों को पर्याप्त रूप से संबोधित नहीं करता है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसे कार्यक्रम जागरूकता और रोकथाम पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो ऐसे

अपराधों को कम करने के लिए अधिक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

पीड़ितों के लिए सशक्त पुनर्वास और मनोवैज्ञानिक सहायता प्रणालियाँ शुरू करना दंडात्मक उपायों का पूरक होगा। यौन अपराध के मामलों से निपटने में होने वाली देरी को कम करने के लिए न्यायिक बुनियादी ढाँचे को अधिक संसाधन आवंटित करना आवश्यक है। भारत सरकार द्वारा ई -कोर्ट परियोजना का उद्देश्य न्यायपालिका को डिजिटल बनाना है, जिससे मामलों का तेजी से निपटारा हो सके। स्कूली बच्चों और आम जनता को लक्षित करके जागरूकता अभियान चलाकर यौन हिंसा के मूल कारणों को संबोधित करते हुए इस तरह की घटनाओं को कम करने में मदद मिल सकती है। सखी वन स्टॉप सेंटर पहल शिक्षा और जागरूकता प्रदान करती है, जिससे महिलाओं को अपराधों की जल्द रिपोर्ट करने का अधिकार प्राप्त होता है। राज्य के कानूनों का, केंद्रीय ढाँचे के साथ सामंजस्य होने से सुचारू कार्यान्वयन सुनिश्चित होता है और अनावश्यक संघर्ष से बचा जा सकता है।

केरल में राज्य की पहलों के साथ पोक्सो का सफल संरेखण, एक सहयोगी दृष्टिकोण के लाभों को दर्शाता है। स्कूलों में आत्मरक्षा प्रशिक्षण और लिंग संवेदीकरण जैसे दीर्घकालिक निवारक उपायों को शुरू करने से यौन हिंसा को रोकने में मदद मिल सकती है। दिल्ली पुलिस निःशुल्क आत्मरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करती है, जिसे पूरे देश में लागू किया जा सकता है। अपराजिता विधेयक पश्चिम बंगाल में यौन हिंसा को संबोधित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो सार्वजनिक आक्रोश के प्रति विधायी प्रतिक्रिया को दर्शाता है। हालाँकि, प्रभावी कार्यान्वयन के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जो दंडात्मक उपायों को पुनर्वास , सार्वजनिक जागरूकता और बुनियादी ढाँचे के समर्थन के साथ जोड़ता है । राज्य और केंद्र के बीच एक समन्वित प्रयास, महिलाओं और बच्चों के लिए स्थायी सुरक्षा सुनिश्चित करेगा तथा दीर्घकालिक सामाजिक परिवर्तन और उन्नत सुरक्षा को बढ़ावा देगा।

इस बात के बहुत कम सबूत हैं कि मौत की सजा देने से यौन अपराध थम जाते हैं, लेकिन ऐसे अपराधों के बाद ज्यादा कठोर कानूनों की मांग पर अक्सर एक आधिकारिक प्रतिक्रिया होती है। यह कहकर कि ÷बलात्कार मानवता के लिए अभिशाप है और ऐसे अपराधों को रोकने के लिए सामाजिक सुधारों की जरूरत है, यह सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी हर सरकार की है कि कानून प्रभावी ढंग से लागू किये जाएं और यौन हमलों को रोकने व दंडित करने के लिए पुलिस बिना पक्षपात के काम करे। अगर महिलाओं के लिए पहले घरों व कार्यस्थलों को महफूज बनाकर उनके आगे बढ़ने की राह से अवरोध हटाये जाएं, तो इंसाफ और अच्छे से दिया जा सकेगा।

लघुकथा

विघ्नहर्ता

अविनाश अग्निहोत्री

क्या बात है डुग्गु इस बार तो बड़े ही ज़ोर शोर से गणेश जी की झांकी सजाई जा रही है,दादा जी ने अपने मासूम पोते को देखते हुए उससे पूछा।

इसपर वह बोला हाँ दादू कल ऑनलाइन क्लासेस में हमे हमारी मेडम ने बताया है कि बप्पा को विघ्नहर्ता भी कहते है।

और उन्हें बच्चो से प्यार भी बहुत है।तब अगर हम सब बच्चे बड़े ही मन से उनकी सेवा कर,उनसे प्रार्थना करेंगे।

तो इस बार लौटते समय, बप्पा अपने साथ इस महामारी को भी सदा के लिए यहां से ले जाएंगे।

जिससे हम सभी फिर से स्कूल जा सकेंगे और दोस्तो से मिल व उनके साथ खेल भी सकेंगे।

डुग्गु की यह बात सुन दादाजी ने, कुछ पल बड़े ही गौर से उसकी विश्वास से भरी आंखों को देखा। और फिर गणेश जी की मूर्ति की ओर देख आंखे बंद कर मन ही मन बुदबुदाए, है ईश्वर इस मासूम के विश्वास की लाज अब तेरे ही में हाँथ है।

गज़ल

पढ़ते-पढ़ते

संगीता श्रीवास्तव 'सुमन'

रोज़ नफ़रत ज़दा आसार को पढ़ते पढ़ते।
मर न जाऊँ कहीं अख़बार को पढ़ते पढ़ते।।

वक़्त की चाल को लिख पाने की सूरत नापैद।
तीर चल जाते हैं तलवार को पढ़ते पढ़ते।।

दर बनाने के इरादे रखे रह जाते हैं।
नींद आ जाती है दीवार को पढ़ते पढ़ते।।

कौन पढ़ पाएगा आंखों के इशारों को भला।
आइना खो गया रुख़सार को पढ़ते पढ़ते।।

हमको मालूम नहीं कैसे हम अपने घर तक।
आ गये कूचा ओ बाज़ार को पढ़ते पढ़ते।।

सारे उलझाव के मंसूबे कोई ओर न छोर।
हूँ पसोपेश में सरकार को पढ़ते पढ़ते।।

कितने अरमान उसे देख के जागे थे 'सुमन'।
सो गये सब लबे इक़रार को पढ़ते पढ़ते।।

विज्ञान की नई चुनौती - डीपफेक

तकनीक

रीतेश ओमप्रकाश जोशी

तकनीक ने विषय के रूप में न केवल विज्ञान को सशक्त किया है बल्कि भाषाई शब्दकोष को भी संवर्धित किया है । विज्ञान एवम तकनीक के बढ़ते प्रभाव के कारण हम ऐसे शब्दों से भी न केवल परिचित हुए हैं, बल्कि व्यापक रूप में दैनिक जीवन में उपयोग कर रहे हैं जिन्हें हम साल - दो साल पहले तक जानते भी नहीं थे । ऐसा ही एक शब्द जो वर्तमान में न केवल चर्चा में बना हुआ है बल्कि सर्वाधिक चिंता का विषय भी है वह डीप फेक है।

मीडिया अक्सर एआई-जनरेटेड सामग्री के एक रूप का वर्णन करने के लिए 'डीपफेक' शब्द का उपयोग करता है जिसमें नकली ऑडियो, वीडियो या प्रामाणिक दिखने वाली छवियों में हेरफेर करना या उन्हें बनाना शामिल होता है, जिसे देखकर प्रथम दृष्टया उनके सही होने का आभास होता है। कई बार ये ऑडियो , वीडियो इतने प्रभावशाली नजर आते है कि आम व्यक्ति के लिए उनके झूठे होने का विश्वास करना कठिन हो जाता है। डीपफेक एक्सपर्ट अक्सर ठोस लेकिन झूठी सामग्री बनाने के लिए हाईटेक एल्गोरिदम का उपयोग करते है, जिसके जरिए वे किसी वीडियो या छवि में एक व्यक्ति के चेहरे को दूसरे के चेहरे से बदलने या ऑडियो या वीडियो रिकॉर्डिंग में किसी की आवाज़ की नकल करने अथवा ऐसा प्रतीत कराने, जैसे कोई कुछ ऐसा कह रहा है जो उन्होंने वास्तव में कभी नहीं कहा, जैसे कृत्य बड़ी आसानी से कर भ्रम पूर्ण माहौल बनाने में सफल हो जाते है। इसके अतिरिक्त किसी ऐसे व्यक्ति का नकली वीडियो या छवि बनाने संबंधी कार्य जैसा उसने कभी किया ही न हो , भी इसकी सहायता से बनाया जा सकता है।

डीपफेक की भीषण त्रासदी यही है कि इसका उपयोग मनोरंजन, शिक्षा से दीगर दुर्भावनापूर्ण उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है। इसके माध्यम से आसानी से गलत सूचना या अफवाह का प्रसार किया जा सकता है अथवा किसी की प्रतिष्ठा या विश्वसनीयता को नुकसान पहुंचाया जा सकता है। डीप फेक के संभावित खतरे को भांप कर केंद्र सरकार ने नवंबर 2023 में डीपफेक और ऐसी सामग्री से निपटने के लिए विनियमन तैयार करने का इरादा जताया था, लेकिन अपेक्षित कार्यवाही और प्रगति परिलक्षित होने के कारण यह मामला एक जनहित याचिका के रूप में माननीय उच्च न्यायालय दिल्ली के समक्ष विचाराधीन है । दायर जनहित याचिका (पीआईएल) में उल्लेखित किया गया है कि डीपफेक तकनीक का प्रसार समाज के विभिन्न पहलुओं के लिए गंभीर खतरा पैदा कर रहा है। इससे सार्वजनिक विमर्श और लोकतांत्रिक प्रक्रिया की अखंडता के कमजोर होने का अंदेशा है। देश के वरिष्ठ पत्रकार की ओर से दायर याचिका में कहा गया है कि हम एआई विरोधी तकनीक का इस्तेमाल करके ऐसी स्थिति को खत्म कर सकते हैं, अन्यथा बहुत नुकसान हो सकता है। इन मुद्दों से निपटने के लिए चार चीजों - पता लगाना, रोकथाम, शिकायत निवारण तंत्र और जागरूकता बढ़ाना, की आवश्यकता है। सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार के वकील ने भी इसे ऐसी समस्या माना है जिससे निपटने की जरूरत है। माननीय न्यायालय ने भी इस बिंदु पर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया है कि एआई के लिए केवल तकनीक ही उसकी काट होगी। न्यायमूर्ति श्री मनमोहन की चिंता इन शब्दों में स्पष्ट परिलक्षित होती है कि ÷ यह ऐसा कुछ है कि आप जो देख रहे हैं और जो सुन रहे हैं, आप उस पर भरोसा नहीं कर सकते। यह कुछ ऐसा है जो चकित करता है। जो मैंने अपनी आंखों से देखा और जो मैंने अपने कानों से सुना, मुझे उस पर भरोसा नहीं करना है, यह बहुत ही चौंकाने वाला है। याचिका में डीप फेक सामग्री के निर्माण में मदद देने वाले ऐप्लिकेशन और सॉफ्टवेयर तक सार्वजनिक पहुंच को रोकने का निर्देश दिए जाने का अनुरोध किया गया है। डीपफेक की महामारी को जनहित में नियंत्रित किया जाना आवश्यक है अन्यथा इसके दुरुपयोग से समाज में अराजकता फैलने का खतरा हमेशा बना रहेगा। मशहूर शायर जौन एलिया साहब के शब्दों में हालात ऐसे न बन जाए कि

अब नहीं कोई बात खतरे की
अब सभी को सभी से खतरा है

एक समय था जब कहा जाता था आवश्यकता आविष्कार की जननी है , पर वर्तमान परिदृश्य में आविष्कार होने के बाद आवश्यकता आविष्कार की गुलाम लगने लगी है । डीप फेक को नियंत्रित या विनियमित करने के लिए सभी स्तरों में प्रयास किया जाना आवश्यक है। सर्वप्रथम डीपफेक को कानूनी तौर पर परिभाषित किया जाना और उनके संभावित नुकसान (जैसे, यौन रूप से स्पष्ट, हिंसक या अपमानजनक) के आधार पर उन्हें वर्गीकृत किया जाना नितांत आवश्यक है। बड़ी संख्या में नई पीढ़ी के इस ओर बढ़ते रुझान को देखते हुए डीपफेक बनाने या साझा करने वाले ऐप के लिए आयु संबंधी सत्यापन अनिवार्य किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त हानिकारक डीपफेक का पता लगाने और हटाने के लिए AI-संचालित सामग्री मॉडरेशन को अनिवार्य किया जा सकता है।नियंत्रण हेतु यह भी नैतिक मापदंड निर्धारित किया जाए कि डीपफेक साझा किए जाने पर प्रकटीकरण अनिवार्य हो, जो यह दर्शाए है कि यह प्रसारित वीडियो या ऑडियो प्रामाणिक नहीं है। हानिकारक डीपफेक के निर्माता और उसे साझा करने वालों का दांडिक उत्तरदायित्व निर्धारित किया जाना भी आवश्यक है। डीपफेक ऐप्स की निगरानी करने और नीतियों को लागू करने के लिए वर्तमान में कोई नियामक निकाय नही है,इसके लिए नियामक एजेंसी की स्थापना होना चाहिए जिसके माध्यम से विनियमों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए ऐप्स का नियमित ऑडिट किया जा सके तथा गैर-अनुपालन के लिए दंड का प्रावधान किया जा सके जिसमें जुर्माना या ऐप हटाना शामिल रहे। इसके अतिरिक्त डीपफेक की पहचान करने के लिए पहचान उपकरणों के विकास को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। डीपफेक मुद्दों के संभावित खतरों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यकता होने पर अन्य देशों के साथ साझा कार्यवाही करने की व्यवस्था भी एक अच्छी पहल हो सकती है। इन कुछेक प्रयासों से डीपफेक वीडियो से जुड़े जोखिमों को कम करने में मदद मिल सकती हैं। ए आई को मानवता के विकास के नए आयाम के रूप में प्रचारित किया गया था पर ए आई जन्य जोखिम को देखते हुए शायर सुबोध लाल साक़ी बरबस ही याद आते है -

हम ने ख़तरा मोल लिया नादानी में
खुद को छोड़ा अपनी ही निगरानी में

बहरहाल जब तक कुछ उपाय ना मिले, गलत सूचना फैलाने से बचने के लिए डीपफेक की संभावना के बारे में जागरूक रहे और विश्वसनीय स्रोतों के माध्यम से जानकारी को सत्यापित अवश्य करे।

(फिल्म समीक्षा)

चर्चा में झूठी..

सुरेश सौरभ

एक मां के लिए उसका बेटा चाहे जैसा हो वह राजा बेटा ही होता है, बच्चे कच्ची मिट्टी की तरह होते हैं, जिन्हें हम अपने विचारों और संस्कारों से पुष्पित और पल्लवित करते हैं । शिव सिंह 'सागर' की हाल ही में रिलीज हुई एक शॉर्ट फिल्म 'झूठी' इन दिनों बेहद चर्चा में है, शॉर्ट फिल्म झूठी का कथानक भी कुछ इस तरह का है, जो शिक्षा जगत में विमर्श का विषय बना हुआ है, एक अध्यापक एक बच्चे राहुल को जब कक्षा में कमजोर पाता है, तब उसे वह एक पर्ची लिखकर देता है और वह कहता है कि यह पर्ची अपनी मां को देना? बच्चा वह पर्ची अपनी मां को देता है। माँ पर्ची देखती है। उस पर्ची में लिखा होता है,आपका बच्चा दुनिया का सबसे मूर्ख बालक है, इसे अगले दिन से स्कूल में न भेजें। लेकिन वह मां हिम्मत नहीं हारती है और अपने बच्चे से कहती है कि इस पर्ची में लिखा है कि मेरा बेटा बहुत होशियार है। संसार में आज भी द्रोणाचार्यों की कमी नहीं हैं, जिनकी वजहों से अनेक एकलव्यों के अंगूठे काटे जा रहा हैं। फिर वह हिम्मती मां अपने बेटे को खुद पढ़ाना शुरू करती है और पढ़ते-पढ़ते एक दिन वह अपने बेटे को इस काबिल बनती है कि उसका बेटा पुलिस का एक जिम्मेदार अधिकारी बन जाता है।

पुलिस अधिकारी बनने के बाद जब वह बेटा घर आता है। तब उसकी मां इस दुनिया में से गुजर चुकीं होती हैं। किसी काम से वह अपनी माँ का एक पुराना बक्सा खोलता है, जिसमें से एक पर्ची निकलती है, उसे याद आया, अरे! यह तो वहीं पर्ची है, जो वर्षों पहले मेरे मास्टर जी ने मेरी मां के लिए दिया था। उस पर्ची को देखा है उसमें लिखा था आपका बेटा दुनिया का सबसे मूर्ख लड़का है और इसे कल से स्कूल न भेजें। वह अपनी मां को याद करता है ,भावुक हो जाता है और बुदबुदाता है- मां तुम सचमुच मेरे लिए भगवान हो। कहानी वाकई दिल को छूने वाली है। निम्न मध्यम वर्गीय परिवार पर आधारित इस फिल्म में एक स्त्री के संघर्ष को दिखाया गया है। जिसका पति शराबी है, फिर भी वह अपनी सूझबूझ से द्रोणाचार्य जैसे गुरुओं का डटकर सामना करते हुए अपने बेटे को पढ़ा-लिखा कर अफसर बना देती है। यह मातृ शक्ति का ही कमाल है, जो कोयले को हीरा बना देती है। सब कलाकार बहुत ही उम्दा तरीके से फिल्म में अभिनय करते नजर आते हैं,किरदार के रूप में आर. चंद्रा, अमित श्रीवास्तव, अनीता वर्मा, प्रियांश गुप्ता, अमन शर्मा, ओम् प्रकाश श्रीवास्तव, आदि लोग लघु फिल्म में नज़र आए हैं। इसके अलावा कैमरा मैन डी. के.,फोटोग्राफी और एडिटर के. आमिर हैं। अर्पिता फिल्म्स इंटरटेनमेंट के बैनर तले बनी, यह लघु फिल्म आजकल खासी चर्चा में है। शिव सिंह 'सागर' इस फिल्म के लेखक, निर्माता, निर्देशक हैं। छंगू भाई, कबाड़ी, पापा पिस्तौल ला दो, रक्षक, फंस गया बिल्लू, डुबकी जैसी अनेक बेहतरीन कथानकों की लघु फिल्मों का निर्देशन करने वाले 'सागर' जी फतेहपुर के युवा कवि एवं शायर हैं।

सुबह सवेरे मीडिया एल. एल. पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी. जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा.लि., राउखेड़ी, देवासरोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईंकृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक-उमेश त्रिवेदी
संपादक(म.प्र.)-गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक-अजय बोकिल
स्थानीय संपादक-हेमंत पाल
प्रबंध संपादक-अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNINo.MPHIN/2015/66040,
MobileNo.:09893032101
Email-subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वक्रोक्ति

सुसंस्कृति परिहार

शिक्षक दिवस के दो दिन बाद साक्षरता दिवस

आ सितम्बर माह में शिक्षक दिवस और साक्षरता दिवस केवल दो दिन के अंतराल पर मनाए जाते हैं ? एक दिन शिक्षा देने वाले शिक्षक के सम्मान का दिन होता है जबकि दूसरा दिवस लोगों को साक्षर बनाने के लिए समर्पित है। आजकल इन दोनों दिनों की कोई उपयोगिता नहीं रही। जियो को धन्यवाद देना चाहिए जिसने दुनियां मुट्ठी में कर दी है।आज उसी का महत्व है जो घर बैठे एक मोबाइल पर तमाम काम कर रहा है। बड़ी से बड़ी लाइब्रेरी को चट करने वाले तथाकथित बुद्धिजीवी यदि मोबाइल चलाने की दक्षता नहीं रखते तो उनका लेखन पन्नों की फड़फड़ाहट के बीच सुबकता रह जाता है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि इसे चलाने की सीख आपके अभ्यास से ही आ जाती है। शिक्षकों की कतई जरूरत नहीं पड़ती।

मोबाइल में ज्ञान का अपरिमित भंडार पड़ा है अब ये आप पर निर्भर है आप किस ज्ञान से जुड़ना चाहते हैं। सभी विषयों पर आपको वृहत ज्ञान उपलब्ध है। कुछ गृहणियों ने तो हज़ारों व्यंजन बनाना सीख लिए,तो कई लोग आयुर्वेद का ज्ञान इससे लेकर घर बैठे चिकित्सक बन गए। खेती किसानी से लेकर गीत संगीत, स्वास्थ्य,कला, साहित्य ,मंत्र तंत्र , खेलकूद, मनोरंजन,धरम करम सब कुछ इस नन्हे मोबाइल में है। फिर क्या ज़रूरत है स्कूल जाकर समय बर्बाद करने की। पढ़नाा यदि ज़रूरी लगे तो कोरोना काल की तरह घर में जब इच्छा हो पढ़ सकते हैं। फिर आजकल आईएस और आईपीएस अधिकारी भी तो बिना पढ़ाई और परीक्षा के बन रहे हैं।अपराध शास्त्र हो या राजनीति का क्षेत्र घर बैठे सब तरह का इंतजाम है।अपना गुरु ? गूगल से चुन लीजिए तथा उसका अनुसरण कीजिए कुछ ही दिनों में आप पुख्ता अपराधी और राजनैतिक बन जाएंगे।वैसे भी इसके उदाहरण हमारे देश में मौजूद हैं। वरना जियो का प्रचार साहिब जी ना करते ।

इस बात को संभवतः हमारी सरकार गहराई से समझ रही है इसलिए सरकारी स्कूल बंद करती जा रही है बेतुके खर्च और समय की बर्बादी का उसे ख्याल है।शिक्षा का बजट निरंतर घटता जा रहा है विश्व विख्यात जेएएनयू की अवधारणा को क्षत-विक्षत किया जा रहा है।डीयू में मनुसंहिता पढ़ाने की कोशिश की गई। प्रत्येक शिक्षा केंद्र के द्वार पर सरस्वती देवी विराजमान हुई हैं।मतलब पूजा से ही ज्ञान के द्वार खुलते हैं संदेश दिया जा रहा है। जब राजशाही में शिक्षा दीक्षा की व्यवस्था चंद घरों तक सीमित थीं तब क्या कठिनाई थी हमें सब कुछ अनुशासित चलता था। अगर चंद नेताओं और अमीरजादे विदेश में पढ़ाई कर लें तो हमें चिंतित होने की ज़रूरत नहीं है

अब तो देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था है हम सब स्वतंत्र हैं अपने विकास का पथ चुनने के लिए। निःशुल्क मोबाइल तो फिर भी मिल भी जाता है पर रिचार्ज बढ़ने से कदम लड़खड़ा जाते हैं। इसलिए गरीब पिछड़ जाते हैं अमीर आगे निकल जाते हैं। ये सरासर अन्याय है गरीबों के साथ।इनको इस बावत आरक्षण मिलना चाहिए मोबाइल रिचार्ज नि- शुल्क हो जाए तो मोबाइल शैक्षणिक जगत से गरीब बच्चे भी आगे आ जाएंगे और हम समानता के ऊंचे पायदान पर होंगे।

इससे सबसे ज्यादा फायदा ये होगा कि विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं और प्रश्नपत्र लीकेज से राहत मिलेगी। युवाओं की विश्वविद्यालय, कालेज और स्कूल में भीड़ भी नहीं जुट पाएगी। यानि तमाम आंदोलन, प्रदर्शन ठंडे बस्ते में। अपनी राह खुद चुनो इसके लिए कोई दोषी भी नहीं होगा। युवतियों के साथ होने वाले अमानवीय व्यवहार भी खत्म होने लगेंगे। सब कुछ घर में ही मोबाइल उपलब्ध करा देगा। बुजुर्ग वर्ग घर बैठे अभिषेक,भजन कीर्तन और भगवान के प्रसाद का आनंद लें सकेंगे। घर बैठे मैच का लुत्फ लें । दिलचस्पी हो तो संसद की तू-तू-मैं-मैं देख लें। दुनियां घूम लें वगैरह वगैरह।

इसलिए मोबाईल के ज़रिए अपने अपने गूगल गुरु चुनिए उनको सम्मान की भी ज़रूरत नहीं वे संपूर्ण ज्ञान बिना ऊंच नीच का ध्यान धरे दे देंगे। स्कूल कालेज जाने की जहमत ना उठाएं।बस मोबाइल चलाने का हुनर सीख लीजिए।सब कुछ आपकी मुट्ठी में होगा।रोजगारों की जननी है मोबाइल बशर्ते आप इसका प्रयोग ईमानदारी से करें। रोजगार देने के सरकार और अंबानी की जय जयकार कीजिए । सरकार के मुहताज ना बने सिर्फ़ मोबाइल और रिचार्ज के लिए ही संघर्ष करें। वैसे सरकार खुद समझदार है। उसे इसे अपनी एकमेव जिम्मेदारी समझ यह खर्च वहन करना चाहिए। भले वह देशवासियों पर कोई कोरोना जैसी बीमारी वाला टेक्स लगाकर आपूर्ति कर लें ।

एक और निवेदन अर्ज़ है जैसे बहुत से कानूनों की उपयोगिता ना होने के कारण उन्हें वापस लिया गया है उसी तरह शिक्षा की यह गांव गांव फैली घाटे की दूकान भी सरकार को जनहितार्थ बंद कर देनी चाहिए।अब कैसा शिक्षक सम्मान और कैसी साक्षरता। मोबाइल है तो आपकी चिट्ठी पत्री है,प्रेम मोहब्बत है। रजिस्ट्री है,कैमरा है,टार्च है ,अखबार है टीवी है, रेडियो है ज्ञान संवर्धन केंद्र है। मोबाइल में गुन बहुत हैं सदा राखिए संग।अब तो वैसे भी अंगूठे का चलन लौट आया है।हस्ताक्षर भी ज़रूरी नहीं। आइए इस बेहतरीन कार्य में बेझिझक सहभागिता निभाएं।

काले रंग में ही समाए हैं सारे रंग

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

क समय बदला है लोग बदले हैं, कला के प्रति लोगों का रुझान बदला है। लोग तो हैं पर लोगों के पास समय नहीं है। अतीत को समझने, अपनों को जानने का समय नहीं है जबकि घण्टों मोबाइल पर गुजार देने को समय है। धर्म ग्रंथों को पढ़ने का समय नहीं है, यही बात ध्यान में रखते हुए कलाकार विनय शर्मा के मन में बात आई कि क्यों न धर्मग्रंथों को लोगों के सामने लाया जाय, लोगों को ग्रंथों पर ध्यान देने हेतु विवश किया जाय। यही सब बातें ध्यान में रखते हुए आपके द्वारा आपके पास संरक्षित सैकड़ों वर्ष पूर्व के ग्रंथों के पन्नों को कैनवास पर चिपका कर तथा कपड़े का रूप देकर उसे ओढ़ लेने जैसा काम किया गया। जिसका असर लाजवाब रहा। आप वही ड्रेस पहन कर लोगों के बीच भी जाते रहे हैं। लोग कुछ अलग देखते हैं जानने समझने का प्रयास करते हैं। इसी बहाने धर्म ग्रंथों के नजदीक आते हैं। आप का यह कार्य काफी सराहा भी जाता रहा है। नित नये प्रयोग हेतु भी आपको जाना जाता है। इसी प्रयोग के बदौलत आप पेपरमैन के नाम से भी विख्यात हुए।

आप अपने स्टूडियो अतीत राग में घण्टों वहां उपस्थित सभी वस्तुओं से बतियाते हैं, संवाद स्थापित करते हैं। जहां सैकड़ों पुराने ग्रथ संरक्षित है। जिस पर लिखे हुए को आप कलाकृति मानते हैं। अपने कला और संस्कृति, भारतीय कैलिग्राफी, भारतीय विचार को लोगों तक पहुंचाने हेतु क्यों न मैं उसे धारण कर लूं इसी ध्येय से ये सफ़र संभव हो सका और आप सफल हो सके हैं अपने भारतीय ग्रंथों के कलात्मक ज्ञान से लोगों को रूबरू करवा पाने में, आप सफल रहे हैं पेपर मैन बनने के मुख्य मकसद में।

सन 2006 की बात है दोहा एशियाई खेलों में कलाकार विनय शर्मा को आमंत्रित किया गया। भारत से इकलौते आप आमंत्रित कलाकार थे। भारतीय कला का प्रतिनिधित्व करने का सौभाग्य मिलना निश्चित रूप से आपके लिए बहुत ही गर्व का समय रहा होगा। एशियाई देशों से 5 कलाकार आमंत्रित थे। तमाम कैंपों में हिस्सा लेते रहने के बावजूद कुछ हमेशा के लिए याद रह जाते हैं कैंपों की चर्चा करते हुए आप कहते हैं कि पोलैण्ड में 40 साल से एक आदमी बिल्कुल निश्चित तिथि पर लगातार कैंप कर रहा है और इसी बहाने एक छोटे से गांव को उसने कला का हब बना दिया है। बच्चा-बच्चा आर्ट से प्रेरित होता है वहां। इजिप्ट में दीवारों पर, बड़ी-बड़ी नावों पर पेंट करना पड़ता है, मलेशिया में एक अलग ही तरीके का कैम्प हुआ जिसमें पूरा गांव इंवॉल्व होता है जहां पर सब कंटेंपरेरी आर्टिस्ट्स काम करते हैं और उसका टाइटल उन्होंने दिया आर्ट विदाउट बॉर्डर, छोटे-छोटे गांवों में इस तरह का आयोजन निश्चित रूप से बहुत विशेष हो जाता है। जिस देश में वहां की कला और संस्कृति मजबूत स्थिति में है वह देश हमेशा खुशहाल रहता है। वाकई कला और साहित्य संस्कृति की रीढ़ है बिना इसके खड़ा कैसे हुआ जा सकता है?

आपके तमाम कृतियों में, तमाम प्रयोगों में काली स्याही से बने चित्रों की विशेष चर्चा होती रही है आप कहते हैं कि यह ब्लैक इंक कुछ नहीं है बस गोंद और चारकोल का एक खेल है मेरा यह मानना है कि काले रंग में ही सारे रंग समाए हुए हैं। रंगहीन होते हुए भी पता नहीं क्यों सबसे रंगीन मुझे श्याम वर्ण ही लगता है। मैं जब प्रकृति को बिना रंग के देखने का प्रयास करता हूं तो मुझे इसी में सारे रंग नजर आने लगते हैं चाहे अरावली की पर्वत मालाएं हों, पेड़ पौधे हों, बादल हों आदि। यह चारकोल पाउडर ही है जिन के मिश्रण से मै ये घोल तैयार करता हूं। मेरे चित्रों में बनी चिड़िया संदेशों को संप्रेषित करने का एक माध्यम है। मैं पहाड़ को स्थिरता और सहन शक्ति का प्रतीक मानता हूं। पहाड़ है तो पानी है यह मेरा एक संदेश है। उत्खनन को रोकने हेतु अपने चित्रों के माध्यम से मैं एक संदेश देना चाहता हूं। उत्खनन से नुकसान होता है। मेरे गांव के आसपास में पहाड़ हुआ करता था लेकिन उसका उत्खनन करके खतम कर दिया गया। मुझे बड़ा दुख हुआ, पहाड़ मेरे गांव की रक्षा करता था। मानव इतना सशक्त हो गया है कि वह किसी को भी स्थाई नहीं रहने देना चाहता। मैं एक संदेश देना चाहता हूं कि हम इतने सफल हो गए हैं कि अपने प्रकृति को ही नष्ट कर दे रहे हैं। यह ठीक नहीं है। इस पर ही मैंने अरावली की पूरी श्रृंखला तैयार की है। करीब डेढ़ हजार चित्र तो मैंने अभी तक बना लिए हैं। बिल्कुल सहज सरल लय ताल युक्त चित्र हैं ये सभी। आपके नाम 365 दिन में 365 कलाकृतियां बनाने का रिकार्ड भी है।

मैं अपने सैकड़ों ड्राइंग्स गंगा में बहा देता हूं। जब मैं पोलैंड गया तो वहां की पवित्र नदी में भी मैंने ऐसे ही किया, इजिप्ट गया तो वहां के नील नदी में, जर्मनी गया तो जर्मनी के नदी में भी बहा दिया। कलाकार विनय शर्मा की ये बातें बहुत ही प्रभावशाली लगती है। उनका कहना है कि नदी में मैं अपने ड्राइंग्स को विसर्जित करता हूं इसके पीछे मेरा उद्देश्य होता है कि अगर आपको कुछ नया करना है तो अपने पुराने कुछ को विसर्जित करना ही होगा ताकि नए का सृजन हो सके। आप पुराने विचारों को जब विसर्जित कर जागेंगे तभी आपके पास नए विचार आएंगे। आपका मानना है कि विसर्जन में ही सृजन है आप पुराने को विसर्जित करेंगे तभी नए को सृजित कर पाएंगे। नये की चाह में पुराने के लगाव से मोहभंग जरूरी है। कुछ खोकर ही कुछ पाया जा सकता है। सृष्टि में भी यही बात लागू होती है। जब आप किसी अपने को छोड़ते हैं तो क्या आपको कष्ट नहीं होता होगा? होता है पर सृजन का मोह भी तो है उसे भी तो नहीं छोड़ा जा सकता फिर पुराने पर ही आश्रित रहना सर्जक को कमजोर बनाता है, सृजन के साथ अन्याय होता है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है उस हेतु भी ये प्रक्रिया निहायत ही जरूरी है।

विनय शर्मा कहते हैं कि जब मैं मेरे ड्राइंग्स को विसर्जित करता हूं तो प्रार्थना करता हूं कि मुझे कुछ नया मिले। मैं अपना पेपर खुद बनाता हूं, हैंडमेड पेपर। क्योंकि अपना फलक मैं खुद तैयार करता हूं इसलिए कृती के साथ मेरी आत्मियता और अधिक बढ़ जाती, जुड़ाव और महीन हो जाती है। पेपर के लुग्दी के निर्माण से लेकर सरफेस के तैयार होने और उस पर चित्र अंकित होने तक तथा पूर्ण होने तक के सफर का साक्षी मैं अंत तक जुड़ा रहता हूं और जब कृति पूर्ण होती है एक अजीब सी संतुष्टि से भर जाता हूं। वर्क एवं सरफेस को लेकर नए-नए प्रयोग करते रहना आपकी विशेषता है। आपके इंस्टालेशन भी काफी मोहक एवं प्रभावी हैं। पेपर के बने बच्चों का स्कल्पचर देखकर गजब का सुकून मिलता है।

जहां कई सारे बच्चों को एक साथ खड़ा कर तमाम बातें प्रस्तुत की जातीं है। जिसका कुछ समय पहले एक शो चंडीगढ़ म्यूजियम में था, जो काफी सफल था, जिसमें करीब पचास बच्चों को बस्ता लिए हुए तैयार किया गया है। उनको एक साथ कहीं खड़ा कर

दिया जाता है तो ऐसा लगता है कि स्कूल चल रहा हो, पूरा का पूरा माहौल क्रियेट हो जाता है और यही एक कलाकार की सफलता है। आप कहते हैं कि कभी भी जब परेशानी होती है तो इन चीजों को देखकर या कला को देखकर बड़ा ही सुकून मिलता है और ऐसे दृश्य बीमारियों को भी हर लेते हैं। एक बार मुझे स्वाइन फ्लू हुआ यह 2013 की बात है उस समय स्वाइन फ्लू को लेकर भयंकर डर था कि स्वाइन फ्लू हो जाने के बाद बचना मुश्किल होता है उस परिस्थिति में भी मेरी कला ने मेरा इतना साथ दिया कि मेरे सारे कष्ट दूर हो गए। मैंने उस बीमारी को हंसते खेलते निकाल दिया, सैकड़ों ड्रॉइंग तैयार कर दिया मैंने। उस बीच मुझे पता ही नहीं लगा कि आठ दस दिन मैं बिमार रहा। अतः मैं कह सकता हूं कि कला जबरदस्त औषधि का काम करती है। कला लोगों के लिए शक्ति का काम करती है बहुत बड़ी दवाई है कला।

365 दिन में 365 कृतियां बनाने का रिकार्ड भी है आपके नाम है। आप कहते हैं कि इसमें मैं रोज एक छोटा कैनवास करता था गणेश को थीम लेकर। कृति में गणेश हों या ना हों यह जरूरी नहीं था पर उस समय मेरे मन में गणेश बसे हुए होते थे। मैं गणेश के भाव को लेकर ही काम करता रहा और 365 दिन लगातार रोज एक कृती पूरी करता रहा आगे चल कर इससे एक इंस्टॉलेशन भी तैयार हो गया। इजल के ऊपर जब 365 कैनवास लगे होते हैं उसका एक अलग आनंद दिखता है इसमें मैंने हर रोज काम किया और विषम परिस्थितियों में भी काम किया उसी बीच में जीजा जी का एक्सीडेंट हो गया था, वह लिफ्ट से गिर गए थे, कोमा में थे, बचना बिल्कुल संभव नहीं था उस दिन भी मैंने ड्रॉइंग बनाई चित्र में गणेश तो नहीं दिख रहे थे पर उस दिन एक विचित्र अजीब तरीके का चित्र बन गया। देखा जाए तो कला आपको संबल प्रदान करती है। कला से आपको हिम्मत मिलती है। कला आपके जीने का सहारा बनती है। कला विषम परिस्थितियों से आपको उबारती है। ऐसी चीजें यदि हमारे पास हों तो इससे अधिक सौभाग्यशाली और क्या हो सकता है। मैं तो यह मानता हूं कि ईश्वर की मुझ पर बहुत बड़ी कृपा है जो मैं कलाकार बन सका या कला से मेरा नाता हो सका।

सूप को बस पीना ही नहीं जीने लगना

जीवन दृष्टि

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

सूप का स्वाद अलग ही होता है। मूल पदार्थ में मसाले का रस इस तरह भर देता है कि मूल पदार्थ और मसाला घुल कर ऐसे एक हो जाते हैं कि किसी का अलग से स्वाद नहीं मिलता और जो मिलता वह एक दूसरे के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए ही मिलता है और सूप पूरी तरह से रसदार और मसालेदार ही होता है तभी पीने आनंद आता है । जिस किसी ने सूप पी लिया और जिसकी जुबान पर जो स्वाद लग गया वह जाता ही नहीं । सूप तो अपने रंग , रस और मसाले से ही पकड़ लेता है । सूप सबको अच्छा लगता है और जो सूप के नाम से बिदकता है वह जानता ही नहीं है कि सूप होता क्या है ? आप सूप को लेकर परेशान न रहे...सूप की खोज ही सब कुछ निचोड़ कर स्वाद खोजने और स्वाद को पीने में हुई है । जो रस तक , स्वाद तक और पदार्थ की आत्मा तक पहुंच जाना चाहते हैं वो एक निश्चित समय के बाद सूप पीते ही पीते हैं । सूप तो? सूप ही हैं और सूप को सूप के रंग में देखना ...सूप के रूप को देखना... सब कुछ आनंद को बढ़ाता है । मूल पदार्थ में जब रस , गंध और स्वाद घुल जाता है तो मजा ऐसे आता है कि आदमी के लिए कुछ और हो ही नहीं। जीवन के रस रंग की तरह ही सूप का रंग भी जम जाता । सूप का स्वाद जीभ पर होते हुए मन... आत्मा तक पहुंच जाता है । आप सूप जब पीते हैं तो केवल पीने के लिए नहीं पीते पीने से बहुत आगे स्वाद मन आत्मा की संतुष्टि और स्वाद , रंग और जीवन को समझने की तड़प ही स्वाद तक ले जाती है । रंग रूप और स्वाद को लिए लिए ही सूप के साथ मन पर सूप का रंग और स्वाद छा जाता हैं । सूप के साथ एक और का होना जरूरी होता है । एक से ज्यादा दो चार हों तो बात कुछ इस तरह जम जाती है कि आनंद के सागर में आप डूबने लगते हैं । सूप का आनंद कभी भी अकेले नहीं लिया जाता है । सूप तो सूप ही होती है और सूप के साथ गर्मागरम रस , मसाला और स्वाद भर नमक सब ऐसे आ जाता है कि सूप को बस पीने की मजबूरी ही नहीं होती सूप तो जीवन ही बन जाता है । सूप पदार्थ के रस स्वाद और मूल तक पहुंच जाने के क्रम में सूप के स्वाद तक पहुंचते हैं । सूप के साथ मन बना होता है । स्वाद कलिकाएं खिल जाती हैं और सूप के साथ मन की तरंगें एक दूसरे से उछल उछल कर ऐसे बतियाने लगती हैं कि जैसे आदमी हजारों कोस से मिलने केवल तुम्हीं से आया हों... भले वो अपने ही काम से क्यों न आया हो पर सूप की टेबल पर एक अलग ही रंग जम जाता है । सूप होटल की हो या घर की ...सूप है तो साथ में स्वाद का नमक और जीवन की रसधारी चमक भी बनी रहती है । सूप के साथ थोड़ा थोड़ा रिलेक्स सा हो जाते हैं और जो अजनबी होता है वह भी बहुत करीब का लगने लगता है और जो मित्र मंडली से होता है वह तो खुल कर खिल जाता है। मित्रों के बीच किसी तरह का दुराव छिपाव नहीं होता न ही एक दूसरे की पसंदगी और नापसंदगी को लेकर कोई कमेंट, सब अपने स्वाद और अपने ही रंग में खोए होते हैं किसी को यह नहीं पड़ी होती कि कौन क्या लें रहा है क्या नहीं ले रहा है या कौन किस चीज का सूप ले रहा है बस सब एक दूसरे को सूप के साथ देखना चाहते हैं...सूप के साथ खुलना चाहते हैं और जीवन के रंग में ऐसे डूब जाना चाहते हैं कि किसी को आप अकेले नहीं रहने देते सब अपनी अपनी दुनिया के साथ आ जाते हैं और सूप पर जम जाते हैं । सूप को बनते देखना भी दिलचस्प होता है । कोई भी सूप ऐसे ही थोड़े बन जाता है उसे बनाने में जान लग जाती है । टेबल पर जो सूप है उसकी कीमत उस पदार्थ और बनाने वाले की मेहनत में छिपी होती है और स्वाद में तो पूरी जान ही होती है । जब कोई सूप पीता है तो उसके साथ आनंद उमड़ पड़ता है । आनंद ही अर्थ बन जाता है । ज्यादातर को बस प्याले में सूप दिखता है । और वाह वाह कर सुड़क लेते हैं या स्पून से जीभ पर उतार लेते हैं । सबर भी नहीं करते कि थोड़ा सूप ठंडा हो लें । सूप का मजा तो गर्मागर्म पीने में है और कई नादान तो मुंह जला लेते हैं पर आनंद तो आनंद की तरह ही आता है । वह सूप पीने पर आता है । वह सूप पीकर इतना मगन हो जाता है कि बाद में खाना खाने की भी याद नहीं रहती है...वह तो सूप में ही खोया होता है और इतना खो जाता है कि पूछो मत...एक बार तो बैरा हैरान होकर पूछा कि साहब क्या लाएं ? बाउल में सूप खत्म हो गई है । अब तो खाने का आर्डर कर दीजिए...साहब बोले कि तूं कहां का बौड़म आदमी है ...देख नहीं रहा है कि अभी हम सूप के स्वाद में खोए हैं और तूं है कि मगन ही नहीं रहने देता है...चल अब जल्दी से एक चपाती और फ्राई दाल लगा दें...और क्या लें तूं भी गजब करता है बीच स्वाद के आ जाता है । तूं भी क्या करें तुझे भी होटल चलाना है । कोई बातों की दुकान तो खोलनी नहीं है । सूप पीने का अंदाज अलग अलग ही होता हर कोई एक ही तरीके से सूप नहीं लेता न ही सूप पर बातें करता पर कुछ लोग होते हैं कि सूप पर ही अपने को उतार कर रख देते हैं। मगन हो जाते हैं और गाने लगते हैं उनके लेखे दुनिया में मगन होने के अलावा कोई और काम नहीं है पर सूप तो सूप ही है राजा आनंद में डूबते डूबते सूप में उलझ जाते हैं...कहना पड़ता है कि राजा सूप पीया जाए... जो आनंद सूप में है वह भला और कहां ? सूप उसके उपर मलाई और फिर सुंदर से बाउल में सूप इस तरह सज कर आती है कि आप सूप को चाहें तो घंटों निहारते रहे पर सूप से मन नहीं भरेगा ...सूप अपने रंग में ही जमता है और सूप को जब मित्रों के साथ ... रस और रंग में डूब कर पीते हैं तो दुनिया ही आंखों के आगे घूम जाती है । सूप को देखते ही वह खुश हो जाता...उसकी खुशी ही सूप में समायी होती है । वह जब भी सूप पीया तो एक अलग अंदाज ही होता पहले सूप को बाउल में धीरे धीरे घुमाता ऐसे घुमाता कि सूप बिना कहे ही नाचने लगती फिर सूप को सूप स्पून में पूरा भर लेता फिर आसमान में मुंह उठाकर सूप को मुंह में इस तरह रखता कि सूप सीधे सीधे स्वाद कलिका पर गिरे और पूरा स्वाद ही जिह्वा से उतर कर आत्मा में बस जाएं । सूप उसके जिगर में उतरता था...धीरे धीरे सूप का रस छा जाता वह सूप को बस पीता ही नहीं जीने लगता है । सूप के साथ खुशी की बारिश होती है । पूरा मन ही सूपमय हो जाता है । आप सूप पीते हैं और जो कोई आपके साथ सूप पी रहा है वह सूप को केवल सूप की तरह पी रहा होता है । अक्सर सूप में जीवन ही घुला होता है । वह सूप कभी भी यूं ही नहीं पीता । जब भी पीता है तो कोई न कोई आनंद का बड़ा कारक होता है आनंद में होना और आनंद के साथ चलना सूप पीने की आनंद दशा है । साहित्य में जो महत्व रसदशा में आने का है वहीं महत्व जीवन में सूप के साथ आनंद दशा में डूबने से होता है । सूप मन के रंग को अपने साथ लेकर चलती है, समय हो और जीवन को यदि आनंद के साथ, रस के साथ जीना चाहते हों तो सूप का आनंद समय समय पर जरूर लें... दुनियादारी के तमाम चक्कर से मुक्ति सूप ही दिलाती है जिसे कोई और नहीं बतायेगा , वहीं बता सकता है जो सूप को जीवन आनंद में डुबकर जीया हो ... फिर तो आनंद की बारिश हो ही जाती है... जिसमें स्वाद रंग और गंध व समय का नमक सहज रूप से घुला होता है । स्वाद के लिए, रंग के लिए और रस के लिए कहीं भी और किसी हद तक जाया जा सकता है पर यह भी तय है कि सूप की दुनिया में रस , रंग और गंध का जो मूल्य है वह कहीं भी नहीं है । हर आदमी सबसे पहले सूप के रंग और स्वाद से जुड़ता है । फिर आनंद सूप से जिगर में उतरने लगता है । मेज और मेज पर सूप साथ में मित्र मंडली और संगीत की धुन कि बस महफ़िल जम गई हों... और वह बिना कुछ कहे बिना कुछ सोचे सूप में गुलाब की सारी पंखुड़ियों को डाल देता है...सूप से भीनी भीनी खुशबू उठने लगती है...गुलाब का रंग ही नहीं गुलाब हो जाने की गुलाबी सत्ता इस तरह चल पड़ती है कि आदमी अपनी जगह पर रहता ही नहीं बहक ही जाता है । बहके हुए अंदाज में वह सूप पीता है...और सूप को जो भी इस नफासत के साथ देखाता , बस देखता ही रह जाता कि साहब सूप पी रहे हैं और रंग जम गया है । सूप तो सूप ही है आनंद के सागर में डूबों देता है साथ में सागर की लहरें भी कहां रुकती चलती ही चलती रहती हैं ... लहरें ऐसी कि आप अनसुनी नहीं कर सकते...और सूप जिगर में उतर रहा है साहब ...अब रंग जमेगा ।

फिर अभिनय की नई ऊँचाई छूते के.के. मेनन

पिछली सदी के अंतिम दशक में मुम्बई (जिसे पहले बॉम्बे के नाम से जाना जाता था) में अक्सर गैंगवॉर होते थे। उस समय अखबारों में भी सबसे ज्यादा ध्यान अण्डरवर्ल्ड की लड़ाई पर ही दिया जाता था। श्रवण तिवारी द्वारा निर्देशित वेबसिरीज 'मुर्शिद' उस दौर के एक अपराधी पर आधारित है कहानी है जो अण्डरवर्ल्ड से भाग निकला था, लेकिन लम्बे समय के बाद नियति उसे वहीं वापस ले आती है। इस गैंगस्टर ड्रामा सीरीज की कहानी मुर्शिद (के के मेनन) के इर्द-गिर्द घूमती है जो अपने दौर का एक बहुत बड़ा माफिया डॉन है जो कुछ बदलाव के बाद समाजसेवा से जुड़ गया था ।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

यदि आप एक रोचक और मनोरंजक थ्रिलर वेब सिरीज़ की तलाश में हैं, जो आपको बाँधे रख सके तो आपको ज़ी-फाईव पर -'मुर्शिद' वेबसिरीज़ देखनी चाहिए । के के मेनन के उत्कृष्ट अभिनय से सजी-सँवरी यह वेबसिरीज़ एक क्राइम थ्रिलर है, जो मुम्बई के अण्डरवर्ल्ड के अंधेरे पहलुओं को उजागर करती है और गहराई के साथ उन चुनौतियों की पड़ताल करती है जो अण्डरवर्ल्ड की अवस्थिति को समझने में सहायक होती है । यह थ्रिलर एक ऐसे अण्डरवर्ल्ड डॉन मुर्शिद पठान की तथाकथा है जो आतंक की इस दुनिया से बाहर आने के बाद भी दोबारा अपने छोटे बेटे जुनैद को एक अपराध के जाल में फँसने के बाद आपराधिक तरीकों को अपनाने के लिए मजबूर हो जाता है। दोस्त से दुश्मन बने फरीद के साथ, मुर्शिद इन दो अदम्य ताकतों के बीच शक्ति संघर्ष को दर्शाता है।

पिछली सदी के अंतिम दशक में मुम्बई (जिसे पहले बॉम्बे के नाम से जाना जाता था) में अक्सर गैंगवॉर होते थे। उस समय अखबारों में भी सबसे ज्यादा ध्यान अण्डरवर्ल्ड की लड़ाई पर ही दिया जाता था। श्रवण तिवारी द्वारा निर्देशित वेबसिरीज 'मुर्शिद' उस दौर के एक अपराधी पर आधारित है कहानी है जो अण्डरवर्ल्ड से भाग निकला था, लेकिन लम्बे समय के बाद नियति उसे वहीं वापस ले आती है। इस गैंगस्टर ड्रामा सीरीज की कहानी मुर्शिद (के के मेनन) के इर्द-गिर्द घूमती है जो अपने दौर का एक बहुत बड़ा माफिया डॉन है जो कुछ बदलाव के बाद समाजसेवा से जुड़ गया था । वह अपने बेटे को खतरे में देख और उसको मौत की धमकियां मिलने के बाद अपराध की दुनिया में वापस लौटता है। अराजक बॉम्बे अंडरवर्ल्ड और उसके गैंगस्टर वॉर पर आधारित ये नई वेबसिरीज आपको वर्ष 1980 और 1990 के दशक में ले जाती है, जब शहर अपराध से त्रस्त था और यहाँ तक कि पुलिस बल भी माफिया डॉन को पकड़ने में असफल रहती थी।

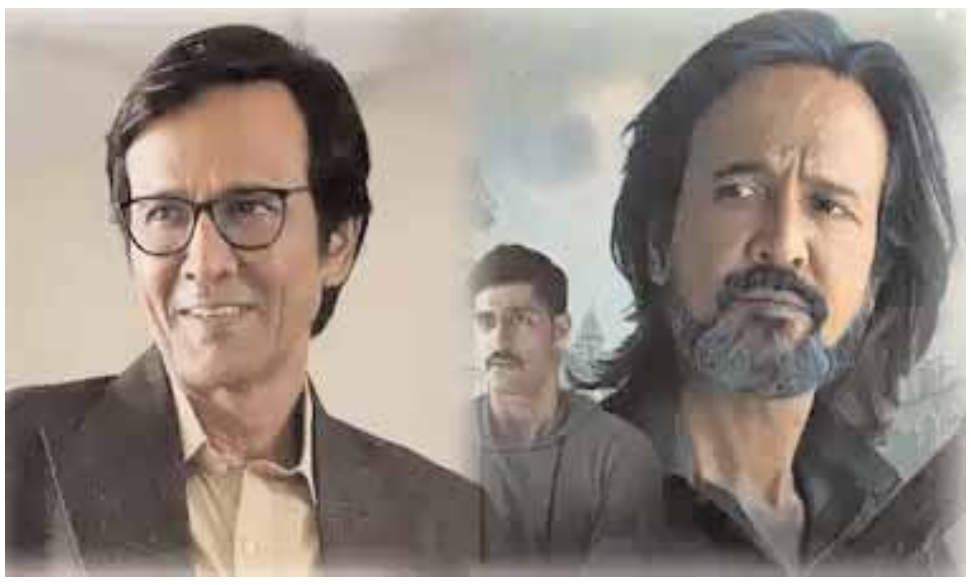

वेबसिरीज के लेखक और निर्देशक श्रवण तिवारी ने कहानी को सहज रुप से पेश करने के लिए कड़ी मेहनत की है। हर अभिनेता को को उसकी क्षमता के अनुरुप भूमिका दी है जिससे दर्शक उस चरित्र से जुड़ सके । इस गैंगस्टर ड्रामा वेबसिरीज में कई ऐतिहासिक घटनाओं पर फोकस किया गया है और कहानी अतीत और वर्तमान के ईर्द गिर्द घूमती है। इतना ही नहीं सिरीज में कई हैरान कर देने वाले ट्विस्ट एंड टर्न्स हैं जो आपको चौंकाते हैं । सिरीज़ में कई खतरनाक एक्शन दृष्य भी देखने को मिलेंगे, जिन्हें देख आपकी रूह काँप जाएगी। सिरीज़ 'मुर्शिद' के कुछ सीन आपको थोड़े खिंचे गये और उबाऊ भी लग सकते हैं, लेकिन हर एपीसोड खत्म होते ही दूसरा एपीसोड देखने का मन करे तो समझिये निर्देशक अपने मिशन में सफल रहा । इस सिरीज़ के संवाद और पँचलाइन्स तो वाकई कमाल की हैं ।

वेबसिरीज के लेखक और निर्देशक श्रवण तिवारी ने कहानी को सहज रुप से पेश करने के लिए कड़ी मेहनत की है। हर अभिनेता को को उसकी क्षमता के अनुरुप भूमिका दी है जिससे दर्शक उस चरित्र से जुड़ सके । इस गैंगस्टर ड्रामा वेबसिरीज में कई ऐतिहासिक घटनाओं पर फोकस किया गया है और कहानी अतीत और वर्तमान के ईर्द गिर्द घूमती है। इतना ही नहीं सिरीज में कई हैरान कर देने वाले ट्विस्ट एंड टर्न्स हैं जो आपको चौंकाते हैं । सिरीज़ में कई खतरनाक एक्शन दृष्य भी देखने को मिलेंगे, जिन्हें देख आपकी रूह काँप जाएगी। सिरीज़ 'मुर्शिद' के कुछ सीन आपको थोड़े खिंचे गये और उबाऊ भी लग सकते हैं, लेकिन हर एपीसोड खत्म होते ही दूसरा एपीसोड देखने का मन करे तो समझिये निर्देशक अपने मिशन में सफल रहा । इस सिरीज़ के संवाद और पँचलाइन्स तो वाकई कमाल की हैं ।

बैतूल के शिक्षा विभाग में अतिशेष की प्रक्रिया में सुनियोजित धांधली

बैतूल। प्रदेश के लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा आदेशित अतिशेष शिक्षकों के पद स्थापना के संबंधित आदेश के तहत बैतूल जिले के शिक्षा विभाग द्वारा की गई प्रक्रिया में सुनियोजित तरीके से धांधली किया गया है। परिणामस्वरूप इसमें कई विसंगतियां देखने को मिली रही है जिसके चलते इसमें आपत्तियां भी खूब हुई है । इस संबंध में शिक्षक संघ द्वारा सीधे तौर पर आपत्ति दर्ज कराते हुए इस प्रक्रिया को रोकने की मांग भी की है । फिर भी विभाग के जिम्मेदार अधिकारी एवं कर्मचारियों ने अपनी मनमानी करते हुए अतिशेष की प्रक्रिया के तहत पदस्थापना भी कर दी गई है । जिसके चलते हालात यह हो गई है कि जो शिक्षक अतिशेष में न है उन्हें भी अतिशेष साबित कर दिया गया है। ऐसे पीड़ित शिक्षक उच्चस्तरीय अधिकारियों के पास पहुंच रहे हैं, साथ ही ऐसे शिक्षक लोग जनप्रतिनिधियों के पास पहुंचकर न्याय की गुहार लगा रहे हैं। गौरतलब है कि बैतूल जिले में बैतूल, मुलताई आमला और प्रभात पट्टन ब्लाक शिक्षा विभाग के अंतर्गत है।

जानकारी के मुताबिक शिक्षा विभाग द्वारा प्राथमिक और मिडिल स्कूल के शिक्षकों के अतिशेष शिक्षकों की पदस्थापना गेंद्रेशन के अनुसार नहीं किए हैं । इस प्रक्रिया में सहायक संचालक ज्योति प्रहलादी की भूमिका सवालों के घेरे में आ चुका है ।बताया जा रहा है कि

सीनीयर शिक्षकों को अतिशेष बताकर बैतूल ब्लाक मे अपने चहेतों को पदस्थी आदेश दे दिया है । इस तरह सुंयोजित तरीके से सीनियर शिक्षकों को अतिशेष साबित कर 80 किलोमीटर दूर तक स्थानांतरित कर दिया है।

आपत्तियों के बाद बदली गई है सूची- मिली जानकारी के अनुसार शिक्षा विभाग द्वारा अतिशेष की की गई कार्रवाई के दौरान 373 शिक्षकों को अतिशेष बनाया गया था लेकिन उनके पास आपत्तियां आनी शुरू हुई तो 76 शिक्षकों को अतिशेष से मुक्त किया गया और 297 शिक्षकों को अतिशेष बनाकर उनकी प्रतिस्थापन आदर्श जारी किया गया जिसमें भी आपत्तियां आ रही है। लेकिन कोई सुनने वाला नहीं है लेकिन अतिशेष की सूची में जिन शिक्षकों को शामिल किया जाकर प्रताड़ित किया जा रहा है उन शिक्षकों द्वारा अब जनप्रतिनिधियों के पास न्याय की गुहार करने पहुंच रहे हैं। यहां बता दें कि पोर्टल पर कुछ शिक्षक की मौत हो गई हैं और कुछ रिटायर हो चुके हैं उसे भी पोर्टल से हटाया नहीं गया है जिसके कारण कुछ स्कूलों में अतिशेष में शिक्षकों को ला दिया गया है जो कि न्याय संगत नहीं है।

अभी भी है विसंगतियां

इस मामले में शिक्षक संघ के अध्यक्ष नारायण नगदे का आरोप है कि गत 27 अगस्त की रात 12रू00 बजे शिक्षकों को यह सूचना दी गई थी की अतिशेष से संबंधित 28 अगस्त को काउंसलिंग है । दिए गए आदेश के बाद जिन शिक्षकों को जानकारी मिली वह आपत्तियां लगा दी लेकिन विभाग की कर्ताधर्ताओं द्वारा अपने चाहतों को उनके मनचाही स्थान पर प्रतिस्थापन कर दिया। लेकिन अब इनकी शिकायत लोक शिक्षण संचालक के आयुक्त के पास की जा रही है उन्होंने उम्मीद जाहिर की है कि उन पीड़ित शिक्षकों को जरूर न्याय मिलेगा।

बैंकों और चौराहों में शौचालय पार्किंग की सुविधा नहीं , नागरिक परेशान

बैतूल/शाहपुर। नगर के सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया , नागरिक बैंक और बड़ चौक में शौचालय तथा पार्किंग व्यवस्था नही होने के कारण आसपास के व्यवसायी एवं नगरवासी खासा परेशान है । गौरतलब है कि बैंक वाले जहां इस ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं वही शाहपुर नगर परिषद द्वारा भी नजर अंदाज किया हुआ है।

नगर के व्यापारियों को कहना है कि सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया नगर परिषद के बीचो-बीच स्थित है जहां आसपास बहुत सारी दुकाने हैं लेकिन पार्किंग व्यवस्था नही होने से ग्राहक अपनी गाड़ियां इधर-उधर एवं रोड पर खड़ी करते हैं जिससे लोगों को आवाजाही में परेशानी का सामना करना पड़ता है। जबकि इस संदर्भ में कई बार पार्किंग व्यवस्था की शिकायत की गई। परंतु आज तक इस पर कोई कार्रवाई नहीं की गई ।और तो और नगर परिषद शाहपुर के द्वारा भी वहां पर पार्किंग व्यवस्था में सुधार नहीं किया गया ।पार्किंग और शौचालय की व्यवस्था न होने से नगरवासियों को आए दिन परेशान होना पड़ता है। शाहपुर नगरवासियों ने पार्किंग व्यवस्था में सुधार करने के लिए शासन से निवेदन किया है।

कृषि मंडी में मनाई बलराम जयंती

बैतूल/शाहपुर। भारतीय किसान संघ के द्वारा कृषि मंडी शाहपुर में बलराम भगवान की जयंती पूरे विधि विधान से पूजन अर्चन कर मनाई गई। कार्यक्रम में मौजूद भारतीय किसान संघ के तहसील प्रमुख राधेलाल घनकारे निवासी भयावाडी ने बताया, कि शनिवार उन्होंने

किसानो की प्रमुख मांगों को बलराम जयंती के पावन पर्व पर प्रधानमंत्री , मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री और बैतूल जिले के कलेक्टर के नाम तीन ज्ञापन अपनी अलग-अलग प्रमुख मांगों के साथ तहसील शाहपुर में दिए। इस अवसर पर उपस्थित वरिष्ठ किसान संघ के पदाधिकारीयों ने भगवान बलराम के जीवन पर प्रकाश डाला । उन्होंने किसानों को बताया कि भगवान बलराम का हल ही मुख्य निशानी है। इस अवसर पर भगवान बलराम के जयकारे लगाते हुए सभी किसान भाइयों ने अपना परिचय भी एक दूसरे के साथ साझा किया।

नर्मदापुरम पवित्र नगर है, तो 1 करोड़ लागत से नगर सीमा में मटन मार्केट क्यों..?

मटन मार्केट का विरोध शुरू..

नर्मदापुरम। हिन्दू समाज की धार्मिक आस्थाओं पर नगर पालिका द्वारा आघात किया जा रहा। विश्व हिन्दू परिषद मध्यभारत प्रांत सह मंत्री गोपाल सोनी ने यह कहते हुए बताया कि, इस 16 फरवरी को नर्मदा जयंती पर जिले के चारों विधायक और संतों तथा लाखों नर्मदा के भक्तों के समक्ष प्रदेश के मुख्यमंत्री डा मोहन यादव ने जनता की धार्मिक आस्था के अनुसार नर्मदापुरम नगर को पवित्र नगर घोषित किया गया था। और पवित्र नगर की सीमाओं में मांस और शराब की बिक्री शासन द्वारा प्रतिबंधित है। फिर नगरपालिका अधिकारी नगर सीमा के अन्दर मीट मार्केट के लिये जमीन का चयन कर रही है..? उन्होंने विश्व हिन्दू परिषद द्वारा क्षेत्रीय सांसद दर्शन सिंह चौधरी और स्थानीय विधायक डा सीताशरण शर्मा सहित जिला कलेक्टर से धर्म हित में आग्रह किया है कि विषय की गंभीरता एवं जन भावनाओं के सम्मान में तत्काल प्रशासनिक अधिकारीयों से बात कर मटन मार्केट का स्थान परिवर्तन करवाया जाये। अन्यथा इस अन्याय के लिए संत समाज विश्व हिन्दू परिषद एवं नर्मदा भक्तों को शासन के इस नीति के विरोध आन्दोलन करने को विवश होना पड़ेगा।

पालकी में विराजित होकर निकले भगवान गणेश जी,रास्ते भर पुष्प वर्षा से हुआ स्वागत

धार । महाराष्ट्र ब्राह्मण समाज द्वारा दस दिवसीय गणेश उत्सव के अंतर्गत आज दोपहर में नानेवाडी स्थित समाज भवन से गणेश प्रतिमा को विराजित कर शहर के आनंद चौपाटी धानमंडी भाजी बाजार,पट्ठा चौपाटी ,नालछा दरवाजा,पो चौपाटी होते हुए श्रीगणेश पालकी यात्रा नानेवाड़ी स्तिथ समाज भवन में पहुंची जहां वैदिक मंत्रोचार एवम पूजन के साथ विघ्नहर्ता भगवान गणेश जी की

स्थापना की गई । पालकी यात्रा में समाज के पुरुषों, महिलाओं और युवतियों ने आकर्षक परिधानों से सुसज्जित होकर निकले बैंड,ढोल नगाड़ों की थाप पर महिलाओं और युवतियों ने आकर्षक नृत्य किया । पालकी यात्रा का रास्ते पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। इसके साथ ही गणेश उत्सव के तहत दस दिवसीय सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रम भी शुरू हो गए। उत्सव समिति अध्यक्ष चंद्र शेखर देवलालिकर ने बताया कि समाज भवन में नित्य पूजन आरती के साथ प्रसाद वितरण किया जावेगा तथा प्रतिदिन सामाजिक धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन होगा।

केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री ठाकुर ने गणपति घाट पहुंचकर दुर्घटना रोकने हेतु अधिकारियों को दिए सख्त निर्देश

गणेशघाट के समीप देश का नंबर वन 9 किलोमीटर का टर्मिनल बनेगा- सावित्री ठाकुर

धार। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर ने शनिवार को राउ-खलघाट मार्ग पर स्थित गणपति घाट का निरीक्षण किया, जहां आए दिन सड़क दुर्घटनाएं होती रहती हैं। इस गंभीर समस्या को देखते हुए उन्होंने नेशनल हाईवे ऑथोरिटी ऑफ इंडिया (NHAI) के अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए कि दुर्घटनाओं के प्रमुख स्थानों को तत्काल चिन्हित किया जाए।

भविष्य में ऐसे हादसों पर रोक लगाने के लिए प्रभावी कार्ययोजना तैयार करने के आदेश दिए, ताकि यहां होने वाली दुर्घटनाओं को पूरी तरह रोका जा सके और सड़क सुरक्षा को सुनिश्चित किया जा सके, इसके साथ ही श्रीमती ठाकुर ने यहाँ निर्माणाधीन बायपास (NH52) का निरीक्षण भी किया। केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए कहा कि पूर्व में भी मैंने केंद्रीय मंत्री को यह बात रखी थी अब यह घाट दो माह में देश का नंबर वन लगभग 9 किलोमीटर का टर्मिनल बनकर तैयार होगा वर्तमान में 6 किलोमीटर का काम पूरा हो चुका है इससे यह जो दुर्घटनाएं हो रही है इससे लोगों को निजात मिलेगी।

प्रभारी मंत्री के आगमन के साथ ही सभी समस्याओं पर सुधार होगा : जिलाध्यक्ष

नर्मदापुरम। मुख्यालय की भाजपा शासित नगर पालिका में पहले नपाध्यक्ष को हटाने के लिए अविश्वास प्रस्ताव का बवंडर उठा और मुख्य नगरपालिका अधिकारी को हटाने की मुहिम छिड़ गई। भाजपा जिला कोषाध्यक्ष ने मुख्य नगरपालिका अधिकारी को यहां से हटाने के लिए जिसमें प्रभारी मंत्री राकेश सिंह को पत्र लिखा, नपाध्यक्ष के अविश्वास प्रस्ताव के मसले पर हालिया प्रभारी मंत्री से भोपाल जाकर विधायक सहित पार्षद मिल कर आए थे कि अब मुख्य नगरपालिका अधिकारी को हटाने वाले पत्र ने भाजपा संगठन के लिए मुसीबत खड़ी कर दी। वह भी ऐसे समय जब जिले में संगठन को दो लाख नए सदस्य बनाने का लक्ष्य उपर से दिया गया है। एक दिन पहले पार्टी जिला कार्यालय में सांसद दर्शन सिंह चौधरी, राज्यसभा सांसद माया नारोलिया, जिला संयोजक सदस्यता प्रभारी भरत सिंह राजपूत, भाजपा जिला अध्यक्ष माधवदास अग्रवाल, विधायक प्रेमशंकर वर्मा, विधायक प्रतिनिधि महेंद्र यादव, मंडल अध्यक्ष रोहित गौर सहित अन्य पदाधिकारियों की मौजूदगी में सदस्यता अभियान को लेकर रखी पत्रकार वार्ता के पश्चात पत्रकार ने यहां के अधिकारियों की कार्य प्रणाली को लेकर सभी महत्वपूर्ण सवाल उठाए। की मायनों में अव्यवस्थित नगर के हालातों के लिए जिम्मेदार बाहर से आए इन अधिकारियों को बताया गया इससे न केवल कर्मचारी, नागरिक, व्यापारी वर्ग तक खासे परेशान हैं। ऐसी स्थिति में पार्टी सदस्यता अभियान का लक्ष्य पूरा कैसे कर पायेंगी पूछा गया। इसका जवाब जिम्मेदार पदाधिकारी नहीं दे पाए बल्कि एक दूसरे का मुंह देखकर जबाव टाला गया। मुख्य नगरपालिका अधिकारी की कार्य प्रणाली से नगर में अव्यवस्था फैल रही, धार्मिक नगर में मांस की दुकान बनाने के लिए जमीन खोजने की वकालत की जा रही इससे पार्टी की पहचान खराब हो रही है। फिर अपनी मूंग बेचने में किसान किस हद तक परेशान हुआ हर स्तर पर उससे पैसे लिए गए और अब उसे भुगतान नहीं मिल रहा। ऐसे में संगठन का भरोसा आम जनता का कैसे रहेगा..? पार्टी जिलाध्यक्ष माधवदास अग्रवाल ने यहां बात साफ कर दी कहा हमने सभी बातों को उचित प्लेटफार्म पर पहले ही रख दिया है और परिणाम जल्द ही सामने होंगे। जो सहयोग से शहर का विकास होने की बात कहते हैं। जबकि अधिकरी विधायक की बात तक नहीं सुन रहे, न्यायालय कलेक्टर तक को फटकार रही। पूरे नगर में शराब शबाब और कबाब का आधिपत्य होते जा रहा। जनसुनवाई में अघोषित रूप से मीडिया पर प्रतिबंध का विषय भी रखा गया। जिलाध्यक्ष श्री अग्रवाल द्वारा कहा गया कि प्रभारी मंत्री आगमन के साथ ही समस्याओं पर सुधार का काम होगा। भाजपा संगठन सोशल मीडिया पर व्याप्त समस्याओं को भी देख रहा है और उचित प्लेटफार्म पर बात पहुंचाई जा रही है।

भाजपा कार्यालय पर दस दिवसीय गणेश महोत्सव का आयोजन, कमल के फूल पर विराजित गणेश प्रतिमा आकर्षण का केंद्र

प्रतिदिन अलग-अलग मोर्चे और प्रकोष्ठ करेंगे बप्पा की महाआरती

धार। भारतीय जनता पार्टी द्वारा दस दिवसीय 'श्री गणेश महोत्सव' मनाया जा रहा हैं, भाजपा धार नगर मंडल अध्यक्ष विपिन राठौर व नितेश अग्रवाल ने संयुक्त रुप से बताया कि गणेश चतुर्थी पर भाजपा जिला कार्यालय पर कमल के फूल पर विराजित भगवान गणेश जी की आकर्षक प्रतिमा की स्थापना के अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेड़ा भाजपा जिला उपाध्यक्ष विश्वास पांडे विपिन राठौर श्याम नायक जिला कार्यालय मंत्री जगदीश जाट भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा,विवेक गौड़ ने पूजन कर आयोजन की शुरुआत की गई। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि इस दस दिवसीय महोत्सव में प्रतिदिन

सायं 7 बजे अलग-अलग मोर्चे और प्रकोष्ठों द्वारा महाआरती की जाएगी जिसमें क्रमशः भाजपा युवा मोर्चा, पिछड़ा वर्ग मोर्चा, अजजा मोर्चा, महिला मोर्चा, किसान मोर्चा, अजा मोर्चा, अल्पसंख्यक मोर्चा, विभिन्न प्रकोष्ठ और विभाग के पदाधिकारियों सहित जनप्रतिनिधि और वरिष्ठ नेतागण इत्यादि सम्मिलित होंगे । इस अवसर पर राजेश डाबी अनिल गहलोत राकेश दुर्गेश्वर गौरव जाट राजेंद्र राठौड़ पर्वत सूर्यवंशी कमलेश बिजवा विशाल राठौर अंकित जैन कुंदन भूरिया उपस्थित रहे । इस आयोजन का व्यवस्थापक अनिल गेहलोत, हरीश आर्य, राजेन्द्र राठौर, महेश बोडाने, शांतिलाल शर्मा और देवांग पंवार को बनाया गया । जानकारी भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने दी ।

सांवलीगढ़ के वन कर्मियों ने निमिया में दी दबिश, एक ट्राली अर्ध निर्मित फर्नीचर समेत चर्पट ,हाथ आरा,कटर मशीन की जब्त

इतनी बड़ी कार्यवाही में रेंजर नहीं हुए शामिल,फोफलिया रेस्ट हाउस में बैठकर मक्का का लिया मजा

बैतूल। पश्चिम वन मण्डल की सांवलीगढ़ रेंज के निमिया गांव में वनकर्मियों ने आज एक घर पर दबिश देकर एक ट्राली अवैध सागौन से अर्द्ध निर्मित फर्नीचर ओर ओजार जब्त किए है सुबह की गई कार्यवाही में जिम्मेदार वनकर्मियोने शाम 5 बजे तक न तो मौका पंचनामा बनाया था और ना ही जब्त की गई अवैध सागौन का नाप जोख कर पाए थे। दहशत में आरोपी के घर से जब्त सागौन काष्ठ को चुनाहजुरी नाके पर रख कर आगे की कार्यवाही की जारही थी। मिली जानकारी के मुताबिक आज सुबह सांवली गढ़ रेंज की चुनाहजुरी सर्किल के निमिया गांव में कालूराम यादव के मकान पर डिप्टी रेंजर संजय जैन की अगुवाई में वनकर्मियों ने ग्रमीण

कालूराम के घर दबिश दी ।घर पर दबिश को भनक लगते ही कालूराम मौके से नदारद हो गए वहीं घर की महिलाओं की मौजूदगी में सर्च किया गया जिसमें अर्ध निर्मित 2 खिड़की 2 चौखट ओर बड़ी मात्रा में ढाई मीटर की चर्पट के साथ हाथ आरा,कटर मशीन,शिकंजा ओर ओजार जब्त किए गए है। इस पूरी कार्यवाही में डिप्टी रेंजर संजय जैन ने ना तो मौका पंचनामा बनाया और अवैध सागौन लकड़ी का कोई नाप जोख किया ।जब्त की गई अवैध सागौन काष्ठ को जब्त कर चुना हजूरी नाके पर लाकर यंहा शाम को नाप जोख की गई।

5 मीटर का लट्ठा आरोपी के घर ही छोड़ा

सूचना के बाद अधिकारियों ने डिप्टी रेंजर संजय जैन की अगुवाई में टीम को भेजा था डिप्टी रेंजर श्री जैन ने एक 5 मीटर का लट्ठा वही छोड़ दिया उसकी कोई जब्ती नही बनाई गई ।श्री जैन आरोपी से लगातार संपर्क में थे और उनका उद्देश्य क्या था उनके मोबाइल की कॉल डिटेल की भी जांच होनी चाहिए आखिर किस मंशा से यह पूरी कार्यवाही की गयी ।

कार्यवाही से रेंजरों ने बनाई दूरी

पश्चिम वन मंडल के डीएफओ वरुण यादव को मिली सूचना के बाद सांवलीगढ़ ओर चिचोली रेंज की एक संयुक्त टीम बनाकर निमिया दबिश के लिए भेजी गई थी लेकिन उपरोक्त कार्यवाही में शामिल दोनों ही रेंजर मौके पर नही गए उन्होंने डिप्टी रेंजर संजय जैन की अगुवाई में वनकर्मियों को जब्ती की कार्यवाही के लिए भेज कर रेंजर द्वय फोफलिया के रेस्ट हाउस में बैठकर मक्का का आनन्द लेते रहे ।

इनका कहना है

मुझे कल रात सूचना मिली थी जिस पर टीम गठित कर दबिश के लिए भेजी गई थी ।आपके द्वारा मुझे बताया गया है मैं दोबारा जांच करवाता हूँ।

- वरुण यादव, डीएफओ,पश्चिम वन मंडल, बैतूल

एसडीआरएफ की टीम ने ऑपरेशन अपने हाथों में ले लिया पर पत्थर की चट्टान पर बैठी आराम फरमाती

ग्रामीणों ने किया रेस्क्यू, टवेरा वाहन को खोजा

बैतूल। जिले के भीमपुर ब्लॉक में रहने वाले कुछ ग्रामीणों ने एक घटना में अपनी काबलियत स्टेट डिजास्टर फोर्स के सामने साबित कर दी। पिछले एक सप्ताह से नदी में गिरे टवेरा वाहन को जब फोर्स के जवान नहीं ढूंढ पाए तो ग्रामीणों ने इस रेस्क्यू ऑपरेशन को अपने हाथों में ले लिया और नदी में गिरे टवेरा वाहन को ढूंढ निकाला। वहीं चालक को अब ढूंढने का प्रयास किया जा रहा है।

दरअसल भीमपुर ब्लॉक के ग्राम मोहटा के पास पिछले रविवार खंडू नदी में टवेरा समेत चालक के बह जाने की घटना सामने आई थी। सूचना मिलने के बाद एसडीआरएफ की टीम ने मौके पर पहुंच कर तलाशी अभियान शुरू किया लेकिन गुरुवार तक टीम ना ही वाहन ढूंढ पाई और ना ही चालक का शव। प्राप्त जानकारी के मुताबिक शुक्रवार ग्रामीणों ने ऑपरेशन अपने हाथों में ले लिया और एसडीआरएफ की टीम पत्थर की चट्टान पर बैठी आराम फरमाती रही।

बताया जा रहा है कि कुछ ही घण्टो के अथक प्रयास के बाद ग्रामीणों ने टवेरा वाहन की खोज कर ली, लेकिन लापता युवक का अभी तक कोई सुराग नहीं मिल पाया है। जानकारी मिली है कि ग्राम दामजीपुरा निवासी अनिल मावस्कर (42) रविवार की रात टिटवी से अपने गांव दामजीपुरा लौट रहा था। जब वह अपने घर नहीं पहुंचा तो परिजनों ने उसकी

तलाश शुरू की थी। मंगलवार को पुलिस थाने में उसकी गुमशुदगी भी दर्ज करा दी गई थी। एसडीआरएफ की टीम मौके पर तो पहुंची लेकिन अंजाम तक नहीं पहुंच सकी। जबकि टीम का हर मेंबर इस तरह के रेस्क्यू ऑपरेशन के लिए पूर्ण रूप से प्रशिक्षित होता है। लिहाजा गुमशुदा और वाहन की बरामदगी को लेकर खुद ग्रामीणों ने मोर्चा संभाला और नदी में गोते लगाकर गहरे पानी में फंसी टवेरा को ढूंढ निकाला। बताया जा रहा है कि ग्रामीणों ने गहरे पानी मे ही रहकर रस्सी बांधकर वाहन को खींचकर नदी से निकालने का प्रयास किया लेकिन चट्टानों के बीच फंस जाने से शुक्रवार शाम तक टवेरा को बाहर नहीं निकाला जा सका था।इधर पीड़ित परिजनों का कहना है की पूरा एक सप्ताह होने को आया है, लेकिन अनिल का कहीं पता नहीं चल पाया है। जिस तरह से एसडीआरएफ की टीम की मौजूदगी के बावजूद ग्रामीणों ने उफनती नदी के गहरे पानी मे पहुंचकर टवेरा वाहन को तलाश किया था। उसके बाद टीम मैनेजमेंट पर सवाल खड़े हो रहे हैं। बाढ़ आपदा की ऐसी घटनाओं से निपटने के लिए ही टीम मेम्बरों को पूर्ण रूप से प्रशिक्षित किया गया है। कहीं से भी सूचना मिलने के बाद टीम को तत्काल घटनास्थल पर पहुंचकर तत्काल रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किए जाने के निर्देश भी दिए गए हैं। घटना स्थल पर किसी प्रकार की कोई समस्या निर्मित ना हो इसके लिए टीम के पास सर्च लाइट सहित बहते पानी मे चलने वाली नौकाओं सहित तमाम संसाधन उपलब्ध कराए गए हैं, लेकिन इस मामले में टीम पूरी तरह फेल साबित नजर आई है। ग्रामीणों ने सिर्फ गोते लगाकर ही टवेरा वाहन को खोज निकाला बल्कि गहरे पानी मे फंसी टवेरा में रस्सी बांधकर उसे बाहर तक खींच लिया। जबकि एसडीआरएफ की टीम में भी प्रशिक्षित गोताखोर मौजूद हैं। आखिर अपने फर्ज को अंजाम देने की कोशिश क्यों नहीं की गई।

आमिर ने कई को आसमान पर पहुंचाया

आमिर खान ने कहा कि अब वे फिल्मों में एक्टिंग नहीं करेंगे, बल्कि प्रोड्यूसर के रूप में काम करना चाहते हैं। वे अपने प्रोडक्शन हाउस 'आमिर खान प्रोडक्शंस' के तहत जबरदस्त स्टोरी पर काम करना चाहते हैं। 'लाल सिंह चड्ढा' के फ्लॉप होने के बाद एक्टर आमिर खान ने फिल्मों से दूरी बना ली। आमिर खान ने खुद एक इंटरव्यू में भी स्वीकार किया कि अब उन्होंने एक्टिंग से संन्यास ले लिया है। लेकिन, आमिर को हमेशा इसलिए याद किया जाएगा कि उनकी छोड़ी गई फिल्मों से ही कई हीरो हिट हुए।

बॉलीवुड के मिस्टर परफेक्शनिस्ट आमिर खान ने अपने करियर में एक से बढ़कर एक ब्लॉकबस्टर फिल्में दी है। आमिर खान आखिरी बार फिल्म 'लाल सिंह चड्ढा' में नजर आए थे। यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह से फ्लॉप साबित हुई। इसके बाद आमिर खान ने एक्टिंग से कुछ समय के लिए दूरी बना ली। दरअसल, आमिर खान ने खुद अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली, क्योंकि उन्होंने फ़िल्में छोड़ी, वो बाद में

बॉक्स ऑफिस पर ब्लॉकबस्टर साबित हुई। आमिर खान द्वारा ठुकराई इन फिल्मों से शाहरुख खान और सलमान खान का स्टारडम आसमान पर पहुंच गया।

शाहरुख खान की फिल्म 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' आज भी लोगों के जेहन में बसी है। इस फिल्म ने शाहरुख खान की किस्मत चमका दी थी। लेकिन, यह फिल्म पहले आमिर खान को ऑफर हुई थी। सलमान खान की

फिल्म 'हम आपके हैं कौन' में परिवार और प्यार की जबरदस्त बॉन्डिंग को दिखाया गया। सलमान की इस फिल्म ने भी बॉक्स ऑफिस पर छप्पर फाड़ कमाई की थी। लेकिन, सलमान से पहले ये फिल्म भी आमिर खान को

ऑफर हुई थी। संजय दत्त, माधुरी दीक्षित और सलमान खान की फिल्म 'साजन' भी बॉक्स ऑफिस पर ब्लॉकबस्टर साबित हुई थी। लेकिन इस फिल्म में भी आमिर खान ने काम करने से इनकार कर दिया था।

शाहरुख खान, माधुरी दीक्षित और करिश्मा कपूर के लव ट्रायंगल पर बनी फिल्म 'दिल तो पागल है' के लिए पहले आमिर खान को अप्रोच किया गया था। लेकिन बाद में ये फिल्म भी फ्लॉप साबित हुई। सलमान खान की फिल्म 'बजरंगी भाईजान' भी पहले आमिर खान को ऑफर हुई थी। लेकिन आमिर ने इस फिल्म को ठोकर मार दी और बाद में 'बजरंगी भाईजान' ने सलमान खान की किस्मत चमका दी थी। शाहरुख खान और ऐश्वर्या राय स्टारर फिल्म 'मोहब्बतें' बॉक्स ऑफिस पर ब्लॉकबस्टर साबित हुई थी। इस फिल्म के लिए मेकर्स ने पहले आमिर खान को अप्रोच किया था लेकिन आमिर ने ये फिल्म रिजेक्ट कर दी थी।

रियल बॉक्स

फिल्मों में भी अछूत रहा समाज का ये वर्ग

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक हैं।

समाज के उपेक्षित और पिछड़े वर्ग को सिनेमा के परदे पर उतारने में हमारे फिल्मकार कुछ ज्यादा ही पिछड़े नजर आते हैं। यदि उंगलियों पर गिने जाने लायक चंद फिल्मों को छोड़ दिया जाए, तो ज्यादातर हिंदी फिल्मों में समाज के इस वर्ग का सतही चित्रण कर पर्दे पर भी इन्हें उपेक्षित रखा। देश को जाति प्रथा तथा जातिगत भेदभाव को समाप्त करने के लिए संविधान में कई प्रावधान रखे। अलग-अलग सरकारों ने भी समाज के पिछड़े और दलित वर्ग को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए अपनी अपनी तरह से प्रयास भी किए। इसके बावजूद सामाजिक असमानता पूरी तरह समाप्त नहीं हुई। समाज की इसी असमानता को फिल्मों में भी समय समय पर फिल्मकारों ने अपनी फिल्मों का विषय बनाया है। 'अछूत कन्या' से शुरू हुआ यह सिलसिला अभी भी कायम है। आजादी से पहले यानी फिल्मों के शैशवकाल से ही हो गई थी। तब 1936 में अशोक कुमार और देविका रानी की फिल्म 'अछूत कन्या' प्रदर्शित हुई। यह फिल्म अपने विषय से ज्यादा अशोक कुमार और देविका रानी की जोड़ी के कारण सफलता की सीढ़ी चढ़ी थी।

इसके बाद 1946 में चेतन आनंद ने 'नीचा नगर' नाम से फिल्म बनाई, जिसे कान फिल्म फेस्टिल के बेस्ट फिल्म अवार्ड (पाम डि ओर) से नवाजा गया था। 'नीचा नगर' गोर्की की 1902 की रचना 'द लोअर डेप्थ्स' पर आधारित है। इस फिल्म में गरीबों और समाज के दलित वर्ग के एक इलाके में आने वाली साफ पानी की पाइप लाइन को वहां का एक दबंग बंद कर देता है। इससे बस्ती में पानी को लेकर हाहाकार मच जाता है और वहां के लोग गंदा पानी पीकर बीमार होकर मरने लगते हैं। 1959 में प्रदर्शित बिमल राय की फिल्म 'सुजाता' समाज की उस गलत मानसिकता को दिखाने की कोशिश करती है, जो समाज को खोखला कर रहा है। फिल्म उस मानसिकता को भी गलत साबित करती है। ये फिल्म समाज में एक संदेश देती है कि छुआछूत आपका भ्रम है। भगवान ने सबको एक जैसा ही बनाया है। फिल्म अंतरजातीय विवाह के लिए भी लोगों को प्रेरित करता है। फिल्म में नूतन ने गरीब अनाथ और पिछड़ी जाति की युवती की भूमिका पूरी शिद्दत के साथ निभाई थी। इसके बाद लम्बे अरसे तक फ़िल्मकार इस विषय को भूल गए।

1973 में प्रदर्शित निर्देशक श्याम बेनेगल की फिल्म 'अंकुर' में एक पूरे वर्ग के साथ हो रहे भेदभाव का मार्मिक रूप से चित्रण किया है। श्याम बेनेगल की ये पहली फीचर फिल्म थी जिसने तीन राष्ट्रीय पुरस्कार जीते। श्याम बेनेगल के निर्देशन में बनी इस फिल्म में शबाना ने एक शादी-शुदा नौकरानी लक्ष्मी का किरदार निभाया है। लक्ष्मी को गांव में अपने जमींदार पिता का व्यापार आगे बढ़ाने आए कॉलेज के एक छात्र सूर्या से प्रेम हो जाता है। लक्ष्मी गर्भवती हो जाती है, ऐसे समय में सूर्या उसका साथ छोड़ देता है। 1984 में आई दामुल बिहार के गरीब ग्रामीणों के प्रयास के मुद्दे को उजागर करती है। डायरेक्टर प्रकाश झा की फिल्म 'दामुल' एक ऐसी पिछड़ी जाति के मजदूर की कहानी है, जिसको अपने भू-स्वामी के लिए चोरी करने के लिए मजबूर किया जाता है। फिल्म में अन्नू कपूर, श्रीला मजूमदार, मनोहर सिंह, दीप्ति नवल और रंजन कामथ मुख्य भूमिका में है।

आश्चर्य इस बात का कि सदी बदलने के बाद भी उपेक्षित वर्ग से भेदभाव कम नहीं हुआ। इसलिए फिल्मों में 21 वीं सदी में भी सामाजिक असमानता और भेदभाव का विषय छाया रहा। साल 2011 में रिलीज हुई 'आरक्षण' ऐसी फिल्म है, जो देश में व्याप्त आरक्षण के गंभीर मुद्दे पर बनाई गई थी। फिल्म में अमिताभ बच्चन, सैफ अली खान, दीपिका पादुकोण और मनोज बाजपेयी मुख्य भूमिका में नजर आए। फिल्म का निर्देशन प्रकाश झा ने

किया। बड़े सितारों और अच्छे निर्देशन के बाद फिल्म बॉक्स ऑफिस पर कोई कमाल नहीं दिखा सकी। निर्माता निर्देशक संजीव जायसवाल की 2012 में प्रदर्शित फिल्म 'शूद्र - द राइजिंग' देश के उन पच्चीस करोड़ लोगों की कहानी है, जो सदियों से जुल्म सह रहे हैं। इस फिल्म में दलितों को उनके मूल अधिकारों से वंचित किए जाने की समस्या को प्रभावी ढंग से उठाया गया। लेकिन, यह फिल्म भी सफलता से वंचित रही।

निर्देशक नीरज घेवान की फिल्म 'मसान' 2015 को रिलीज हुई थी। इसकी कहानी बनारस के घाटों पर रची-बसी है। इस फिल्म में एक छोटे से कस्बे के चार लोगों की कहानियां दिखाई गई है। उन्हीं में से एक कहानी श्मशान घाट में काम करने वाले दीपक (विक्की कौशल) की है, जो निचले वर्ग यानी डोम जाति से ताल्लुक रखता है। दीपक को मृत शरीर जलाने और क्रिया कर्म के काम से नफरत है और इससे छुटकारा पाना चाहता है। इस फिल्म के जरिए सभी बाधाओं के खिलाफ आशा की कहानी दिखाई गई है। फिल्म में विक्की कौशल, रिचा चड्ढा, संजय मिश्रा, श्वेता त्रिपाठी और विनीत कुमार मुख्य भूमिका में थे। 2016 में रिलीज हुई मराठी फिल्म 'सैराट' ने बॉक्स ऑफिस पर तगड़ी कमाई की थी। 4 करोड़ के बजट में बनी इस फिल्म ने ओवरऑल करीब 110 करोड़ रुपए से ज्यादा की कमाई की थी। इस फिल्म में दलितों से नाइंसाफी की कहानी को प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया गया था। इसके एक साल बाद 2017 में प्रदर्शित अनुराग कश्यप की फिल्म 'मुक्काबाज' जातिवाद की जड़ों को खेलकूद की प्रतियोगिता तक दिखाया गया। इस फिल्म में एक दलित बॉक्सर श्रवण कुमार (विनीत श्रीनेट) की कहानी दिखाई गई, जिसे हर रोज अपने कोच और स्थानीय बॉक्सिंग फेडरेशन संचालक के हाथों अपमानित होना पड़ता है। लेकिन, श्रवण कुमार अपनी काबिलियत के दम पर बॉक्सिंग में कामयाबी हासिल करता है। अच्छे विषय और बेहतर निर्देशन के बावजूद दर्शकों ने इसे नकार दिया था।

2021 में आई फिल्म 'जय भीम' इरुलुर आदिवासी समुदाय और उनके साथ सालों से हो रही बर्बरता की कहानी दिखाती है। यह फिल्म 1993 में तमिलनाडु में हुई सच्ची घटना पर आधारित है। जिसमें जस्टिस के चंद्रू का लड़ा गया केस दर्शाया गया है। जय भीम में पुलिस के अत्याचारों को भी दिखाया गया है।.यह फिल्म सामाजिक व्यवस्था पर भी तंज कसती है। इस फिल्म में सूर्या ने वकील चंद्रू और लिजोमोल जोस ने सेनगानी के किरदार को शानदार तरीके से निभाया। वहीं निर्देशक टी जे ज्ञानवेल ने कोर्टरूम ड्रामा को भी काफी अच्छी तरीके से फिल्माया है। फिल्म जय भीम में मणिकंदन, राजिशा विजयन, प्रकाश राज और राव रमेश जैसे कलाकार मुख्य किरदार में नजर आए हैं। दो साल पहले 2022 में प्रदर्शित 'फ्रैंडी' में जब्या नाम का एक लड़का कथित नीची जाति से संबंध रखता है। इसलिए वो और उसका परिवार गांव के बाहर रहता है। जब्या के पिता छोटे मोटे काम करते हैं, जिसमें सुअर को पकड़ना भी शामिल है। वहीं जब्या सबसे अपनी पहचान छुपाता है। वो अपने स्कूल में पढ़ने वाली एक ऊंची जाति की लड़की शालू से एकतरफा प्यार करने लगता है। फिल्म के आखिरी में समाज के उन लोगों की सोच पर पत्थर फेंक कर मारा जाता है, जो आज भी दलितों का शोषण करते हैं और छोटी सोच रखते हैं।

फिल्म अभिनेताओं में ब्राह्मण कुल में पैदा मिथुन चक्रवर्ती ऐसे अभिनेता हैं, जिन्होंने परदे पर सबसे ज्यादा बार आदिवासी, शूद्र और अछूत बताया गया। अपनी पहली ही फिल्म 'मृगया' में मिथुन ने एक आदिवासी युवा का अभिनय इतने सशक्त तरीके से निभाया था कि उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। इसके बाद उन्होंने बोनी कपूर की फिल्म 'हम पांच' में उसी तरह की भूमिका कर नाम कमाया। उनके इस स्वरूप को देखकर राकेश रोशन ने उन्हें 'जाग उठा इन्सान' में एक बार फिर अछूत बनाया, लेकिन यह फिल्म चल न सकी। अछूत और उपेक्षित वर्ग को फिल्म में सहायक विषय बना मीना कुमार और राजकपूर की फिल्म 'चार दिल चार राहें' का निर्माण ख्वाजा अहमद अब्बास ने किया। लेकिन, यह फिल्म चल न सकी। सावन कुमार ने काला रंग पोत कर गोरे डॉक्टर श्रीराम लागू को 'सौतन' में हरिजन बनाने की हास्यास्पद कोशिश की। फिल्म अपने विषय के बजाए चाय पर बुलाया है जैसे गीत के कारण ज्यादा लोकप्रिय हुई। यदि सुजाता, चक्र, पार और 'अर्जुन' को छोड़ दिया जाए, तो आदिवासियों और अनुसूचित जाति जनजातियों पर बनी ज्यादातर फिल्में सतही साबित हुई हैं और सिनेमा में भी उपेक्षित वर्ग उपेक्षित ही रहा है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

'धूम 4' में विलेन कौन रणबीर या शाहरुख़!

आदित्य चोपड़ा की आने वाली फिल्म 'धूम 4' को लेकर काफी एक्साइटमेंट है। 2004 में रिलीज हुई एक्शन थ्रिलर फिल्म 'धूम' बॉक्स ऑफिस पर ब्लॉकबस्टर साबित हुई थी। इस फिल्म के पहले पार्ट में जहां एक्टर जॉन अब्राहम ने विलेन का रोल निभाया था, वहीं दूसरे पार्ट में ऋतिक रोशन चोर बने थे। 'धूम 3' में एक्टर आमिर खान ने डबल रोल किया था और विलेन का रोल निभाकर सबको चौंका दिया था। अब दर्शक यह जानने को बेताब हैं कि 'धूम 4' में आखिर विलेन का रोल कौन-सा स्टार निभाएगा।

बीते दिनों कुछ रिपोर्ट्स में दावा

किया गया था कि वाईआरएफ के बैनर तले बन रही 'धूम 4' में विलेन का किरदार एक्टर शाहरुख खान निभाएंगे। वहीं अब इस फिल्म से जुड़ा एक बड़ा अपडेट सामने आया। 'धूम 4' के लिए मेकर्स शाहरुख खान के साथ-साथ रणबीर कपूर को भी विलेन के रोल में कास्ट करने के लिए विचार कर रहे हैं। वहीं इस फिल्म में जहां कुछ दर्शक शाहरुख खान तो वहीं कुछ रणबीर कपूर को विलेन के रोल में देखने के लिए एक्साइटेड हैं।

'एक्स' हैंडल पर फैंस लगातार रिएक्ट कर रहे हैं कि आखिर वह कौन-से स्टार को 'धूम 4' में विलेन के रोल में देखना चाहते हैं। एक यूजर ने लिखा, 'यशराज फिल्म्स प्रभास और रणबीर कपूर को धूम फ्रेंचाइजी में कास्ट करने की प्लानिंग कर रहे हैं। इस फिल्म में अयान मुखर्जी डायरेक्ट करेंगे, फिलहाल फिल्म की स्क्रिप्ट पर काम चल रहा है।

सलमान को शेरा के अलावा कोई मैनेज नहीं कर सकता

शेरा पिछले 29 साल से एक्टर की सिक्योरिटी की जिम्मेदारी निभा रहे हैं। एक चैनल से बातचीत में शेरा ने कहा कि मेरे अलावा दूसरा कोई भी सलमान खान को इतने अच्छे से मैनेज नहीं कर सकता है। वे बहुत सारे बॉडीगार्ड बदल लेते हैं, लेकिन मैं इतने सालों तक उनके साथ रहा हूं। सलमान खान के बॉडीगार्ड शेरा ने खुलासा किया है कि सोहेल खान के कहने पर उन्होंने एक्टर के लिए काम करना शुरू किया था। एक स्टेज शो के दौरान शेरा सलमान खान से मिले थे। शेरा ने कहा कि सलमान खान से मेरी पहली मुलाकात सोहेल खान के जरिए एक शो के दौरान हुई थी। सोहेल उनके लिए सिक्योरिटी चाहते थे, क्योंकि एक स्टेज शो में कुछ दिक्कत हो गई थी।

उस समय मैं पगड़ी पहनता था। सोहेल भाई ने मुझे

देखा तो कहा कि आप सलमान भाई के साथ क्यों नहीं रहते? ये सुनते ही मैं राजी हो गया। शुरुआत में मैं केवल शो के दौरान भाई के साथ था। फिर धीरे-धीरे मैं भाई से जुड़ गया और वह रिश्ता आज तक कायम है। हमारा बॉन्ड बहुत मजबूत है। मैं एक सरदार हूं और वह एक पठान हैं और हमारी जोड़ी सबको बस क्लिक करती है। मैंने भाई से कहा कि जब तक मैं हूं, तब तक आपकी सेवा करूंगा।

हाल ही में शेरा ने 1.4 करोड़ की रेंज रोवर स्पोर्ट कार खरीदी है। उन्होंने एक पोस्ट के जरिए इस बात की जानकारी दी थी। उन्होंने कहा कि भगवान के आशीर्वाद से हम घर में नए सदस्य का स्वागत करते हैं। शेरा का जन्म मुंबई के अंधेरी में एक सिख परिवार में हुआ था। उनका असली नाम गुरमीत सिंह है। शेरा को शुरुआत में बॉडी बिल्डिंग का शौक था।

सिनेमा के परदे पर खूब छाए देवा श्री गणेशा

अशोक जोशी

सिनेमा में सबसे ज्यादा प्रचलित भगवान का जिक्र किया जाए, तो निश्चित रूप से वे भगवान गणेश ही होंगे। फ़िल्मी कथानकों में जब भी भगवान की बात हुई, सबसे ज्यादा गणेश जी ही परदे पर

दिखाई दिए। गणेश जी की महिमा का ही चमत्कार है कि ज्यादातर फ़िल्मी गाने भी भगवान गणेश पर ही लिखे गए जिन्हें कभी ऋतिक रोशन, कभी मिथुन, कभी शाहरुख पर फिल्माया गया। इनमें से कुछ गाने तो इतने कालजयी बन गए कि हर गणेश उत्सव में ये सुने जाते हैं।

इन दिनों पूरे देश में धूमधाम से गणेश उत्सव मनाया जा रहा है। सामाजिक समरसता के उद्देश्य से मनाए जाने वाले इस पर्व ने न केवल समाज में अपनी छाप छोड़ी, बल्कि बॉलीवुड के फिल्मकारों को भी फिल्म की गति को आगे बढ़ाने का एक विषय दिया। गणेश उत्सव की धूम को फिल्मों में उत्सवी माहौल बनाने से लेकर रोमांच और मारधाड़ सहित अलग अलग घटनाक्रमों में शामिल किया जाता रहा है। कई फिल्में ऐसी है जो गणेश जी की कथा कहानियों पर आधारित है तो बप्पा के गीतों ने कई फिल्मों को दर्शनीय बनाने का काम भी किया है। बालीवुवूड के सितारों में मिथुथून चक्रवर्ती के साथ आरंभ हुई। इस परम्परा को सलमान खान से लेकर ऋतिक रोशन ने आगे बढाया और अब वरूण धवन इसे अपनी फिल्मों से आगे बढा रहे हैं।

मिथुन चक्रवर्ती और अमजद खान अभिनीत फिल्म 'हमसे बढ़कर कौन' का टाइटल सांग ही गणेशोत्सव के दृश्यों को जोड़कर फिल्माया गया था। इस फिल्म के गीत देवा हो देवा गणपति देवा को आज भी गणेशोत्सव के विभिन्न पंडालों में सुबह शाम सुना जा सकता है। यूं तो सलमान खान की प्रभुदेवा निर्देशित फिल्म 'वांटेड' एक एक्शन थ्रिलर थी। लेकिन, इसमें सलमान खान ने जमकर मेरा ही जलवा गाकर अपना जलवा बिखेरा था। ऋतिक रोशन की फिल्म 'अग्निपथ' में भी गणेश उत्सव का रोमांचक फिल्मांकन किया गया था। 1990 में आपराधिक पृष्ठभूमि पर बनी इस फिल्म में संगीतकार अजय अतुल की जोड़ी ने देवा श्री गणेशा की जो धुन तैयार की, जो अपने आप में यादगार बन गयी। इसके साथ ऋतिक रोशन का जोशीला डांस देखने वालों को चमत्कृत

कर देता है।

महेश मांजरेकर ने फिल्म 'वास्तव' में गणेश जी का नया अवतार दिखाया था। संजय दत्त अभिनीत इस फिल्म में बताया था कि गणेश जी बाल सुलभ देवता ही नहीं बल्कि दुश्मनों की फौज को नष्ट कर दण्ड देने वाले सख्त देवता भी है। फिल्म में रवींद्र साठे द्वारा गया गया गीत सिंदूर लाल .... अपराधियों के पतन को रेखांकित करने में कामयाब रहा है। वरुण धवन को फिल्मों में आए ज्यादा समय नहीं हुआ है। लेकिन, बप्पा ने उन्हें फिल्म दर फिल्म अपनी महिमा गाने का अवसर प्रदान किया है। प्रभु देवा ने 'वांटेड' के बाद एक बार फिर 'एबीसीडी-2' में गणेश वंदना करने के लिए हे गणराया का सहारा लिया है जिसमें दिव्य कुमार ने अपने प्राण फूंके तो वरूण धवन ने इसमें खास रंग भरे हैं। इस गीत की शूटिंग के दौरान सेट पर किसी को मांसाहार खाकर आने या जूते पहन कर आने की

इजाजत नहीं थी। वरुण धवन ने अपनी फिल्म 'जुड़वा-2' में एक बार फिर बप्पा के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की। शाहरुख खान ने भी अपनी फिल्म 'डॉन 2' में मोरया रे बप्पा मोरया रे गाकर अपनी आदरांजली दी।

बप्पा के आगमन को फिल्मों में उत्सवी माहौल तैयार करने में मदद की तो उनकी बिदाई ने फिल्मों में उदासी के माहौल को प्रदर्शित करने में सफलता पाई है। सुनील दत्त की फिल्म 'दर्द का रिश्ता' में अपनी बेटी की बीमारी और उसकी जुदाई की आशंका को सुनील दत्त ने बप्पा की विदाई के साथ जोड़कर दर्शकों की आंखों को भिगोया था। मेहूल कुमार की फिल्म 'आंसू बने अंगारे' में राजेश रोशन ने अगले बरस तू जल्दी आ को माधुरी दीक्षित के गरिमामय नृत्य के साथ परदे पर उतारा। अजय देवगन और परेश रावल की फिल्म 'अतिथि तुम कब जाओगे' में भी गणेश विसर्जन की भीड़ का अच्छा इस्तेमाल किया गया है।

वैसे देखा जाए तो पूरी फिल्मी दुनिया ही गणपति की मुरीद है। हर छोटा बड़ा सितारा पूरे आदर और सम्मान के साथ इन दिनों अपने यहां गणेशजी को स्थापित कर नंगे पैर चलकर उनका विसर्जन करते हैं। इसमें जाति धर्म जैसी बात आड़े नहीं आती। यही कारण है कि सभी जाति और धर्म वाले फिल्मकार गणेशोत्सव के दौरान बहुत धूमधाम के साथ अपने घर ऑफिस और स्टूडियो में गणेशजी की स्थापना करते है। वी शांताराम और राज कपूर के स्टूडियो में विशालकाय मूर्ति की स्थापना विशेष आकर्षण का केंद्र रही है। सलमान खान के घर पर भी इस दौरान उत्सव का माहौल रहता है। नाना पाटेकर जैसे कलाकार ठेठ मराठी अंदाज में अपने घर बप्पा को लेकर आते हैं।

एक जमाना वह भी था जब सिनेमाघरों में फिल्म आरम्भ होने के पहले गणेश जी की आरती बजाई जाती थी। इंदौर के सरोज टॉकीज जिसका नाम बाद में चाणक्य किया गया था। वहां पूरे गणेशोत्सव के दौरान सभी शो के इंटरवेल में गणेश जी की आरती कर दर्शकों को प्रसाद बांटा जाता था। हालांकि, अब यह सिलसिला कहीं नजर नहीं आता फिर भी समय समय पर फिल्मों में गणेश जी और उनके जलवे नजर आ ही जाते हैं।

विश्व मैत्री दिवस

क्षमा की धरती को उर्वरा बनाते हैं मैत्री के फूल

ललित गर्ग
लेखक, पत्रकार, स्तंभकार

जैनधर्म की त्याग प्रधान संस्कृति में पर्युषण पर्व का अपना अपूर्व एवं विशिष्ट आध्यात्मिक महत्व है। यह एकमात्र आत्मशुद्धि का प्रेरक पर्व है। इसीलिए यह पर्व ही नहीं, महापर्व है। संपूर्ण जैन समाज इस पर्व के अवसर पर जागृत एवं साधनारत हो जाता है। आठ दिनों की कठोर साधना के बाद मैत्री दिवस का आयोजन होता है। पर्युषण पर्व का हृदय है-'क्षमापना दिवस' जिसे मैत्री दिवस भी कहते हैं। इस दिन अपनी भूलों या गलतियों के लिए क्षमा मांगना एवं दूसरों की भूलों को भूलना, माफ करना, यही इस पर्व को मनाने की सार्थकता सिद्ध करता है। यदि कोई व्यक्ति इस दिन भी दिल में उलझी गांठ को नहीं खोलता है, तो वह अपने सम्यग्दर्शन की विशुद्धि में प्रश्न चिन्ह खड़ा कर लेता है। क्षमायाचना करना, मात्र वाचिक जाल बिछाना नहीं है। परंतु क्षमायाचना करना अपने अंतर को प्रसन्नता से भरना है। बिछुड़े हुए दिलों को मिलाना है, मैत्री एवं करुणा की स्रोतस्विनी बहाना है।

मैत्री पर्व का दर्शन बहुत गहरा है। मैत्री तक पहुंचने के लिए क्षमायाचना की तैयारी जरूरी है। क्षमा लेना और क्षमा देना मन परिष्कार की स्वस्थ परम्परा है। क्षमा मांगने वाला अपनी कृत भूलों को स्वीकृति देता है और भविष्य में पुनः न दुहराने का संकल्प लेता है जबकि क्षमा देने वाला आग्रह मुक्त होकर अपने ऊपर हुए आघात या हमलों को बिना किसी पूर्वाग्रह या निमित्तों को सह लेता है। क्षमा ऐसा विलक्षण आधार है जो किसी को मिटाता नहीं, सुधरने का मौका देता है। भगवान महावीर ने कहा-'अहो ते खंति उत्तमा'-क्षांति उत्तम धर्म है। 'तितिक्खं परमं नच्चा'-तितिक्षा ही जीवन का परम तत्व है, यह जानकर क्षमाशील बनो। पयुर्षण महापर्व से जुड़ा मैत्री पर्व मानव-मानव को जोड़ने व मानव हृदय को संशोधित करने का पर्व है, यह मन की खिड़कियों, रोशनदानों व दरवाजों को खोलने का पर्व है, जो एकाग्रता एवं एकांत आध्यात्मिक जिज्ञासाएं जगाकर एक समृद्ध एवं अलौकिक अनुभव तक ले जाता है। इस भीड़भाड़ से कहीं दूर सबसे पहली जो चीज व्यक्ति इस पर्युषण की साधना से सीखता है वह है -'अनुशासनयुक्त मैत्रीमय जीवन।' यह विलक्षण साधना तनावमुक्ति का विशिष्ट प्रयोग है जिससे शरीर को

आराम मिलता है, अपने आपको, अपने भीतर को, अपने सपनों को, अपनी आकांक्षाओं तथा उन प्राथमिकताओं को जानने का यह अचूक तरीका है, जो घटना-बहुल जीवन की दिनचर्या में दब कर रह गयी है। इस दौरान परिवर्तन के लिये कुछ समय देकर हम अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकते हैं तथा साथ ही इससे अपनी आंतरिक प्रकृति को समझ सकते हैं, उसे उन्नत एवं समृद्ध बना सकते हैं।

भगवान महावीर ने क्षमा यानि समता का जीवन जीया। वे चाहे कैसी भी परिस्थिति आई हो, सभी परिस्थितियों में सम रहे। ''क्षमा वीरो का भूषण है''-महान् व्यक्ति ही क्षमा ले व दे सकते हैं। पर्युषण पर्व क्षमा के आदान-प्रदान का पर्व है। इस दिन सभी अपनी मन की उलझी हुई ग्रंथियों को सुलझाते हैं, अपने भीतर की राग-द्वेष की गांठों को खोलते हैं वह एक दूसरे से गले मिलते हैं। पूर्व में हुई भूलों को क्षमा के द्वारा समाप्त करते हैं व जीवन को पवित्र बनाते हैं। पर्युषण महापर्व का समापन मैत्री दिवस के साथ होता है। इस तरह से पर्युषण महापर्व एवं क्षमापना दिवस- यह एक दूसरे को निकटता में लाने का पर्व है। यह एक दूसरे को अपने ही समान समझने का पर्व है। गीता में भी कहा है -'आत्मौपम्येन सर्वत्रः, समे पश्यति योर्जुन''-श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा-हे अर्जुन ! प्राणीमात्र को अपने तुल्य समझो। भगवान महावीर ने कहा-''मित्ती में सव्व भूएसु, वेरंमज्झण केणइ'' सभी प्राणियों के साथ मेरी मैत्री है, किसी के साथ वैर नहीं है। मानवीय एकता, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, मैत्री, शोषणविहीन सामाजिकता, नैतिक मूल्यों की स्थापना, अहिंसक जीवन, आत्मा की उपासना शैली का समर्थन आदि तत्त्व इस पर्व के मुख्य आधार हैं। ये तत्त्व जन-जन के जीवन का अंग बन सके, इस दृष्टि से इस महापर्व को जन-जन का पर्व बनाने के प्रयासों की अपेक्षा है।

पर्युषण पर्व आत्म उन्नति, अहिंसा, शांति और मैत्री का पर्व है। अहिंसा और मैत्री के द्वारा ही शांति मिल सकती है। आज जो हिंसा, युद्ध, आतंक, आपसी-द्वेष, नक्सलवाद एवं भ्रष्टाचार जैसी ज्वलंत समस्याएं न केवल देश के लिए बल्कि दुनिया के लिए चिंता का बड़ा कारण बनी हुई है और सभी कोई इन समस्याओं का समाधान चाहते हैं। उन लोगों के लिए मैत्री पर्व एक प्रेरणा है, पाथेय है, मार्गदर्शन है और अहिंसक-निरोगी-शांतिमय जीवन शैली का प्रयोग है। आज भौतिकता एवं स्वार्थपूर्ण जीवन की चकाचौंध में, भागती जिंदगी की अंधी दौड़ में इस पर्व की प्रासंगिकता बनाये रखना ज्यादा जरूरी है। इसके लिए जैन समाज संवेदनशील बने विशेषतः युवा पीढ़ी मैत्री पर्व की मूल्यवत्ता से परिचित हो और वे आत्मचेतना को जगाने वाले इन दुर्लभ क्षणों से स्वयं लाभान्वित हो और जन-जन के सम्मुख मैत्री का एक आदर्श प्रस्तुत करे।

तथागत बुद्ध ने कहा-क्षमा ही परमशक्ति है। क्षमा ही परम तप है। क्षमा धर्म का मूल है। क्षमा के समकक्ष दूसरा कोई भी तत्व हितकर नहीं है। क्योंकि प्रेम, करुणा और मैत्री के फूल सहिष्णुता और क्षमा की धरती पर ही खिलते हैं। 'सबके साथ मैत्री करो' यह कथन बहुत महत्त्वपूर्ण है किंतु हम वर्तमान संबंधों को बहुत सीमित बना लेते हैं। दर्द सबका एक जैसा होता है, पर हम चेहरों को देखकर अपना-अपना अन्दाज लगाते हैं। यह स्वार्थपरक व्याख्या हमें प्रेम से जोड़ सकती है मगर करुणा से नहीं। प्रेम में स्वार्थ है, राग-द्वेष के संस्कार है, जबकि करुणा परमार्थ का पर्याय बनती है। कहा जाता है-'वसुधैव कुटुम्बकम्' वसुधा कुटुम्ब है, परिवार है। 'मित्ती में सव्व भूएसु वेरं मज्झ न केणई'- यह सार्वभौम अहिंसा एवं सौहार्द का ऐसा संकल्प है जहां वैर की परम्परा का अंत होता है।

मित्रता का भाव हमारे आत्म-विकास का सुरक्षा कवच है। आचार्य श्री तुलसी ने इसके लिए सात सूत्रों का निर्देश किया। मित्रता के लिए चाहिए- विश्वास, स्वार्थ-त्याग, अनासक्ति, सहिष्णुता, क्षमा, अभय, समन्वय। यह सप्तपदी साधना जीवन की सार्थकता एवं सफलता की पृष्ठभूमि है। विकास का दिशा-सूचक यंत्र है। मित्रता का यह पर्व आमंत्रित कर रहा है अपनी ओर, बाहें फैलाये हुए, हमें बिना कुछ सोचे, ठिठके बगैर, भागकर मित्रता की पगडंडी को पकड़ लेने के लिये। जीवन रंग-बिरंगा है, यह श्वेत है और श्याम भी। मित्रता की यही सरगम कभी कानों में जीवनराग बनकर घुलती है तो कहीं उठता है संशय का शोर। मित्रता को मजबूत बनाता है हमारा संकल्प, हमारी जिजीविषा, हमारी संवेदना लेकिन उसके लिये चाहिए समर्पण एवं अपनत्व की गर्माहट। यह जीना सिखाता है, जीवन को रंग-बिरंगी शक्ल देता है। प्रेरणा देता है कि ऐसे जिओ कि खुद के पार चले जाओ। ऐसा कर सके तो हर अहसास, हर कदम और हर लम्हा खूबसूरत होगा और साथ-साथ सुन्दर हो जायेगी जिन्दगी।

मानवीय संवेदनाओं एवं आपसी रिश्तों की जमीं सूखती जा रही है ऐसे समय में एक दूसरे से जुड़े रहकर जीवन को खुशहाल बनाने और दिल में जादुई संवेदनाओं को जगाने का सशक्त माध्यम है मैत्री दिवस। क्षणिक और स्वार्थों पर टिकी मित्रता वास्तव में मित्रता नहीं, केवल एक पहचान मात्र होती है ऐसे मित्र कभी-कभी बड़े खतरनाक भी हो जाते हैं। जिनके लिए एक विचारक ने लिखा है- ''पहले हम कहते थे, हे प्रभु ! हमें दुश्मनों से बचाना परन्तु अब कहना पड़ता है, हे परमात्मा, हमें दोस्तों से बचाना।'' दुश्मनों से भी ज्यादा खतरनाक होते हैं दोस्त। विश्व मैत्री दिवस वैयक्तिक स्वार्थों को एक ओर रखकर औरों को सुख बांटने एवं दुःख बटोरने की मनोवृत्ति को विकसित करने का दुर्लभ अवसर प्रदत्त करता है। इस दिवस को मनाने का मूल हार्द यही है कि मित्रता में विचार-भेद और मत-भेद भले ही हों मगर मन-भेद नहीं होना चाहिए। क्योंकि विचार-भेद क्रांति लाता है जबकि मन-भेद विद्रोह। क्रांति निर्माण की दस्तक है, विद्रोह बरबादी का संकेत।

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी
लेखिका साहित्यकार हैं।

मानसिक, शारीरिक, वैचारिक रूप से अलग हैं स्त्री-पुरूष

तमाम जिंदगी की जद्दोजहद और 35 साल की शादीशुदा जिंदगी, दोस्तों की, बच्चों की शादीशुदा जिंदगी, सलाहकार की भूमिका (चाहे खुद कितना भी उलझे हो) निभाई और अब जब पुनः जॉन ग्रे की ''मैन आर फ्राम मार्स, वूमेन आर फ्राम वीनस'' कल तक फिर पढ़ी तो बहुत कुछ समझ आया। जब नई शादीशुदा जिंदगी में पढ़ा था तो बकवास लगी थी ताज़ी ताज़ी मुहब्बत थी ना। मुझे देर से समझ आया। हमने कितना वक़्त लड़ाई, बहस में बर्बाद किया। काश! हमारे मां-बाप ही हमें इस बारे में बताते पर वो अपनी लड़ाईयां सुलझाने में लगे रहते थे। जीवन के अब इस पड़ाव पर जब बहस करने की, लड़ने की, एक दूसरे की कमियां निकालने की शक्ति नहीं बची तो सभी से बात की। अपने रिश्तेदारों, दोस्तों के रिश्ते को सुना और जॉन ग्रे को पढ़ा तब समझ आया। हमें ये स्वीकार करना होगा कि पुरूष, स्त्री, अलग तरीके से सोचते हैं। दोनों प्यार तो करते है, पर तरीका अलग होता है।

चलिये अब आप युवा लोग हमारी जिंदगी के अनुभवों से कुछ संभल जाएं, आपका प्यार भी, रिश्ते भी। जॉन ग्रे कहते हैं कि कल्पना कीजिये पुरूष मंगल ग्रह पर रहते थे और स्त्रियां वीनस ग्रह पर रहती थी। जब दोनों ने अपने ग्रहों से इक दूजे को दूरबीन से देखा तो मोहित हो गए और पुरूष शुक्र ग्रह की तरफ चल पड़े। वे साथ रहने लगे, प्रेम और आनंद से रहने लगे। हालांकि वे भिन्न थे पर एक दूसरे को पंसद करते थे। अब कहानी में ट्विस्ट है उन्होंने साथ साथ धरती पर रहने का फैसला किया। परंतु पृथ्वी पे आते ही वे याददाश्त भूल गये और एक दूसरी की भिन्नताएं भूलकर आपस में लड़ने लगे। पहले इसी भिन्नता के साथ दोनों ने एक दूसरे को स्वीकार किया था।

शुरूआत से अब समझ आ गया होगा कि जैसे है वैसा स्वीकारना बंद कर दिया। मैंने अपने और दोस्तों के अनुभव से यही सीखा। खासतौर पर हम हमेशा एक दूसरे को बदलने को तत्पर रहते है और इसे हम स्वाभाविक या हल्केपन में नहीं लेते। बात गंभीर होकर तलाक हो जाता है। चलिये देखते है महिलाओं को पुरूषों की किन बातों से शिकायत हैं-

1. पुरूष महिलाओं की बातें ध्यान से नहीं सुनते।
2. बात करने से बातें सुलझती है पर स्त्री के ये कहते ही कि ''मुझे कुछ बात करनी है'' उन्हें जरूरी काम याद आ जाता है।
3. अगर तुम खुश नहीं हो तो चलो तलाक ले लेते हैं।
4. स्त्रियां तैयार होकर पुरूष की तरफ देखती हैं, वे बाल संवार बाहर निकल जाते है।
5. बीमारी में पुरूष कमरे के अंदर बैठने की जगह बाहर घूमते रहते है।
6. सामान जगह पर नहीं रखते।
7. सॉरी, प्लीज़, थैंक्यू का कम इस्तेमाल करते हैं।
8. एक बार मांगने पर घर खर्च के पैसे नहीं देते।
9. पुरूष कुछ समय के लिये गायब क्यों हो जाते हैं?
10. पुरूष अपनी परेशानियां शेयर नहीं करते हैं।
11. क्या उम्र कम होने से स्त्रियों की बुद्धि भी कम होती है?
12. पुरूष अक्सर समझ नहीं पाता स्त्री किस बात पे नाराज है। बात तो छोड़िये कई बार वो समझ नहीं पाता कि वो नाराज है।
13. घुमाने की बात पर हमेशा ये क्यो होता है कि अरे ! अभी तो गये थे।
14. पुरूष ये मानकर चलता है, कि उसकी स्त्री उसे कमज़ोर, कम बुद्धि का, जल्दी निर्णय ना लेने वाला समझती है औ वो स्त्री की ये गलतफहमी दूर करने की कोशिश नहीं करता।

पुरूष का स्पष्टीकरण यूं निकलकर आया है। जब स्त्री कोई बात करने आती है तो पहले भूमिका बांधती है फिर अपनी बात कहती है तब तक उत्सुकता के मारे पुरूष का धैर्य छूटने लगता है और वो कहता है, पांच मिनट में अपनी बात खत्म करो। बस लगा दी ना तीली, अब मुझे कुछ नहीं कहना। पत्नी पैर पटकते हुए चली जाती है। पति सोचता है मैंने ऐसी कौन सी बड़ी बात कह दी और इसीलिये पति लोग संवादहीनता बढ़ा लेते है। पतियों को बात खींचना, दुविधा के बीच रहना पसंद नहीं इसलिये जोश में तलाक की बात कह बैठते है। पुरूष अगर किसी स्त्री से प्रेम करता है तो मान के चलता है उसके पास दुनिया की सबसे सुंदर स्त्री है। इसलिये बाहरी सजने धजने पे वो ध्यान नहीं देता। पुरूष कमज़ोर दिल के होते है वो अपने घर के सदस्यों को बीमार नहीं देख सकते। अक्सर अपने माँ-बाप की बीमारी में भी पत्नी को आगे कर देते है। उन्हें मालूम होता है वो कितना भी सलीके से सामान रखें पत्नी को फिर से जमाना है और मीनमेख निकालना है। सो वो तौलिया बिस्तर पर ही छोड़ देंते है। अगर बाहर डालेंगे तो वो कहेंगी यहां नहीं यहां डालना चाहिये और ऐसे तो जनम लग जायेंगे सूखने में। अपनी गलती के लिये क्षमा मांगना, आग्रह करना, धन्यवाद ना देना परवरिश का ही नतीजा है। बाहर वालों के सामने झट बटुआ निकल आता है वो अपर हैड रखना पसंद करते पत्नी कमाये तो और बुरा लगता है और पुरूष का इगो हर्ट होता है। उन्हें स्त्री का हर समय एक ही बात दोहराना घर-गृहस्थी, नौकरों की बातें करना पसंद नहीं इसलिये वो थोड़ी देर एकांत में अकेले समय बिताते हैं। पुरूष जहां तक हो अपनी समस्या खुद सुलझाना पसंद करते हैं। उन्हें शेयर करना पसंद नहीं। जी हां, अगर स्त्री और पुरूष की उम्र में काफी अंतर हो मसलन मेरी दीदी जीजाजी से 12 साल छोटी है। जीजाजी का रवैया उनके प्रति रक्षात्मक होता है, निर्णय लेने में सलाह लेना भी वो ठीक नहीं समझते। ऐसी पत्नियां बहुत परेशान रहती है कि उनसे कोई सलाह नहीं ली जाती। हमारे ग्रुप के एक दोस्त के हिसाब से स्त्रियों की अक्ल

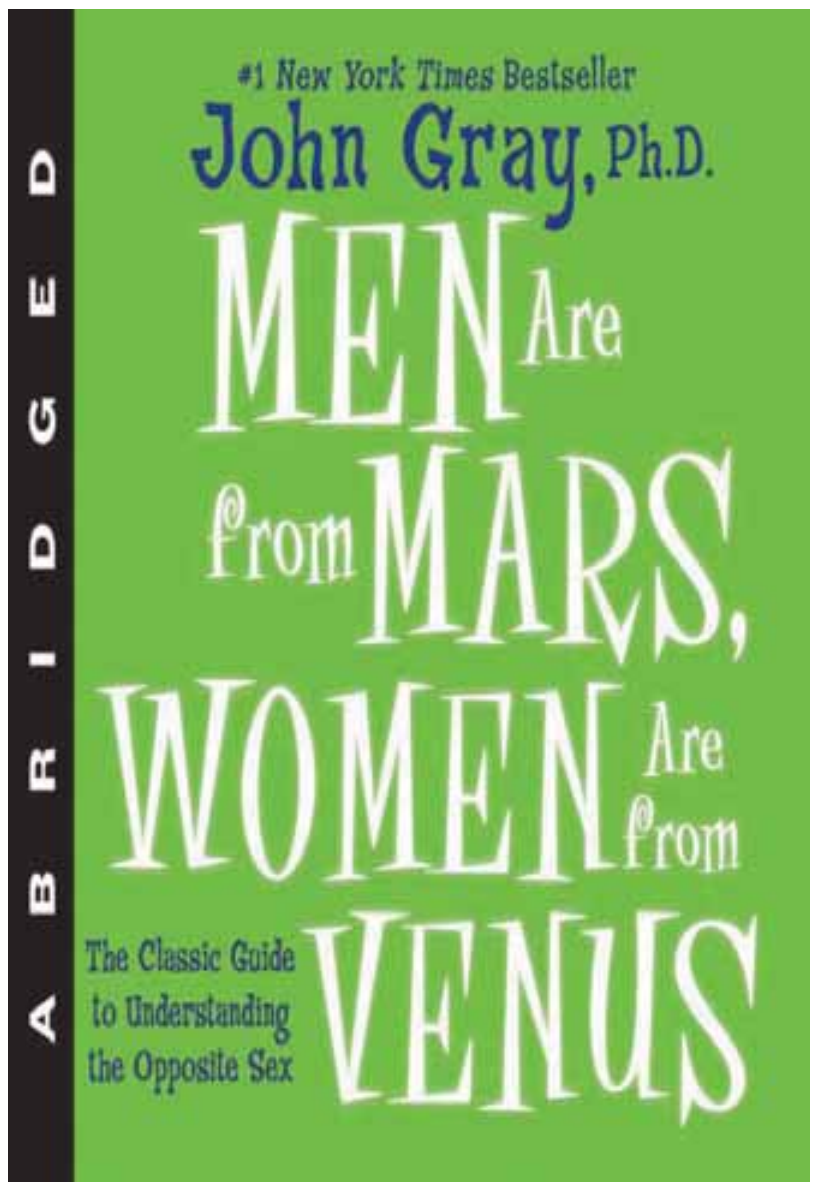

घुटनों में रहती है।

कई बार पुरूष सचमुच समझ नहीं पाता कि पत्नी नाराज़ है। जब तक उसे समझ आता है वो कोप भवन में चली जाती है और मौन हो जाती है अब मनाने का वक़्त निकल गया। पति दिन भर काम के बाद ढीले ढाले कपड़े पहन टी.वी. के समक्ष अपना पसंदीदा कार्यक्रम देखते वक़्त बिताना चाहता है। पत्नियाँ काम काजी होते हुये भी शाम बाहर बिताना चाहती है कि काम की थकान, रसोई में ना निकले बल्कि चलो फलाने से मिल आये, वहाँ गप्पों से उसका दिल बहल जाता है। स्त्री को हमेशा ये लगता है कि उसका पति बुद्धु, भोला, दुनियादारी ना समझने वाला व्यक्ति है जिसे सब चूना लगाते है इसीलिये कहीं जाने से पहले वो पति को समझा के ले जाती है फलाँ मत कहना, उन्हें ये बात मत बताना और दो पैग पेट में जाते ही सबसे पहले उनके मुंह से वही बात निकलती है।

अब देखें पतियों को या पुरुष को पत्नी या स्त्री की कौन सी बात नहीं अच्छी लगती

1. महिलाएं आज भी कंप्यूटर, कारों, राजनीति पर बात करने की बजाय रोमांस करने पर कंफर्टेबल होती हैं।
2. पत्नियाँ जब सलाह देती है तो पतियों को लगता है उन्हें कंट्रोल किया जा रहा है।
3. पति को हमेशा ऐसा लगता है कि उसकी बीवी उसे स्मार्ट नहीं समझती हमेशा तुलना करती है ज़रा वर्मा जी का ड्रेस सेंस देखो।
4. बीमार पड़ने पर पति से बहुत देर उसके पास बैठा नहीं जाता कि वो बीमारी में कुछ ज़्यादा ही बोलती है और पत्नि को लगता है वो उसकी केअर नहीं करता।
5. पत्नी को हमेशा दूसरे का पति पत्नी भक्त लगता है। जिन्न की तरह उसकी फरमाइशे पूरी करता है।
6. जॉन ग्रे के अनुसार मंगल ग्रह वाले पुरुष अकेले काम करना पसंद करते हैं और पत्नी को लगता है कि उसका पति उसे बुद्धु समझता है और दूसरों से सलाह लेता है।
7. स्त्री पुरुषों द्वारा दिये गये समाधानों पर अमल नहीं करती पुरुष को लगता है अब वो और क्या मदद कर सकता है।
8. पत्नियां मूडी होती है, बाजार जाने का कहकर तैयार होने जाती है और दो मिनट बाद आकर रहती है छोड़ो फिर देखेंगे पति सोचता रह जाता है कि अब मैंने क्या किया?
9. महिलाओं के सिक्स्थ सेंस, रंगों की पहचान के आगे पुरुष हार जाता है।
10. उसे बाल कटवाने हैं, या आज दोस्तों के साथ शाम क्यों बिताने हैं मैं अकेली क्या करूंगी। दरअसल वो अपने साथी के बिना अकेले आनंदित होना क्यों नहीं सीखती। पुरुष को लगता है ज्यादा नजदीकियाँ भी लड़ाईयां करवाती है।
11. बच्चों को अगर खुद डांटे तो वो मानती है ये उसके परवरिश का अंग है, पर पति डांटे तो वो बच्चों के प्रति रक्षात्मक हो जाती है
12. 'एक बार' पति से कोई गलती हो जाये तो पत्नी सारी जिंदगी दुहराती है 'तुम हमेशा' ऐसे ही करते हो। तुमसे ना हो पायेगा।
13. खुद चाहे कितनी भी मोटी हो पर स्लिम फिट पति को दूसरा चिप्स का टुकड़ा नहीं उठाने देती और उसके फिट रहने का दारोमदार खुद पे लेती है।
14. कपड़े मैचिंग करना, पुरुषों को नहीं आता ऐसा उसका मानना है।

जॉन ग्रे कहते हैं शुक्र ग्रह वाली सलाह देना प्रेम की निशानी मानती है। पति को तैयार होने, रंग चुनने में, ड्रेस चुनने में उसका दखल इसलिए होता है कि उसका पति सबसे हैंडसम लगे पति को लगता है वो सुधार समिति की सदस्य है और वो अक्षम है। महिलायें पति के आते ही समस्याएं सुनाना चाहती है जिनमें से कई बेफिजूल बातें होती है। जब तक चीज़ ठीक चलती है उसे बदलना नहीं चाहता पर महिला ये सोचकर शायद ये चीज़ आगे ऐसी ना चले तो परेशान होने की जगह पहले ही बदल ले महिलाओं के लिये सबसे कीमती चीज़ प्रेम है पैसा तो कमा लिया जायेगा पर रिश्ते फिर नहीं बंधते सो वो लोगों के यहां आना-जाना पसंद करती हूं पुरुष का मानना होता है पैसा होता है तो सब खरीदा जा सकता है रिश्ते भी, पर बाद में वो गलत साबित होता है जब रिश्ते टूट जाते हैं। तनाव कम करने के दोनों के अलग तरीके हैं। ऐसे समय पुरुष भुलक्कड़, लापरवाह हो जाता है अपने आप को गुफा में बंद कर लेता है समाधान होते ही खुशी-खुशी बाहर आ जाता पत्नी को लगता है वो उसकी उपेक्षा कर रहा है ये भी समझती है कि वो परेशान है वो सोचती है पुरुष उनसे शेअर करें पर उन्हें ऐसा सिखाया नहीं गया तो पत्नियाँ चिढ़ जाती है।

तो अब कैसे एक दूसरे को समझा जाये। स्त्री चाहती है उसकी भाव भंगिमा से पुरुष समझ ले कि वह क्यों दुःखी है पुरुष को इशारे की भाषा समझ नहीं आती। पुरुष को समझना होगा कि अगर वह शांति चाहता है तो स्त्री से पूछे कि उसे क्या हुआ दरअसल स्त्री अपना तनाव बोलकर निकालती है और हल्की होकर तनाव मुक्त हो नॉर्मल व्यवहार करती है। स्त्रियों को भी ध्यान रखना चाहिए वो अपनी समस्याएं यूं डिस्कस ना करें कि पुरुष सोचे कि उसे दोषी बनाया जा रहा है। पुरुष को स्त्री की सलाह देने में वो आनंद मिलता है पर कोई उसे सलाह दे ये बर्दाश्त नहीं। घर को लेकर, अपने वजह को लेकर स्त्री हमेशा परेशान रहती है मैं मोटी लग रही हूँ हाँ थोड़ा वेट पुट ऑन किया है तुमने, तो सुनने को तैयार रहे और अपनी तोंद देखो फिर। बस समझिये कि युद्ध की तैयारी शुरू हो जायेगी आप कहियेगा कि नहीं ऐसा कुछ खास नहीं ड्रेस टू ड्रेस भी फर्क पड़ता है। महिला कभी किसी समस्या का समाधान नहीं चाहती बल्कि अपनी बात कहकर हल्की हो जाती है उसे अपनी समस्याएँ सुलझाना आता है। पुरुष को संस्पेंस, सरप्राइज ज़्यादा पसंद नहीं आते तो स्त्रियां कृपया ऐसा ना करें मतलब ये भी है कि जब आप नये-नये मिले थे (वो शुक्र से मायके से, आप मंगल से ससुराल से आये थे) तब आप दोनों ने भिन्न होते हुए भी एक दूसरे को टूट के प्यार किया था अब क्या हुआ वो भिन्नतायें बुरी लगने लगी, मत बदलिये एक दूसरे को थोड़े समय शांत रहिये, एक दूसरे को मत टोकिये, प्रेम है तो अपने आप बदल जायेंगे तब सात साल बाद आप कहेंगे अरे ये ही रंग तो मुझे पसंद है। जब किसी महिला को लगता है कि वो ही तारीफ करती है, वो ही ध्यान रखती है बदले में प्रशंसा तो दूर थैंक्स भी नहीं मिलता हो सकता है पीठ पीछे आप लोगों के बीच उसकी तारीफ करते हो पर महिलाओं का 'दिल मांगे मोर' आप उनके मुंह पर तारीफ़ ज़रुर करें अन्यथा वो नर्वस ब्रेकडाउन का शिकार हो सकती है वहीं अगर पति को ये अहसास हो जाये मेरे बिना पत्नी सब मैनेज कर लेती है तो उसे उपेक्षित लगता है तो समय पर उनसे छोटी सी मदद मांगने में संकोच ना करें। दोनों पार्टनर एक दूसरे के साथ बैडमिंटन ना खेंले आप बराबरी के दोस्त है प्रतिद्वंद्वी नहीं।

हमारे पहचान के एक कपल है तो जब हम सब इकट्ठे होते हैं तो हमें मन में तय करना होता है कि हम किसका पक्ष ले या मौन रहे आप दोनों एक दूसरे को अपने जैसा ना बनाये बल्कि आप भिन्नता के कारण ही आकर्षित हुये हैं। पुरुष प्रेम व्यक्त करने में संकोची है और बहुत प्रेम करता है उसका प्रेम अभिव्यक्ति का तरीका आपकी केयर पसंद नापसंद याद रखना होता है। स्त्री को बोलने वाला प्रेम पसंद है। सेक्स के मामले में भी स्त्री को पुरुष स्वार्थी लगता है यूनीवर्स ने दोनों की शारीरिक क्षमता व मांग अलग बनाई है स्त्री चिढ़ के कहती है बस काम पूरा होते ही करवट लेकर सो जाते हो तो ध्यान रखिये पांच मिनट उसकी तारीफ में बिताइये।

ऐसे ही प्रेम प्रक्रिया शुरू होते ही कुकर की सीटी, या बच्चे का रूदन पुरुष को चिढ़ा देता है तो स्त्रियों जब आप उनका मूड देखें तो पहले ही माहौल ठीक कर ले बीमारी से पुरुष डरते हैं पर आपको अपनी पत्नी के पास बैठकर, सर पर हाथ फेरकर ही ऑफिस जाना होगा। ऑफिस से फोन लगाना होगा। खैर स्त्रियाँ कहती है हे भगवान मुझे बीमार कर दो इन्हें मत करना, पुरुष बीमारी में 24 घंटे तवज्जोह चाहता है उस समय आपको उसकी मां बनना होगा। स्त्री के रचनात्मक काम की तारीफ कीजिये उसे प्रोमोट कीजिये। पुरुष जवानी में किसी की ज़रूरत की आवश्यकता नहीं महसूस करता पर परिपक्व होते ही उसे स्त्री की मानसिक रूप से ज़्यादा आवश्यकता होती है। बल्कि स्त्री जवानी में पुरुष की ज़्यादा आवश्यकता महसूस करती है पर परिपक्व होते ही अब वो अपनी ज़िंदगी अपने हिसाब से चलाना चाहती है मैं देख रही हूँ स्त्रियाँ अकेले टूर पर जा रही है, बिंदास लिख रही है, लेडीज ग्रुप बनाती है, सहेली के साथ वाइन लेती है कोई ना कोई कार्यक्रम बनाती रहती है तो आप समझ गये होंगे ना एक दूसरे को स्पेस दें। स्त्री को तारीफ पाने के लिये बहुत त्याग करना पड़ता है और बाद में अफसोस होता है तो पूछते रहिये एक दूसरे से और क्या कह रही है जिंदगी।

(गणेशोत्सव पर विशेष)

यशवंत गोरे
(व्यंग्यकार एवं लेखक)

एक प्रबंधक के रूप में गणेशजी की आकृति संपूर्ण गुणों से परिपूर्ण है

अलौकिक दृष्टि से एक बात सर्वसिद्ध है कि प्रत्येक मनुष्य अपने यहाँ होने वाले शुभ कार्य निर्विघ्न रूप से संपन्न हो यही चाहता है। इसलिए सभी शुभ कार्यों में गणेश जी की पूजा सबसे पहले होती है। गणपति मंगलमूर्ति हैं, विघ्नों के विनाशक हैं। इसलिए इनकी पूजा सर्वप्रथम होती है। ऐसा माना जाता है कि महाराष्ट्र में गणेशोत्सव की प्रथा सातवाहन, राष्ट्रकूट, चालुक्य आदि राजाओं ने प्रारम्भ की थी। पेशवाओं ने इसे गणेशोत्सव के रूप में आगे बढ़ावा दिया। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने गणेशोत्सव पूरे देश में मनाने की शुरुआत की और राष्ट्रीय रूप दिया। तब से महाराष्ट्र में गणपति पूजन एक पर्व बन गया। मिट्टी से गणेशजी की प्रतिमा बनाकर भाद्रपद में शुक्ल पक्ष चतुर्थी को स्थापना कर गणेशजी का उत्सव आरंभ होता है मनोकामना पूर्ण होने की इच्छा की जाती है तथा चतुर्दशी को शोभायात्रा के साथ गणपति की प्रतिमा का विसर्जन किया जाता है। यह निजी रूप से घरों में और सार्वजनिक रूप से भी मनाया जाता है। जन-जन के विचार और विश्वास में समाए गणपति का उत्सव लोग धूमधाम से मनाते हैं। विघ्न विनाशक, मंगलकर्ता, ऋद्धि-सिद्धि के दाता, विद्या और बुद्धि के आधार गणपति की पूजा-आराधना का उत्सव ही गणेशोत्सव है। वैदिक काल से लेकर आज तक भारत से लेकर सिंध और तिब्बत, जापान और श्रीलंका तक भगवान गणेश का पूजन बहुत विधि-विधान से होता है। जैन संप्रदाय में ज्ञान का संकलन प्रतिबिंबित करने वाले गणेशजी हैं तो बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा का विश्वास तो यहां तक है कि गणपति स्तुति के बिना मंत्र सिद्धि नहीं हो सकती। कुछ नेपाली तथा तिब्बती धर्मानुयायी अपने आराध्य तथागत की मूर्ति के बगल में ही गणेशजी को स्थापित करते हैं।

इनके नाम अनेक पुराणों में रूपकों की भरमार के कारण गणपति के जन्म की अनेक कथाएं हैं। अधिकांश कथाएं ब्रह्मवैवर्त पुराण में हैं। गणपति कहीं शिव-पार्वती के पुत्र माने गए हैं तो कहीं पार्वती के ही। पार्वती से शिव का विवाह होने के बहुत दिनों बाद तक पार्वती जी के कोई संतान न हुई। इस पर देवताओं ने पार्वती जी को पुण्यक व्रत करने का सुझाव दिया। परिणामस्वरूप गणपति का जन्म हुआ। शिव के करुद्ध होने और शीश काटने की कथा भी बहुत प्रचलित है। इसके बाद गणपति 'गजानन' हो गए। वह शिव के गणों के प्रिय होने के कारण 'गणपति' तथा 'विनायक' कहलाए, पेट बड़ा होने के कारण 'लंबोदर', एक दांत होने के कारण 'एकदंत', विघ्नों के नाशकर्ता होने से इन्हें 'विघ्नेश' भी कहा जाने लगा। सनातन धर्मानुयायी स्मार्तों के पंच देवताओं में गणेश, विष्णु, शंकर, सूर्य और भगवती में गणेश प्रमुख हैं। शास्त्रों में गणेश को ओंकारात्मक माना गया है।

जब हम आत्मनिर्भर भारत की बात कर रहे होते है तो एक प्रबंधक के रूप में गणेशजी की आकृति संपूर्ण गुणों से परिपूर्ण है तो गणेशजी से बहुत कुछ सीखने और समझने का समय है। जब व्यक्ति निराश और दैनंदिन समस्याओं से जूझ रहा हो उस समय गणेशजी की प्रतिमा अव्यक्त रूप से सब व्यक्त कर देती है। गणेशजी एक समूह के अधिष्ठाता गणाध्यक्ष हैं। एक ऐसी साकार शक्ति है, जो शुरू से अंत तक सुनिश्चित करती है कि अपने लक्ष्य को पाना संभव है। किसी संस्था या समूह को संचालित करने वाले व्यक्ति में गुणों का समावेश कैसा हो, यह उनकी आकृति में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।झ गणेशजी की आकृति से हमें विभिन्न प्रकार की सीख मिलती है। इससे मुश्किलों से सामना कर जीत हासिल करने का आत्मविश्वास पैदा होता है। कठिन परिस्थितियों में वे विघ्न तो दूर करते ही हैं साथ ही मनुष्य को निराशा से भी उबारते हैं।

गणेश जी का बड़ा सिर, हमें बड़ा सोचने और चीजों को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखने की प्रेरणा देता है। इससे प्रत्येक परिस्थिति का अवलोकन करना आसान हो जाता है। माथे पर चंदन का तिलक शीतलता और सौम्यता का प्रतीक है। यह सर्वविदित है कि आगे या बढ़ने के लिए शांत होना जरूरी है। इनके बड़े कान धैर्यपूर्वक सुनने और सचेत रहने की प्रेरणा देते हैं। बात सुनने से रिश्ते मजबूत होते हैं। सब सुनो और मस्तिष्क में रख लो। इसके विपरीत गणेशजी का मुख संयमपूर्वक बोलने की प्रेरणा देता है। लंबी सूंड दूर से ही सही और गलत परिस्थितियों का बोध कर लेने के सामर्थ्य को प्रतिबिंबित करती है। छोटी - आंखें एकाग्रता की द्योतक हैं। जब चिंतन करते हैं - तो आंखें स्वयं छोटी हो जाती हैं। यह सूक्ष्म दृष्टि - अपनाकर ही हम अपनी परिस्थितियों को अच्छी तरह नियंत्रित कर सकते हैं। उनका विशाल उदर - समाज में घटित होने वाली हर तरह की बातों को - पचा लेने का प्रतीक है। उन्होंने महाभारत लिखने के लिए अपने बहुमूल्य दांत को कलम बनाकर इस्तेमाल किया ताकि ज्ञान का विस्तार हो सके। गणेशजी के आकार के अनुरूप उनका वाहन मूषक बहुत छोटा है। गणेशजी के आकार के अनुरूप उनका वाहन मूषक बहुत छोटा है। मूषक इस बात का द्योतक है कि हमारी इच्छाएं सीमित होनी चाहिए। गणपति के हाथ में रखा लड्डू यह प्रेरणा देता है कि यदि हम मेहनत करें तो पर सफलता निश्चित है और ईमानदारी से कोशिश करने में धन-धान्य की कभी कमी नहीं होगी। उनका आशीर्वाद देता हाथ कहता है कि तुम मेरे सिद्धांतों पर चलो, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ। गणेश जी आकृति से हमें विभिन्न प्रकार की सीख मिलती है। इससे मुश्किलों पर जीत हासिल करने का आत्मविश्वास पैदा होता है।